राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

सितंबर - 2023

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

गणेश उत्सव
बप्पा मोर्या...

प्रो.अच्युत सामंत
एक महान् शिक्षाविद्...

लोकसभा चुनाव-2024
पक्ष-विपक्ष की तैयारियां...

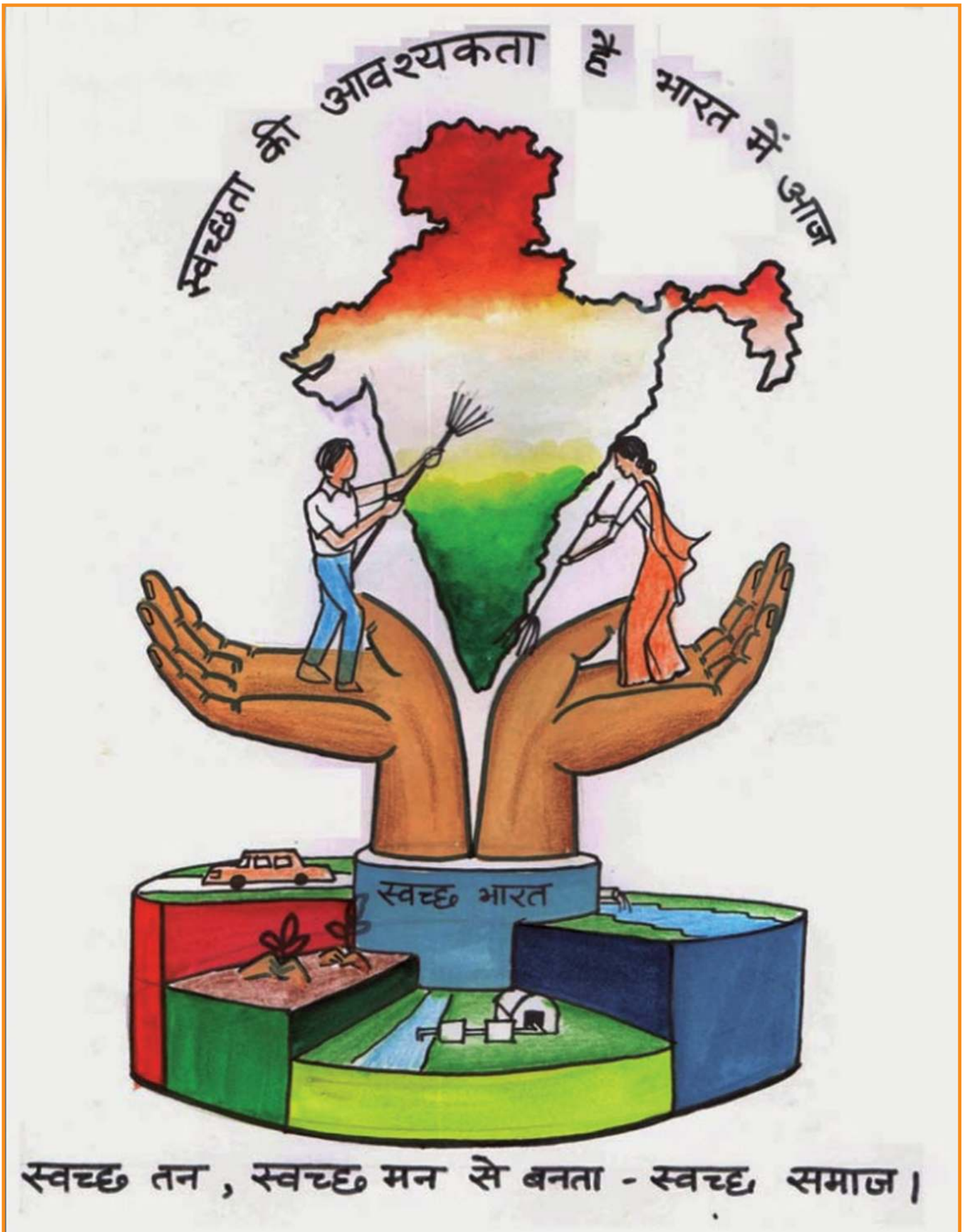
स्वच्छता की आवश्यकता है भारत में आज
स्वच्छ भारत
स्वच्छ तन , स्वच्छ मन से बनता - स्वच्छ समाज।

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

•वर्ष : 8 •अंक: 06 •मुंबई •सितंबर-2023

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक

नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक

मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक

भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला,
संतोष मिश्रा, जेदवी आनंद

ब्यूरो चीफ

ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा

ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट

राजेश अय्यर,शैफाली,

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in, mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimmumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को. ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

लोकसभा चुनाव के लिए विपक्षी गठबंधन की तैयारी	05
अपराध	12
गणेश चतुर्थी	14
खेल-जगत	18
पकवान	20
ऑफिस की थकान मिटाने के तरीके...	22
मिनी गोवा और मध्य प्रदेश के स्विट्जरलैंड कहे जाने वाल...	24
कृष्ण जन्मभूमि में जन्माष्टमी पर दिखेगी चन्द्रयान की	26
Aditya-L1 Launch: ISRO ने पहला सूर्य मिशन	27
सिनेमा	28
प्रो.अच्युत सामंतः एक महान् शिक्षाविद् तथा एक निःस्वार्थी राजनेता ...	30
ओडिशा हलचल.	32
भारतेन्दु हरिश्चन्द्रः खडीबोली हिन्दी के जन्मदाता	34
पतझड़ की वह रात	40
नदी के लुटेर (कथा सागर)	46
मशरूम की खेती...	56

सुविचारः

दुनिया में किसी पर हद से ज्यादा निर्भर ना रहें क्योंकि जब आप किसी की छाया में होते हैं तो आपकी अपनी परछाई नजर नहीं आती।

संपादकीय

राजनीतिक पार्टियों की फिजूलखर्ची

जनता के हितों की दुहाई देकर सत्ता में आने पर राजनीतिक दलों की प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। वे दावे तो बड़े -बड़े करते हैं लेकिन जमीनी हकीकत निराशाजनक ही होती है। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि थोड़े से काम को इस तरह प्रचारित किया जाता है जैसे धरती पर स्वर्ग उतर आया हो। जबकि हकीकत में जनता के करों से अर्जित धन को निर्ममता से प्रचार-प्रसार में उड़ाया जाता है। विकास की प्राथमिकताओं को नजरअंदाज करके सरकारी धन को विज्ञापनों व फिजूलखर्ची में उड़ाने वाली दिल्ली सरकार की कारगुजारियों पर शीर्ष अदालत की फटकार को इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए। अदालत ने सख्त लहजे में कहा भी कि ऐसा क्यों है कि लोगों को मूलभूत सुविधाओं के विस्तार के लिये सरकार के पास पैसा नहीं है? तो फिर विज्ञापनों पर अनाप-शनाप खर्च होने वाला धन कहां से आ रहा है?

दरअसल, सरकार विकास व परियोजना के लिये आर्थिक योगदान देने में वित्तीय संकट का रोना रोती है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि जनहित की योजनाओं में योगदान करने से कतराने वाली सरकार विज्ञापनों तथा अन्य गैर जरूरी काम के लिये धन कहां से ला रही है? दल बदल की राजनीति में पार्टी के कई विधायकों को एक जगह से दूसरी जगह टहलाया जाता है. उन्हें महंगे-महंगे होटलों में ठहराया जा रहा है। उन्हें प्राइवेट प्लेन से घुमाया जाता है. उनके खाने-पीने, रहने, घूमने इत्यादि में बेतहाशा पैसे खर्च किए जाते हैं। इनकी सभी गतिविधियों की जानकारी सामने आ रही है. लेकिन सिर्फ एक ही रहस्य है- 'इनकी फंडिंग कौन कर रहा है, इनके खर्चे कौन उठा रहा है?'

विडंबना यह है कि सूचना अधिकार कानून के तहत हासिल जानकारी बता रही है कि पिछले कुछ वर्षों में दिल्ली सरकार द्वारा विज्ञापनों पर किया खर्च पांच सौ करोड़ रुपये के करीब हो गया है। निश्चय ही यह लोकतंत्र में जनधन का दुरुपयोग है। केंद्रीय सूचना आयोग ने अपने आदेश में कहा था कि चूंकि राजनीतिक दलों को दिल्ली में ऑफिस के लिए सस्ते दर पर सरकारी जमीन मिलती है, उन्हें राज्य की राजधानियों में जगह दी जाती है, सस्ते दर पर सरकारी बंगला मिलता है और साथ ही साथ आयकर कानून की धारा १३ए के तहत टैक्स में छूट मिलती है. इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकारी धन या यूं कहें कि जनता का काफी पैसा राजनीतिक दलों की हित में खर्च होता है, इसलिए राजनीतिक दल कानून की धारा २एच के तहत आरटीआई एक्ट के दायरे में हैं.

सादगी की आड़ में जनता की गाढ़ी कमाई से प्राप्त कर-राशि का अपव्यय विज्ञापन और सरकारी भवनों को आलीशान चमक-दमक देते हुए महंगी सामग्रियों से उसे सुसज्जित करने में लगाया जाता है। पिछले माह दक्षिण भारत के एक राज्य ने अपने स्थापना दिवस के अवसर पर प्रायः सभी प्रांतों से प्रकाशित होने वाले राष्ट्रीय समाचार पत्रों में चार से छह पृष्ठों का योजना उपलब्धि का विज्ञापन छपवाया। सरकार चाहती तो दो पृष्ठ में भी अपनी उपलब्धि की सूचना प्रकाशित करा सकती थी। जनता को बड़े- बड़े सपने दिखाकर व मुफ्त का प्रलोभन देकर सत्ता में आये राजनीतिक दलों का वास्तविक चरित्र क्या है? ऐसे दलों की कथनी और करनी की वास्तविकता क्या है? अंधाधुंध विज्ञापनों पर खर्च करके राजनीतिक दल क्या हासिल करना चाहते हैं? क्या यह प्रचार की भूख है या अपनी नाकामियों पर पर्दा डालने का असफल प्रयास? सत्ता में आने के बाद विभिन्न राजनीतिक दलों की सरकारों का चरित्र एक जैसा ही हो जाता है।

इन दिनों राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा की तीव्रता ने फिजूलखर्ची का एक और उदाहरण देखने का अवसर दिया है। कुछ प्रांतों के मुख्यमंत्री गैर-सरकारी कार्यों के निमित्त दूसरे प्रांतों की यात्रा सरकारी विमान या चार्टर विमान से करके सरकारी खजाने का बेजा इस्तेमाल करने में व्यस्त हैं। साथ ही साथ राजनीतिक बैठकों में दलीय कोष से खर्च नहीं करके प्रोटोकाल के नाम पर सरकारी धनराशि का अपव्यय किया जा रहा है। आंकड़े साक्षी हैं कि अगर भारत सरकार सहित देश के तमाम राज्य अपनी फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें तो देश में व्याप्त गरीबी रेखा में अपना जीवन यापन करने वालों की संख्या में बेहद कमी हो सकती है। यह दुर्भाग्य है कि देश के मुख्य महालेखा नियंत्रक और परीक्षक ने अभी तक किसी भी राज्य सरकार द्वारा की जा रही फिजूलखर्ची के लिए उसे दोषी ठहराते हुए कठघरे में खड़ा नहीं किया है। कमोबेश पूरे देश में ही जनता में सरकारों के प्रति मोहभंग जैसी स्थिति है। लोग अब राजनेताओं की सामाजिक सरोकारों के प्रति प्रतिबद्धता पर प्रश्न चिन्ह लगा रहे हैं। इस दिशा में शीर्ष अदालत की सचेतक भूमिका की सराहना की जानी चाहिए। निस्संदेह, इससे जनधन के दुरुपयोग की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने में मदद मिल सकेगी। ■

- एम. नटराजन

लोकसभा चुनाव के लिए विपक्षी गठबंधन की तैयारी

कई कमेटियों का हुआ गठन

देश में अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों को लेकर विपक्ष की और से तैयारियां जोरों पर है। विपक्षी इंडिया गठबंधन की बैठक मुंबई में संपन्न हो चुकी है। इसी कड़ी में बीजेपी को चुनौती देने के लिए एकजुट हुए विपक्षी दलों के नेताओं ने मुंबई में मंथन किया। इस बैठक में २८ पार्टियों के नेताओं ने हिस्सा लिया। बता दें की इंडिया गठबंधन की तीसरी बैठक में १४ सदस्यीय समन्वय समिति का गठन किया गया। बता दें की गठबंधन ने आगामी लोकसभा चुनाव एकजुट होकर लड़ने का संकल्प लिया है। इसमें कहा कि राज्यों में सीट-बंटवारे की प्रक्रिया तुरंत शुरू की जाएगी। आने वाले दिनों में घटक दल अलग-अलग स्थानों पर जनसभाएं भी करेंगे। वहीं खबरें है की अगली बैठक दिल्ली में होगी, अभी तारीख तय नहीं की गई है।

मुंबई के एक पंचतारा होटल में २८ दलों के ६३ प्रतिनिधियों की दो दिवसीय मंत्रणा के बाद विपक्षी दलों ने अपने गठबंधन के लिए १४ सदस्यीय समन्वय समिति, १९ सदस्यीय चुनाव अभियान समिति, सोशल मीडिया से संबंधित १२ सदस्यीय कार्य समूह, मीडिया के लिए १९ सदस्यीय कार्यसमूह और शोध के लिए ११ सदस्यीय समूह का गठन किया। दूसरे दिन की बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख एवं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, द्रमुक नेता एवं तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन, जदयू नेता एवं बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, राजद प्रमुख लालू प्रसाद, बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, राकांपा नेता शरद पवार, शिवसेना (यूबीटी) के प्रमुख उद्धव ठाकरे और कई अन्य विपक्षी दलों के नेता शामिल थे।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि बैठक में शामिल नेता ६० प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। अगर वे एकजुट होकर चुनाव लड़ेंगे तो भाजपा का जीतना असंभव होगा। तमिलनाडु के सीएम स्टालिन ने 'इंडिया' के साझेदारों से तुरंत एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम (सीएमपी) तैयार करने का आग्रह किया और कहा कि यही गठबंधन का चेहरा होगा।

आने वाले दिनों में 'इंडिया' के घटक दल अलग-अलग स्थानों पर जनसभाएं भी करेंगे। विपक्षी गठबंधन की यह तीसरी बैठक थी। पहली बैठक जून में पटना में, जबकि दूसरी बैठक जुलाई में बेंगलुरू में हुई थी।

सर्वोच्च इकाई समन्वय समिति में कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल, राकांपा प्रमुख शरद पवार, द्रमुक नेता टीआर बालू, राजद नेता और बिहार के उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, तृणमूल कांग्रेस के महासचिव अभिषेक बनर्जी, झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, शिवसेना (यूबीटी) के नेता संजय राउत, आप सांसद राघव चड्ढा, भाकपा के डी. राजा, नेकां के उमर अब्दुल्ला और पीडीपी की महबूबा मुफ्ती शामिल हैं। इसमें जदयू अध्यक्ष ललन सिंह और सपा सांसद जावेद अली खान को भी शामिल किया गया है। माकपा से कोई एक नेता बाद में इस समिति में शामिल होगा।

एकजुटता का नतीजा होगा भाजपा की हार : नीतीश

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि विपक्षी एकजुटता का फलसफा आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा की हार के रूप में सामने आएगा। उन्होंने कहा, 'हम लोगों ने तेजी से काम करने की शुरुआत कर दी है। कोई ठिकाना नहीं है, चुनाव समय के पहले भी हो सकते हैं। हमें सतर्क रहना पड़ेगा।' उन्होंने कहा कि अभी तो मीडिया पर भी सत्ताधारी पार्टी का 'कब्जा' है लेकिन एक बार उनसे (वर्तमान केंद्र सरकार से) 'मुक्ति' मिलेगी तो आप सब प्रेस वाले 'आजाद' हो जाइएगा। उन्होंने कहा, 'फिर जो उचित लगेगा, वही लिखिएगा, वही बोलिएगा। यह बहुत जरूरी है।'

हमारा इरादा सत्ता हासिल करना नहीं: मल्लिकार्जुन खड़गे

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने मंगलवार को ऐलान किया कि २६ दलों ने एकजुट होकर काम करने की कसम खाई है. कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि विपक्षी दलों की मंशा अपने लिए सत्ता हासिल करना नहीं है, बल्कि, देश में लोकतंत्र की रक्षा करना है. उन्होंने आगे कहा कि मुझे खुशी है कि २६ पार्टियां एकजुट होकर काम करने के लिए बेंगलुरु में मौजूद हैं. हम सब मिलकर आज ११ राज्यों में सरकार में हैं. बीजेपी को अकेले ३०३ सीटें नहीं मिली हैं. उसने अपने सहयोगियों के वोटों का इस्तेमाल करके सत्ता पाई और फिर उन्हें त्याग दिया.

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने एक ट्वीट में जिक्र किया कि भाजपा अध्यक्ष और उनके नेता अपने पुराने सहयोगियों से समझौता करने के लिए एक से दूसरे राज्य में भागदौड़ कर रहे हैं. वे डरे हुए हैं कि जो एकता वे यहां देख रहे हैं, उसका परिणाम अगले साल उनकी हार होगी. केंद्रीय जांच एजेंसियों के दुरुपयोग के लिए भाजपा पर निशाना साधते हुए खड़गे ने कहा कि हर संस्था को विपक्ष के खिलाफ एक हथियार में बदल दिया जा रहा है.

उन्होंने आगे कहा कि इस बैठक में हमारा इरादा अपने लिए सत्ता हासिल करना नहीं है. यह लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय की रक्षा करना है. आइए हम भारत को प्रगति, कल्याण और सच्चे लोकतंत्र के पथ पर वापस ले जाने का संकल्प लें. उनकी टिप्पणी मंगलवार को कर्नाटक के बेंगलुरु में २६ विपक्षी दलों के ५० नेताओं की दूसरी बार मुलाकात के बाद आई.

बैठक में खड़गे के अलावा कांग्रेस संसदीय दल (सीपीपी) की अध्यक्ष सोनिया गांधी, पूर्व कांग्रेस प्रमुख राहुल गांधी, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और टीएमसी सुप्रीमो ममता बनर्जी, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री और डीएमके नेता एमके स्टालिन, एनसीपी प्रमुख शरद पवार, आप नेता और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, पूर्व केंद्रीय मंत्री और राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव, बिहार के मुख्यमंत्री और जनता दल-यूनाइटेड नेता नीतीश कुमार, शिव सेना (यूबीटी) नेता उद्धव ठाकरे, जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती, उमर अब्दुल्ला और कई अन्य लोग मौजूद रहे. विपक्षी दलों की बेंगलुरु से पहले २३ जून को बिहार की राजधानी पटना में पहली बैठक हुई थी.

इंडिया गठबंधन की बैठक में करोड़ों रुपए के खर्च के सवाल?

५ स्टार होटल, ८० कमरे और १४ घंटे की बैठक... मुंबई में INDIA गठबंधन की मीटिंग खर्च को लेकर विवादों में घिर गई है. शिंदे सरकार में मंत्री उदय सामंत ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर पूछा है कि आखिर इस बैठक के लिए करोड़ों रुपए की फंडिंग किसने की है? सामंत ने शिवसेना के उद्धव ठाकरे और संजय राऊत को निशाने पर लिया है. इंडिया गठबंधन की यह तीसरी मीटिंग है. विपक्षी मोर्चे की पहली बैठक पटना में नीतीश कुमार के सरकारी आवास पर और दूसरी बैठक बेंगलुरु के ताज एंड वेस्ट होटल में आयोजित की गई थी. पहली मीटिंग का खर्च जेडीयू-आरजेडी तो दूसरी मीटिंग का खर्च कांग्रेस ने उठाया था.

मुंबई मीटिंग की जिम्मेदारी शिवसेना और एनसीपी पर है. हालांकि, कांग्रेस की ओर से लंच की व्यवस्था की गई है. बैठक में २८ दल के ६५ नेता शामिल होने के लिए मुंबई पहुंचे हैं.

उद्धव की मेहमाननवाजी से इंडिया गठबंधन के नेता खुश

शिवसेना (यूबीटी) के मुखपत्र में मेहमाननवाजी को लेकर गठबंधन के नेताओं की प्रतिक्रिया प्रकाशित की गई है. सामना ने लिखा है- राहुल ने मुंबई मीटिंग के आयोजन की तारीफ की है. तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने भी आयोजन को भव्य बताया.

इसके अलावा अखिलेश यादव, मल्लिकार्जुन खरगे और सोनिया गांधी भी मीटिंग की व्यवस्था पर

खुशी जाहिर की. एयरपोर्ट पर नेताओं के स्वागत के लिए कांग्रेस और एनसीपी के प्रतिनिधिमंडल मौजूद थे, जबकि होटल के बाहर संजय राउत और सुप्रिया सुले ने नेताओं का स्वागत किया.

आयोजन को सफल बनाने के लिए उद्धव ठाकरे और शरद पवार ने करीब ३ राउंड की मीटिंग की थी.

४५०० की प्लेट, १२००० का कमरा... कुल खर्च कितना?

बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स में वेस्टर्न एक्सप्रेस हाइवे के करीब १० एकड़ में निर्मित ग्रैंड हयात एक पांच सितारा होटल है. इसकी शुरुआत २००४ में की गई थी. होटल के वेबसाइट के मुताबिक यहां कई सुइट, रूम और अपार्टमेंट उपलब्ध हैं. साथ ही मीटिंग के लिए कॉमन हॉल की भी व्यवस्था है. रिपोर्ट की मानें तो ६५ नेताओं के लिए करीब ८० कमरे बुक किए गए हैं. इसके अलावा मीटिंग के लिए कॉमन हॉल की भी व्यवस्था की गई है. होटल के वेबसाइट के मुताबिक एक कमरे का किराया करीब १२ हजार रुपए है. टैक्स जोड़कर कुल खर्च १३-१४ हजार हो जाता है. कॉमन हॉल का खर्च अलग है. मंत्री उदय सामंत के मुताबिक ५४ हजार रुपया तो सिर्फ कुर्सी पर महाविकास अघाड़ी के नेताओं ने खर्च किया है. सामंत के मुताबिक ग्रैंड होटल में खाने के एक प्लेट की कीमत ४५०० रुपए है. इंडिया गठबंधन के नेताओं के लिए होटल में महाराष्ट्र के पारंपरिक भोजन की व्यवस्था की गई है. इनमें वड़ा पांव, झुमका भाकर आदि है.

३१ अगस्त के डिनर महाराष्ट्र की प्रसिद्ध व्यंजन वड़ा पांव, पुरण पोली, श्रीखंड पूरी, भरे हुए बैंगन साथ ही शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के व्यंजन परोसे गए. होटल के वेबसाइट के रेटलिस्ट के मुताबिक एक प्लेट वड़ा पांव की कीमत ७०० रुपए है. ग्रैंड हयात होटल के भीतर ६ रेस्टोरेंट है, जिसमें एक प्लेट खाने की औसत कीमत ४०००-४५०० के बीच है. मीटिंग में करोड़ों रुपए के खर्च के सवाल पर शिवसेना (यूबीटी) के आदित्य ठाकरे ने कहा- पहले बीजेपी और शिंदे के लोग यह बताएं कि सूरत और गुवाहाटी चार्टर प्लेन की व्यवस्था किसने की थी? वहां होटल में ठहरने का इंतजाम किसने किया था?

बेंगलुरु की मीटिंग में भी हुआ था विवाद

INDIA गठबंधन के बेंगलुरु मीटिंग में भी विवाद हुआ था. बीजेपी और जेडीएस का कहना था कि कांग्रेस सरकार ने नेताओं के स्वागत के लिए आईएएस अधिकारियों की ड्यूटी लगा दी. बेंगलुरु में २ दिन की बैठक का इंतजाम कर्नाटक कांग्रेस कमेटी की ओर से किया गया था. जेडीएस नेता कुमारस्वामी ने आरोप लगाया कि विपक्षी नेताओं के सेवा में राज्य सरकार ने ३० आईएएस अधिकारी को तैनात कर दिया, जो सर्विस नियम के खिलाफ है. हालांकि, मुख्यमंत्री सिद्धारमैया का कहना था कि सभी की तैनाती नियम के अनुसार ही की गई है.

सिद्धारमैया का कहना था कि दूसरे राज्यों से आए मुख्यमंत्री राज्य के अतिथि होते हैं. सिद्धारमैया ने आगे कहा कि यह परंपरा पहले भी रही है और यहां किसी तरह के प्रोटोकॉल का कोई उल्लंघन नहीं हुआ.

अगली बैठक तमिलनाडु में, डीएमके कर सकती है होस्ट

महाराष्ट्र विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजय वडेट्टीवार ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि अगली बैठक तमिलनाडु में करने की तैयारी है. तमिलनाडु में इंडिया गठबंधन के सहयोगी डीएमके की सरकार है. कहा जा रहा है कि चेन्नई में अगर मीटिंग होती है, तो इसकी जिम्मेदारी स्टालिन और कांग्रेस को सौंपी जा सकती है. अगली मीटिंग संसद के विशेष सत्र के बाद कभी भी हो सकती है. कुछ नेताओं का कहना है कि ३० सितंबर से पहले सबकुछ फाइनल कर लिया जाए, इसके बाद सीधे चुनाव के रण में उतरा जाए.

लगातार बढ़ रहा है इंडिया का कुनबा, अब २८ दल साथ

जुलाई २०२२ में विपक्षी मोर्चे की कवायद बिहार से शुरू की गई थी. उस वक्त लालू यादव और नीतीश कुमार ने सभी नेताओं को जोड़ने का आह्वान किया था. नीतीश का प्रयास अप्रैल २०२३ में रंग लाया, जब कांग्रेस बैठक में शामिल होने को राजी हो गई.

जून में पटना में विपक्षी मोर्चे की पहली मीटिंग रखी गई. इसमें कुल १६ दल एक साथ आए, जिसमें कांग्रेस, सपा, शिवसेना, एनसीपी और आप का नाम शामिल हैं. दूसरी मीटिंग में इंडिया का कुनबा बढ़ा और २६ दल साथ आए. तीसरी मीटिंग में २ और दल को साथ जोड़ा गया. नीतीश कुमार चुनाव से पहले कुछ और दलों के साथ आने का दावा कर चुके हैं. विपक्षी मोर्चे की नजर इनेलो, बीएसपी, एआईयूडीएफ और शेतकारी संगठन पर है.

INDIA अलायंस की बैठक के बाद मोदी सरकार पर बरसे Rahul Gandhi, अडानी समूह विवाद को लेकर किया हमला

मुंबई में विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इनक्लूसिव अलायंस' की बैठक के दौरान कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मीडिया को संबोधित किया है। मुंबई में हो रही दो दिवसीय बैठक में गंठबंधन में शामिल पार्टियां चर्चा करेंगी। इस बैठक में ही इंडिया अलायंस का लोगो भी जारी किया जाएगा।

इस बैठक के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि 'वर्तमान स्वाद जी२० है और यह दुनिया में भारत की स्थिति के बारे में है। भारत जैसे देश के लिए जो बात बहुत महत्वपूर्ण है वह यह है कि हमारे आर्थिक माहौल और यहां संचालित होने वाले व्यवसायों में समान अवसर और पारदर्शिता है। आज सुबह, दो वैश्विक वित्तीय समाचार पत्रों ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है। ये कोई यादृच्छिक समाचार पत्र नहीं हैं। ये समाचार पत्र भारत में निवेश और शेष विश्व में भारत की धारणा को प्रभावित करते हैं...'

अडानी समूह विवाद पर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कहा कि जी२० के नेताओं के यहां आने से ठीक पहले, वे पूछ रहे होंगे कि यह कौन सी विशेष कंपनी है जिसका स्वामित्व प्रधानमंत्री के करीबी सज्जन के पास है और भारत जैसी अर्थव्यवस्था में इस सज्जन को मुफ्त यात्रा क्यों दी जा रही है?' मुंबई में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी कहते हैं, 'जांच हुई थी, सेबी को सबूत दिए गए थे और सेबी ने गौतम अडानी को क्ल ीन चिट दे दी...तो, यह स्पष्ट है कि यहां कुछ बहुत गड़बड़ है।'

मुंबई में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी कहते हैं, 'पहला सवाल उठता है - यह पैसा किसका है? क्या यह अडानी का है या किसी और का? इसके पीछे का मास्टरमाइंड विनोद अडानी नाम का एक सज्जन है जो गौतम अडानी का भाई है। दो अन्य लोग हैं जो पैसे की इस गोलमाल में शामिल हैं। एक सज्जन हैं जिनका नाम नासिर अली शाबान अहली है और दूसरे एक चीनी सज्जन हैं जिनका नाम चांग चुंग लिंग है। तो, दूसरा सवाल उठता है - इन दो विदेशी नागरिकों को इसके साथ खेलने की अनुमति क्यों दी जा रही है उन कंपनियों में से एक का मूल्यांकन जो लगभग सभी भारतीय बुनियादी ढांचे को नियंत्रित करती है...'

उन्होंने कहा कि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी अपना नाम साफ करें और स्पष्ट रूप से बताएं कि क्या चल रहा है। कम से कम, जेपीसी की अनुमति दी जानी चाहिए और गहन जांच होनी चाहिए। मुझे समझ नहीं आ रहा कि प्रधानमंत्री जांच क्यों नहीं करा रहे हैं? वह चुप क्यों हैं और जो लोग जिम्मेदार हैं उन्हें सलाखों के पीछे डाल दिया गया है? जी२० नेताओं के यहां आने से ठीक पहले यह पीएम पर बहुत गंभीर सवाल उठा रहा है... यह महत्वपूर्ण है कि उनके (जी२० नेताओं) आने से पहले इस मुद्दे को स्पष्ट किया जाए।

उन्होंने कहा कि मेरे लिए आश्चर्य की बात यह है कि जिस सज्जन ने जांच की है, वह आज श्री अडानी के कर्मचारी हैं। यह आपको उस जांच की प्रकृति के बारे में क्या बताता है जो सज्जन ने की थी? यह बिल्कुल स्पष्ट है कि कोई जांच नहीं हुई और जांच न होने का एकमात्र कारण यह है कि प्रधानमंत्री नहीं चाहते थे कि कोई जांच हो। श्रीमान अडानी किसी जांच को नहीं रोक सकते, प्रधानमंत्री कर सकते हैं...यह एक ऐसा मुद्दा है जो भारत की प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है, खासकर इसलिए क्योंकि अब जी२० हो रहा है और भारत और प्रधानमंत्री की प्रतिष्ठा दांव पर है।

'अभी तो ममता बनर्जी गई हैं, धीरे-धीरे गठबंधन से अन्य नेता भी इसी तरह गायब होते रहेंगेः पूर्व CM जयराम ठाकुर

हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने वन नेशन-वन इलेक्शन की बात का समर्थन किया है. पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि इससे देश में समय और पैसे की बचत होगी. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का लंबे वक्त से इस बात का विजन है. हालांकि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि संसद के विशेष सत्र में इससे जुड़ा बिल पेश होगा या नहीं. साथ ही पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने I.N.D.I.A. गठबंधन पर भी निशाना साधा. उन्होंने कहा कि मुंबई में हुई बैठक से अभी पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी उठकर गई. जल्द ही अन्य नेता भी गायब होते हुए नजर आएंगे. जयराम ठाकुर ने कहा कि साल २०२४ में नरेंद्र मोदी का दोबारा प्रधानमंत्री बनना तय है. पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने हिमाचल प्रदेश में मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व वाली सरकार पर भी निशाना साधा. पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने खुद गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर मदद की मांग की है. जयराम ठाकुर ने कहा कि पहले चार महीने तक सुक्खू सरकार आर्थिक स्थिति का रोना रोती रही. अब आपदा की बात की जा रही है. नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में आपदा के बीच केंद्र से हिमाचल को भरपूर सहयोग मिल रहा है और कांग्रेस सरकार से राजनीति करने में लगी हुई है. उन्होंने कहा कि आज तक इतिहास में कभी हिमाचल प्रदेश को इतनी मदद नहीं मिली, जितनी इस बार मिल रही है.

पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस लगातार राजनीति कर रही है और जनता का ध्यान भटकाने की कोशिश कर रही है. उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने कोरोना काल में भी राजनीति की और अब भी कांग्रेस राजनीति ही कर रही है. उन्होंने कहा कि आपदा काल में भी संस्थान बंद करने का काम जारी है. जयराम ठाकुर ने कहा कि सरकार ने हाल ही में सरदार पटेल यूनिवर्सिटी मंडी का दायरा घटा दिया है, जो सरासर गलत है. इसके अल ावा जयराम ठाकुर में २ लाख २५ हजार की तनख्वाह पर सीएम के प्रिंसिपल एडवाइजर की नियुक्ति पर भी सवाल खड़े किए. जयराम ठाकुर ने कहा कि पहले तो भाजपा के नेता ही कांग्रेस की गारंटी पूरी होने की मांग कर रहे थे, लेकिन अब खुद कांग्रेस नेता राजिंदर राणा भी सामने आकर CM सुक्खू से गारंटी पूरी करने की बात कर रहे हैं. हाल ही में पूर्व मुख्यमंत्री शांता कुमार ने मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू की कार्यप्रणाली की भी तारीफ की. साथ ही उन्होंने केंद्र सरकार से हिमाचल को १० हजार करोड़ की मदद की भी मांग उठाई. इस पर पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि शांता कुमार हमारे लिए सम्माननीय नेता हैं और हम उनकी बात का सम्मान करते हैं.

नई नहीं 'एक देश, एक चुनाव' की कवायद...

नरेंद्र मोदी सरकार ने १८ से २२ सितंबर तक ५ दिनों के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाया है। इसका अजेंडा क्या होगा, सरकार ने इस पर कुछ भी नहीं कहा है। अभी ११ अगस्त को ही संसद का मॉनसून सत्र खत्म हुआ है। आमतौर पर नवंबर में शीतकालीन सत्र भी आ ही जाता है। ऐसे में सितंबर में संसद का विशेष सत्र बुलाया जाना बताता है कि सरकार कुछ बड़ा करना चाहती है। इसके सियासी मतलब निकाल ने की कोशिशें हो रही हैं। स्पेशल सेशन को लेकर तमाम तरह की अटकलें लग रही हैं। कहीं सरकार समय से पहले चुनाव के लिए तो नहीं जा रही? कहीं समान नागरिक संहिता पर बिल तो नहीं लाया जाएगा? महिला आरक्षण बिल लाया जा सकता जैसी तमाम अटकलें लग रही हैं। लेकिन इन सबके बीच सबसे ज्यादा चर्चा 'एक देश-एक चुनाव' को लेकर है। सरकार ने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में एक समिति भी बना दी है जो इस मुद्दे पर अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। वैसे 'एक देश-एक चुनाव' का मुद्दा कोई नया नहीं है, अतीत में भी सरकारों और चुनाव आयोग के स्तर पर इस दिशा में कवायद हो चुकी है। २०१८-१९ में तो बात बनते-बनते रह गई थी।

'एक देश एक चुनाव' क्या है?

सबसे पहले तो जानते हैं कि 'एक देश एक चुनाव' का मतलब क्या है? देश में तमाम तरह के चुनाव होते हैं, पंचायत चुनाव, नगर निकाय चुनाव, लोकसभा चुनाव, विधानसभा चुनाव...तो क्या इसका मतलब ये है कि देश में सिर्फ एक चुनाव होगा? सिर्फ लोकसभा का चुनाव होगा और बाकी सारे चुनाव खत्म कर दिए जाएंगे? ऐसा नहीं है। 'एक देश एक चुनाव' की कवायद लोकसभा और राज्यों के विधानसभा चुनावों को एक साथ कराने के लिए है। अभी लोकसभा चुनाव और राज्यों के विधानसभा चुनाव अलग-अलग वक्त पर होते हैं। सरकार ने ५ साल का कार्यकाल पूरा कर लिया तो समय पर चुनाव और अगर किसी राज्य में सरकार कार्यकाल पूरा न कर पाए तो मध्यावधि चुनाव। देश में सालभर कहीं न कहीं, चुनाव का मौसम चलता ही रहता है। अगर एक साथ चुनाव हो तो इन्हें अलग-अलग कराने पर जो खर्च होता है, वह बच सकेगा।

१९६७ तक तो एक ही साथ होते रहे थे लोकसभा और राज्यों के विधानसभा चुनाव

देश जब आजाद हुआ तो १९५२ में पहली बार चुनाव हुए। तब लोकसभा के साथ-साथ सभी राज्यों की विधानसभाओं के लिए एक ही साथ चुनाव हुए। १९५७ में भी लगभग यही हुआ। तब राज्यों के पुनर्गठन यानी नए राज्यों के बनने की वजह से ७६ प्रतिशत स्टेट इलेक्शन लोकसभा चुनाव के ही साथ हुए। लेकिन एक चुनाव का ये चक्र पहली बार तब गड़बड़ हुआ जब १९५९ में केंद्र की तत्कालीन जवाहर लाल नेहरू सरकार ने पहली बार अनुच्छेद ३५६ का इस्तेमाल करते हुए केरल की कम्यूनिस्ट सरकार को बर्खास्त कर दिया। १९५७ में लेफ्ट ने केरल में जीत दर्ज की थी और ई.एम.एस. नंबूरदरीपाद मुख्यमंत्री बने। लेकिन जुलाई १९५९ में उनकी सरकार बर्खास्त होने के बाद फरवरी १९६० में केरल में फिर विधानसभा चुनाव हुए। देश में किसी भी राज्य में मध्यावधि चुनाव का ये पहला मामला था। इसके बाद ही एक साथ चुनाव का क्रम टूट गया लेकिन मोटे तौर पर १९६७ तक 'वन नेशन वन इलेक्शन' का सिलसिला चलता रहा। १९६२ में और १९६७ में ६७ प्रतिशत राज्यों के विधानसभा चुनाव लोकसभा चुनाव के साथ हुए। लेकिन ये सिलसिला १९७० आते-आते लगभग पूरी तरह टूट गया। १९७० में तो लोकसभा भी समय से पहले भंग हो गई और १९७१ में चुनाव कराने पड़े। इस तरह १९७१ के बाद लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव अलग-अलग ही होने लगे।

१९६७ के चुनाव में कांग्रेस को यूपी, बिहार, राजस्थान, पंजाब, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और मद्रास जैसे राज्यों में झटका लगा। कई जगहों पर कांग्रेस के बागियों ने अन्य पार्टियों के साथ मिलकर सरकार बनाई। ऐसी कई गठबंधन सरकारें ५ साल का कार्यकाल पूरा करने के पहले ही गिर गईं। जिस वजह से 'एक देश एक चुनाव' का क्रम बिगड़ गया।

८० के दशक में फिर 'एक देश एक चुनाव' की हुई थीं कोशिशें

करीब ४ दशक पहले एक साथ चुनाव के मुद्दे ने फिर जोर पकड़ा। १९८३ में चुनाव आयोग ने सुझाव दिया कि लोकसभा के साथ-साथ राज्यों के भी विधानसभा चुनाव कराए जाने चाहिए। हालांकि, तत्कालीन सरकार ने चुनाव आयोग के सुझाव को कोई खास तवज्जो नहीं दिया जिससे मामला ठंडे बस्ते में चला गया। १९९९ में ये मुद्दा फिर उभरा जब लॉ कमिशन ने एक साथ चुनाव कराने पर जोर दिया। जस्टिस बी. पी. जीवन रेड्डी की अध्यक्षता वाले लॉ कमिशन ने मई १९९९ में अपनी १७०वीं रिपोर्ट में एक साथ चुनाव कराए जाने की सिफारिश की। विधि आयोग ने कहा कि हमें लोकसभा और सभी विधानसभाओं के लिए एक ही साथ चुनाव कराना चाहिए। लॉ कमिशन ने इसके लिए फॉर्म्युला भी सुझाया कि अगर किसी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया जाता है तो उसके साथ ही वैकल्पिक सरकार के लिए विश्वास प्रस्ताव भी लाया जाना चाहिए। यानी एक तरह से लोकसभा और विधानसभाओं के लिए फिक्स्ड कार्यकाल की बात थी।

अटल बिहार वाजपेयी और सोनिया गांधी में लगभग सहमति बन गई थी लेकिन...

लॉ कमिशन की सिफारिशों को लेकर २००३ में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कांग्रेस की तत्कालीन अध्यक्ष सोनिया गांधी से चर्चा भी की। शुरुआत में कांग्रेस नेता ने इसे लेकर उत्साह भी दिखाया। लगा कि एक साथ चुनाव कराने पर राजनीतिक आम सहमति बन सकती है लेकिन ऐसा नहीं हुआ और ये मुद्दा फिर आया-गया हो गया। २००४ में मनमोहन सिंह की अगुआई में यूपीए सरकार सत्ता में आ गई। उनके पहले कार्यकाल के दौरान इस मुद्दे की कहीं कोई चर्चा नहीं हुई। हालांकि, २०१० में बीजेपी नेता लाल कृष्ण आडवाणी ने एक बार फिर एक साथ चुनाव का मुद्दा उठाया। उन्होंने इसे लेकर तब के पीएम मनमोहन सिंह और वित्त मंत्री प्रणब मुखर्जी से चर्चा भी। आडवाणी ने लोकसभा और विधानसभाओं के लिए फिक्स्ड-टर्म यानी ५ साल के तय कार्यकाल की वकालत की। लेकिन बात नहीं बनी।

एक चुनाव से देश के कितने बचेंगे पैसे? यह हिसाब आपको भी हैरान करेगा

२०१५ में एक संसदीय समिति ने अपनी रिपोर्ट में एक साथ चुनाव कराए जाने की बात कही। ई. एम. सुदर्शना नचियप्पन की अगुआई वाली संसदीय समिति ने लोकसभा और विधानसभा चुनावों को एक साथ कराने की संभावना को लेकर अपनी रिपोर्ट पेश की। रिपोर्ट में 'एक देश एक चुनाव' की भावना का समर्थन करते हुए कहा गया कि इससे बार-बार चुनावों पर होने वाले खर्च में कमी आएगी, बार-बार चुनाव आचार संहिता लागू होने की वजह से कुछ समय के लिए एक तरह की जो पॉलिसी पैरालाइसिस वाली स्थिति पैदा होती है, वह खत्म होगी। चुनाव के दौरान मैनपावर की तैनाती का बोझ भी कम होगा। लेकिन कांग्रेस ने इसे अव्यावहारिक बताते हुए खारिज कर दिया। दिल चस्प बात ये है कि संसदीय समिति के अध्यक्ष ई.एम. सुदर्शना नचियप्पन कांग्रेस के ही राज्यसभा सांसद थे। टीएमसी ने भी इस आइडिया को असंवैधानिक बताया। सीपीआई, एनसीपी ने भी कहा-संभव नहीं है।

२०१७ में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए बार-बार होने वाले चुनावों के नकारात्मक प्रभावों का जिक्र किया। जनवरी २०१७ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इशारा किया कि एक साथ चुनाव कराने की संभावना टटोलने के लिए स्टडी की जानी चाहिए। ३ महीने बाद अप्रैल २०१७ में मोदी ने मुख्यमंत्रियों के साथ नीति आयोग की बैठक में फिर इस बात कर जोर दिया। उसी साल नीति आयोग ने एक पेपर जारी कर एक साथ चुनाव कराने पर जोर दिया। बिबेक देबरॉय और किशोर देसाई ने पेपर में कहा कि अलग-अलग चुनावों पर बहुत ज्यादा खर्च आता है। एक साथ चुनाव कराने से इसमें काफी कमी आ सकती है। नीति आयोग ने अपने पेपर में विस्तार से बताया कि क्यों एक साथ चुनाव जरूरी है और कैसे ये मुमकिन हो सकता है।

२०१८ में एक बार फिर लॉ कमिशन ने एक साथ चुनाव कराए जाने की पैरवी की। जस्टिस बी. एस. चौहान की अध्यक्षता वाले लॉ कमिशन ने ३० अगस्त २०१८ को अपनी ड्राफ्ट रिपोर्ट में सिफारिश की कि एक कैलेंडर ईयर में जितने भी राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हों, उन्हें एक साथ कराया जाना चाहिए। लॉ कमिशन ने बताया कि लोकसभा और सभी राज्यों के चुनाव एक साथ कराने के लिए संविधान में कई तरह के बदलाव करने पड़ेगा। लोकप्रतिनिधित्व कानून १९५१ में बदलाव करने पड़ेंगे, लोकसभा और राज्य विधानसभाओं से जुड़े नियमों, प्रक्रियाओं में जरूरी बदलाव करने पड़ेंगे। लॉ कमिशन ने ये भी सिफारिश की कि अविश्वास प्रस्ताव से सरकार तभी गिरनी चाहिए जब वैकल्पिक सरकार के लिए विश्वास प्रस्ताव पास हो जाए।

जब २०१९ में बनते-बनते रह गई थी बात

२०१९ के लोकसभा चुनाव से पहले एक समय तो ऐसा लग रहा था कि 'एक देश एक चुनाव' का कॉन्सेप्ट लागू ही हो जाएगा। २०१८ में लॉ कमिशन की सिफारिशों के बाद माहौल बना। मोदी सरकार ने 'एक देश एक कानून' को संभव बनाने के लिए आम सहमति तैयार करने की कोशिश की। लॉ कमिशन ने सुझाव दिया था कि १७वीं लोकसभा के चुनाव के साथ १२ राज्यों के विधानसभा चुनाव भी कराए जाने चाहिए। २०१८ और २०१९ में कुल १२ राज्यों- आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा, सिक्किम, तेलंगाना, हरियाणा, झारखंड, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, मिजोरम और राजस्थान में चुनाव होने थे। इन सभी राज्यों की विधानसभाओं के लिए लोकसभा के साथ ही चुनाव कराने की बात चली। तब ऐसी खूब खबरें चलीं कि ये मुमकिन हो सकता है लेकिन बात नहीं बन सकी। मोदी सरकार एक बार फिर 'एक देश एक चुनाव' के लिए कवायद तेज की है। अब तो इसकी संभावना टटोलने के लिए पूर्व राष्ट्रपति कोविंद की अध्यक्षता में समिति भी बन गई है।

एक देश-एक चुनाव पर विपक्षी नेताओं की प्रतिक्रिया...

१. राहुल ने कहा - वन नेशन-वन इलेक्शन का आइडिया संघ और राज्यों पर हमला

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने एक्स (जो पहले ट्विटर था) पर लिखा कि मोदी सरकार चाहती है कि लोकतांत्रिक भारत धीरे-धीरे तानाशाही में तब्दील हो जाए। 'वन नेशन वन इलेक्शन' पर कमेटी बनाने की यह नौटंकी भारत के संघीय ढांचे को खत्म करने का हथकंडा है। २०२४ में लोगों के पास 'वन नेशन वन सॉल्यूशन' है- भाजपा के कुशासन से छुटकारा पाना।

वहीं, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि देश के लिए क्या जरूरी है? वन नेशन वन इलेक्शन या वन नेशन वन एजुकेशन (अमीर हो या गरीब, सबको एक जैसी अच्छी शिक्षा), वन नेशन वन इलाज (अमीर हो या गरीब, सबको एक जैसा अच्छा इलाज), आम आदमी को वन नेशन वन इलेक्शन से क्या मिलेगा?

एक देश-एक चुनाव कमेटी में ८ सदस्य, अधीर रंजन और गुलाम नबी का भी नाम

एक देश-एक चुनाव के लिए पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में बनाई गई समिति के लिए सरकार ने २ सितंबर को आठ सदस्यों का नाम जारी किया था।

इनमें केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी और राज्यसभा में पूर्व नेता प्रतिपक्ष गुलाम नबी का नाम शामिल है।

इनके अलावा समिति में १५वें वित्त आयोग के पूर्व अध्यक्ष एनके सिंह, लोकसभा के पूर्व महासचिव डॉ. सुभाष कश्यप, वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे और पूर्व मुख्य सतर्कता आयुक्त संजय कोठारी भी हैं।

केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल समिति में विशेष आमंत्रित सदस्य और विधि विभाग के सचिव नितेन चंद्र समिति के सचिव होंगे।

अधीर रंजन चौधरी ने कमेटी में शामिल होने से इनकार करते हुए कहा कि नतीजे पहले से ही तय हैं। हालांकि, सरकारी सूत्रों के हवाले से न्यूज एजेंसी ANI ने कहा कि नामों के साथ नोटिफिकेशन जारी होने से पहले अधीर रंजन चौधरी ने 'एक राष्ट्र-एक चुनाव कमेटी' का हिस्सा बनने के लिए अपनी सहमति दे दी थी।

अधीर रंजन बोले- मैं इस कमेटी में काम नहीं करूंगा

कमेटी में नाम आने के बाद अधीर रंजन ने गृहमंत्री अमित शाह को लेटर लिखा था। उन्होंने कहा कि मैं इस समिति में काम नहीं करूंगा। इसका गठन ऐसे किया गया है कि नतीजे पहले से तय हो सकें। आम चुनाव से पहले ऐसी समिति सरकार के गुप्त मंसूबों की ओर इशारा करती है, जिसमें संवैधानिक रूप से एक संदिग्ध व्यवस्था को लागू करने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को शामिल नहीं करना संसदीय लोकतंत्र का अपमान है।

सरकार ने कहा- हर साल बिना तय समय होने वाले चुनाव रुकने चाहिए

दिसंबर २०१५ में संसद की स्थायी समिति ने अपनी ७९वीं रिपोर्ट में लोकसभा और विधानसभा चुनाव दो चरणों मे करवाने की सिफारिश की थी। शनिवार को जारी अधिसूचना में सरकार ने विधि अयोग की १७०वीं रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा है कि हर साल और बिना तय समय के होने वाले चुनाव रुकने चाहिए। सरकार ने कहा कि एक बार फिर १९५१-५२ से १९६७ तक चली एक देश एक चुनाव की व्यवस्था की ओर लौटना चाहिए। अलग चुनाव अपवाद की स्थिति में होना चाहिए। नियम यह हो कि लोकसभा और विधानसभाओं के लिए चुनाव पांच साल में एक बार होने चाहिए।

मोदी सरकार ने १८ से २२ सितंबर तक विशेष सत्र बुलाया

एक देश एक चुनाव की चर्चा के बीच केंद्र सरकार ने संसद का पांच दिन विशेष सत्र बुलाया है। यह १८ सितंबर से शुरू होकर २२ सितंबर तक चलेगा। यह १७वीं लोकसभा का १३वां और राज्यसभा का २६१वां सत्र होगा। इसमें ५ बैठकें होंगी। इस सत्र को लेकर कई अटकलें लगाई जा रही हैं। यह सत्र क्यों बुलाया गया है, इसे लेकर सरकार की तरह से अभी कोई बयान नहीं आया है।

संसद में ५ दिन का सत्र और ५ संभावनाएं

महिलाओं के लिए संसद में एक-तिहाई अतिरिक्त सीट देना।

नए संसद भवन में शिफ्टिंग।

यूनिफॉर्म सिविल कोड बिल पेश हो सकता है।

लोकसभा-विधानसभा चुनाव साथ कराने का बिल आ सकता है।

आरक्षण पर प्रावधान संभव। (OBC की केंद्रीय सूची के उप-वर्गीकरण, आरक्षण के असमान वितरण के अध्ययन के लिए २०१७ में बने रोहिणी आयोग ने १ अगस्त को राष्ट्रपति को रिपोर्ट दी है।)

एयर होस्टेस का मुंबई में रेता गया गला, फ्लैट में लाश मिली, सफाई कर्मचारी गिरफ्तार

मुंबई में एक एयरलाइन में प्रशिक्षु के रूप में कार्यरत २४ वर्षीय महिला फ्लैट में मृत पाई गई जिसका गला रेता गया था। पुलिस ने हत्या के आरोप में आवासीय सोसायटी के एक कर्मचारी को गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि मृतका की पहचान छत्तीसगढ़ की रहने वाली रूपल ओगरे के रूप में हुई है, जो एअर इंडिया में 'फ्लाइट अटेंडेंट' का प्रशिक्षण लेने के लिए अप्रैल में मुंबई आई थी।

२४ वर्षीय महिला फ्लाइट अटेंडेंट रविवार देर रात मुंबई में अपने अपार्टमेंट में मृत पाई गई। एक दिन बाद, पवई पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया, जो एक निजी हाउसकीपिंग फर्म में क्लीनर के रूप में काम करता था। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि मृतक की पहचान रूपल ओग्रे के रूप में हुई है, जो रविवार देर रात उपनगरीय अंधेरी में अपने फ्लैट में मृत पाई गई। उन्होंने बताया कि वह छत्तीसगढ़ की रहने वाली थी और एयर इंडिया में प्रशिक्षण के लिए अप्रैल में मुंबई चली गई थी।

पुलिस उपायुक्त दत्ता नलवाडे ने कहा पुलिस ने आरोपी की पहचान ४० वर्षीय विक्रम अटवाल के रूप में की है। 'हमने तकनीकी साक्ष्य के आधार पर एक आरोपी को गिरफ्तार किया है जो एक निजी हाउसकीपिंग फर्म में क्लीनर के रूप में काम करता है। हम हत्या और इसके पीछे के मकसद के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए उससे आगे की पूछताछ कर रहे हैं।' पुलिस ने कहा कि महिला अपनी बहन के साथ फ्लैट में रहती थी, जो एक सप्ताह पहले अपने मूल स्थान के लिए रवाना हुई थी। पुलिस ने कहा कि जब ओग्रे की हत्या की गई तो वह अपार्टमेंट में अकेली थी।

जब उसने कॉल का जवाब देना बंद कर दिया तो उसके परिवार को उस पर शक हुआ। परिवार मुंबई में उसके दोस्तों के पास पहुंचा और उनसे उसकी जांच करने को कहा। फ्लैट अंदर से बंद था और दरवाजे की घंटी बजाने पर भी कोई जवाब नहीं मिला।

घटना की जानकारी पवई पुलिस को दी गई। जब पुलिस उसके फ्लैट में गई, तो उन्होंने उसे गला कटा हुआ मृत पाया और तुरंत राजावाड़ी अस्पताल ले गए। वहां पहुंचने पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस आरोपी की पत्नी से भी पूछताछ कर रही है, जो उसी बिल्डिंग में हाउसकीपर का काम करती है। आगे की जांच चल रही है।

पुलिस ने भारतीय दंड संहिता की धारा ३०२ के तहत व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि महिला की कथित रूप से हत्या करने के बाद आरोपी पवई इलाके के तुंगा गांव में अपने घर चला गया था, जहां से पुलिस ने उसे धर दबोचा। अधिकारी ने बताया कि पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि आरोपी ने कहीं महिला का यौन उत्पीड़न तो नहीं किया।

उन्होंने कहा कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और चिकित्सा रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा हैं। पुलिस के मुताबिक, जांच के दौरान पाया गया कि महिला अपनी बहन और उसके पुरुष मित्र के साथ फ्लैट में रहती थी, लेकिन आठ दिन पहले वो दोनों अपने घर चले गए थे।

हालांकि, दोनों को पुलिस ने इस घटना की सूचना दे दी है। पुलिस ने बताया कि जब महिला ने अपने परिवार के सदस्यों के फोन कॉल का जवाब नहीं दिया तो उन्होंने मुंबई में अपने स्थानीय दोस्तों से संपर्क किया और उन्हें महिला के फ्लैट पर जाने को कहा। पुलिस के मुताबिक, जब परिवार के जानने वाले वहां पहुंचे तो उन्होंने फ्लैट अंदर से बंद पाया और घंटी का जवाब भी किसी ने नहीं दिया। अधिकारी ने बताया कि बाद में उन्होंने पवई पुलिस से संपर्क किया, जिनकी मदद से फ्लैट खोला गया। उन्होंने बताया कि महिला का गला रेता हुआ था और वह जमीन पर पड़ी थी। उसे आनन-फानन में राजावाडी अस्पताल ले जाया गया, जहां उसे भर्ती करने से पहले ही मृत घोषित कर दिया गया

सनातन धर्म पर टिप्पणी करने वाले स्टालिन का सिर काटकर लाने वालों को मिलेंगे १० करोड़ रुपए

अयोध्या के संत ने रखा इनाम

सनातन धर्म पर विवादित टिप्पणी करने वाले तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के बेटे व डीएमके पार्टी के नेता उदयनिधि स्टालिन के खिलाफ लोगों का आक्रोश बढ़ता जा रहा है। मुंबई में शिवसेना यूथ विंग के नेता ने उदयनिधि स्टालिन के खिलाफ केस दर्ज कराया वहीं अयोध्या के तपस्वी छावनी के संत जगत गुरु परमहंस आचार्य ने उदयनिधि का पुतला दहन किया। परमहंस आचार्य ने कहा कि जो भी उदयनिधि का सिर कलम करके लाएगा, उसे १० करोड़ रुपए का इनाम दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि उदयनिधि के द्वारा सनातन धर्म को मच्छर, डेंगू, मलेरिया और कोरोना की तरह देश से समाप्त करने की बात से वह काफी आहत हुए हैं। वहीं, स्टालिन के सनातन धर्म पर दिए गए बयान पर कांग्रेस चीफ मल्लिकार्जुन खड़गे के बेटे और कर्नाटक सरकार में मंत्री प्रियांक खड़गे ने कहा कि कोई भी धर्म जो समानता को बढ़ावा नहीं देता वह धर्म नहीं है। बेंगलुरु में कैबिनेट मंत्री प्रियांक खड़गे ने कहा, 'कोई भी धर्म जो समानता को बढ़ावा नहीं देता या आपको मानव होने की गरिमा सुनिश्चित नहीं करता वह धर्म नहीं है।' जूनियर खड़गे ने आगे कहा कि मेरे अनुसार, कोई भी धर्म जो आपको समान अधिकार नहीं देता या आपके साथ इंसानों जैसा व्यवहार नहीं करता, वह बीमारी के समान है।

२१,००० का नहीं मिला रक्षा बंधन पर शगुन, तो ननदों ने भाभी की कर दी जमकर पिटाई, गंभीर हालत में महिला AIIMS में भर्ती

रक्षा बंधन उत्सव के दौरान २१,००० रुपये के शगुन के पैसे को लेकर दिल्ली में एक महिला के साथ उसकी ननदों ने मारपीट की। बाद में उन्हें एम्स दिल्ली में भर्ती कराया गया। रक्षा बंधन (३० अगस्त, ३१) के अवसर पर दिल्ली में एक महिला को उसकी ननदों ने २१,००० रुपये शगुन के पैसे के लिए पीटा। घटना दिल्ली के मैदीन गढ़ी की है, जहां महिला के पति की बहनें त्योहार के लिए उसके घर आई थीं। विवरण के अनुसार, महिला ने अपने भाई (महिला के पति) से २१,००० रुपये की मांग करने के बाद अपनी भाभियों के साथ बहस की। यह बहस झगड़े में बदल गई और पैसे न मिलने पर महिला की भाभियों ने उसकी पिटाई कर दी। कथित तौर पर, जब पीड़िता ने घटना के बारे में पुलिस को सूचित करने का प्रयास किया तो उसकी महिला रिश्तेदारों ने उसके साथ और अधिक मारपीट की। बाद में उन्हें इलाज के लिए एम्स दिल्ली में भर्ती कराया गया था। घटना पर टिप्पणी करते हुए पुलिस ने कहा कि महिला एक नर्स के रूप में काम करती है और उसकी भाभियों ने उसके साथ मारपीट की है। इस वर्ष रक्षा बंधन ३० और ३१ अगस्त को मनाया गया। रक्षा बंधन के दौरान शगुन राशि, भाई द्वारा अपनी बहन को दिया जाने वाला धन का उपहार है।

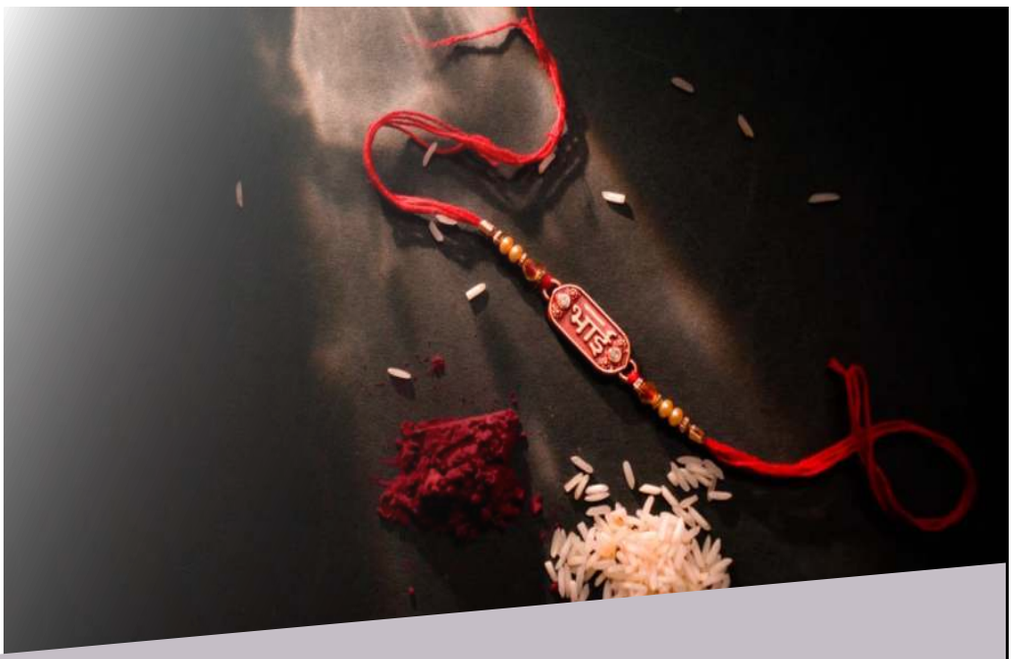

त्योहार

गणेश उत्सव 2023

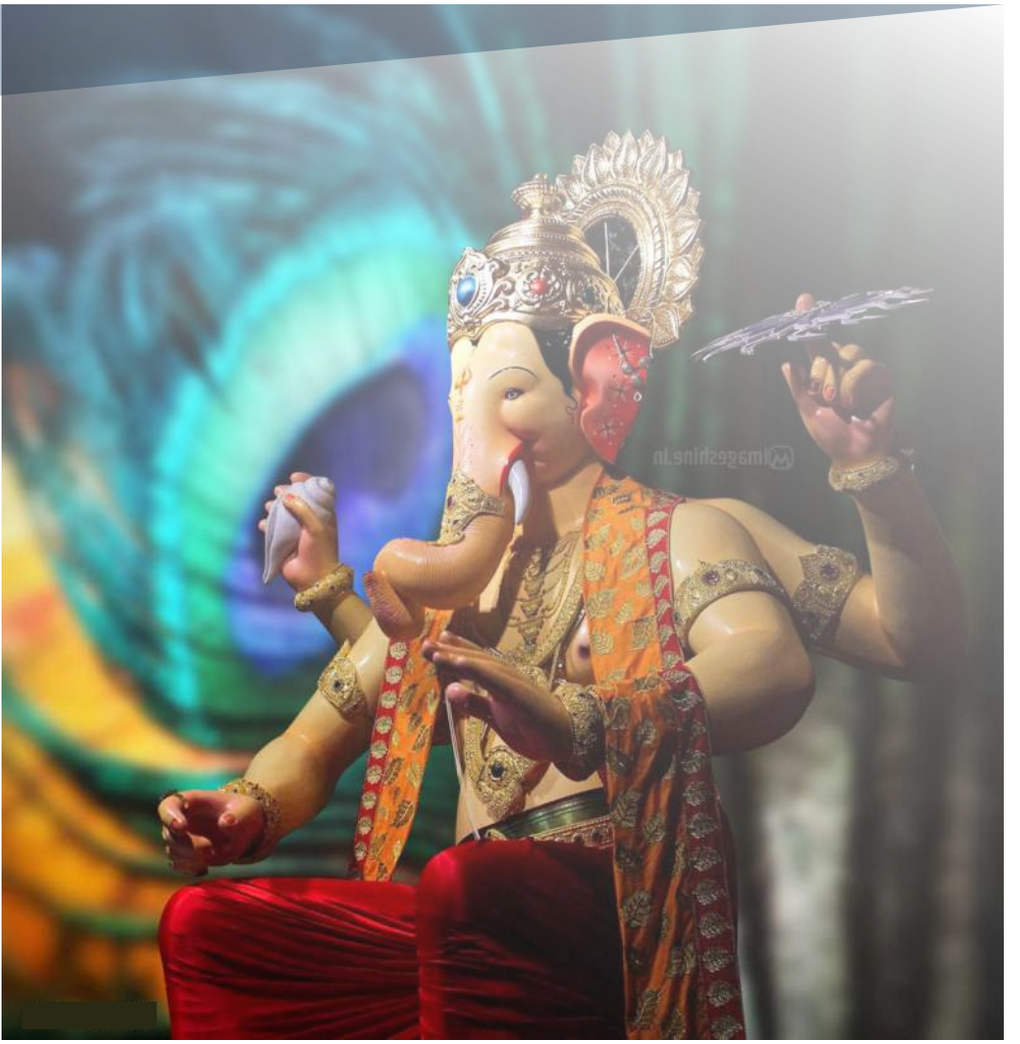

गणेश चतुर्थी वैसे तो पूरे देश में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है लेकिन महाराष्ट्र में इस त्योहार का एक अलग ही महत्व है. गणेश चतुर्थी से शुरू होकर अनन्त चतुर्दशी (अनंत चौदस) तक चलने वाला १० दिवसीय गणेशोत्सव मनाया जाता है. मान्यता है कि इन दस दिनों के दौरान यदि श्रद्धा एवं विधि-विधान के साथ गणेश जी की पूजा किया जाए तो जीवन के समस्त बाधाओं का अन्त कर विघ्नहर्ता अपने भक्तों पर सौभाग्य, समृद्धि एवं सुखों की बारिश करते हैं. दस दिनों तक चलने वाला यह त्योहार हिन्दुओं की आस्था का एक ऐसा अद्भुत प्रमाण है जिसमें शिव-पार्वती नंदन श्री गणेश की प्रतिमा को घरों, मन्दिरों अथवा पंडालों में साज-श्रृंगार के साथ चतुर्थी को स्थापित किया जाता है. दस दिनों तक गणेश प्रतिमा का नित्य विधिपूर्वक पूजन किया जाता है और ग्यारहवें दिन इस प्रतिमा का बड़े धूम-धाम से विसर्जन कर दिया जाता है.

गणेशजी का महत्व भारतीय धर्मों में सर्वोपरि है. उन्हें हर नए कार्य, हर बाधा या विघ्न के समय बड़ी उम्मीद से याद किया जाता है और दुःखों, मुसीबतों से छुटकारा पाया जाता है. श्री गणेशजी को विघ्न विनाशक माना गया है. गणेशजी को देवसमाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है. गणेशजी का वाहन चूहा है. इनकी दो पत्नियां भी हैं जिन्हें रिद्धि और सिद्धि के नाम से जाना जाता है. इनका सर्वप्रिय भोग मोदक यानी लड्डू है. गणेशोत्सव संपूर्ण विश्व में बड़े ही हर्ष एवं आस्था के साथ मनाया जाता है. घर-घर में गणेशजी की पूजा होती है. इस दौरान लोग मोहल्लों, चौराहों पर गणेशजी की स्थापना, आरती, पूजा करते हैं. बड़े जोरों से गीत बजाते, प्रसाद बांटते हैं. अनंत चतुर्दशी के दिन गणेशजी की मूर्ति को पूरे विधि विधान के साथ समुद्र, नदी या तालाब में विसर्जित कर अपने घरों को लौट आते है.

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को गणेश जी के सिद्धि विनायक स्वरूप की पूजा होती है. शास्त्रों के अनुसार इस दिन गणेश जी दोपहर में अवतरित हुए थे. इसीलिए यह गणेश चतुर्थी विशेष फलदायी बताई जाती है. पूरे देश में यह त्योहार गणेशोत्सव के नाम से प्रसिद्ध है. भारत में यह त्योहार प्राचीन काल से ही हिंदू परिवारों में मनाया जाता है. इस दौरान देश में वैदिक सनातन पूजा पद्धति से अर्चना के साथ-साथ अनेक लोक सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रम भी होते हैं जिनमें नृत्यनाटिका, रंगोली, चित्रकला प्रतियोगिता, हल्दी उत्सव आदि प्रमुख होते हैं.

गणेशोत्सव में प्रतिष्ठा से विसर्जन तक विधि-विधान से की जाने वाली पूजा एक विशेष अनुष्ठान की तरह होती है जिसमें वैदिक एवं पौराणिक मंत्रों से की जाने वाली पूजा दर्शनीय होती है. महाआरती और पुष्पांजलि का नजारा तो देखने योग्य होता है.

गणेश चतुर्थी से जुड़ी मान्यताओं में यदि गणेश चतुर्थी का दिन रविवार या मंगलवार हो तो इसे महाचतुर्थी का योग कहा जाता है. और इस महाचतुर्थी

शास्त्रों में भगवा न गणेश को प्रथम देवता बता या गया है। इस प्रका र की कथाएं और कथाएं हमा रे ग्रंथों में मौ जूद हैं, जिसमें स्पष्ट रूप से लिखा है कि भगवा न श्री गणेश की पूजा करने से सबसे पहले उपासक को वि शेष लाभ मिलता है और वह पूजा सफल हो ती है जि समें भगवान श्री गणेश की पूजा सबसे पहले होती है। हिन्दू कलैण्डर में प्रत्येक मास की दो चौथाई होती है, हिन्दू धर्म ग्रंथों के अनुसार भगवान गणेश की चतुर्थी तिथि बताई गई है। अमावस्या के बाद आने वाली शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को गणेश चतुर्थी और पूर्णिमा के बाद कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को समशष्टी चतुर्थी कहते हैं। विनायक चतुर्थी का व्रत हर महीने होता है, इस व्रत को बहुत ही महत्वपूर्ण व्रत बता या गया है। चतुर्थी के नियमों को नियमा नुसार करने से जातक का जीवन बड़े कष्टों और क्लेशों का अंत करने लगता है। हर महीने गणेश चतुर्थी का व्रत लोगों के लिए बड़ी मुसीबत बनजा ता है. वहीं इस व्रत का शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी चीजों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यदि पति -पत्नी के बीच कलह हो , या घर में किसी का स्वास्थ्य हमेशा खराब रहता हो , तो विनायक चतुर्थी का ऐसा व्रत भगवान श्री गणेश की विशेष कृपा है और उस घर के कष्ट दूर होने लगते हैं। विनायक चतुर्थी का व्रत और हर माह करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती है।

कैसे करें गणेश जी की पूजा

गणेशोत्सव के दौरान प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त हो कर 'मम सर्वकर्मसिद्धये सिद्धिविनायक पूजनमहं करिष्ये' मंत्र से संकल्प लें. इसके बाद सोने, तांबे, मिट्टी अथवा गोबर से गणेशजी की प्रतिमा बनाएं. गणेशजी की प्रतिमा को कोरे कलश में जल भरकर मुंह पर कोरा कपड़ा बांधकर उस पर स्थापित करें. इसके बाद मूर्ति पर सिंदूर चढ़ाकर उनका पूजन करें और आरती करें. फिर दक्षिणा अर्पित करके इक्कीस लड्डुओं का भोग लगाएं. इनमें से पांच लड्डू गणेशजी की प्रतिमा के पास रखकर शेष ब्राह्मणों में बांट दें.

जो गणेश व्रत या पूजा करता है उसे मनोवांछित फल तथा श्रीगणेश प्रभु की कृपा प्राप्त होती है. पूजन से पहले नित्यादि क्रियाओं से निवृत्त होकर शुद्ध आसन में बैङ्गकर सभी पूजन सामग्री को एकत्रित कर पुष्प, धूप, दीप, कपूर, रोली, मौली लाल, चंदन, मोदक आदि एकत्रित कर क्रमशः पूजा करें.

पूजा के दौरान जरूर याद रखें कि भगवान श्रीगणेश को तुलसी दल और तुलसी पत्र नहीं चढ़ाना चाहिए. उन्हें, शुद्ध स्थान से चुनी हुई दूर्वा को धोकर ही चढ़ाना चाहिए. श्रीगणेश भगवान को मोदक यानी लड्डू अधिक प्रिय होते हैं इसलिए उन्हें देशी घी से बने मोदक का प्रसाद ही चढ़ाना चाहिए. ऐसा करने से विशेष फल की प्राप्ति होती है. श्रीगणेश के अलावा शिव और गौरी, नन्दी, कार्तिकेय सहित सम्पूर्ण शिव के दिन चन्द्र दर्शन करना वर्जित है. श्रीमद्भागवत में कथा आरती है. इस दिन चांद देखने से ही भगवान कृष्ण को मिथ्या कलंक का दोष लगा था जिससे मुक्ति पाने के लिए उन्होंने विधिवत गणेश चतुर्थी का व्रत किया था. भविष्य पुराण में इस तिथि को शिवा, शांत और सुखा चतुर्थी भी कहा है. गणेशजी का महत्व भारतीय धर्मों में सर्वोपरि है. उन्हें हर नए कार्य, हर बाधा या विघ्न के समय बड़ी उम्मीद से याद किया जाता है और दुःखों, मुसीबतों से छुटकारा पाया जाता है. श्री गणेशजी को विघ्न विनाशक माना गया है. गणेशजी को देवसमाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है. गणेशजी का वाहन चूहा है. इनकी दो पत्नियां भी हैं जिन्हें रिद्धि और सिद्धि के नाम से जाना जाता है. इनका सर्वप्रिय भोग मोदक यानी लड्डू है. गणेशोत्सव संपूर्ण विश्व में बड़े ही हर्ष एवं आस्था के साथ मनाया जाता है. घर-घर में गणेशजी की पूजा होती है. इस दौरान लोग मोहल्लों, चौराहों पर गणेशजी की स्थापना, आरती, पूजा करते हैं. बड़े जोरों से गीत बजाते, प्रसाद बांटते हैं. अनंत चतुर्दशी के दिन गणेशजी की मूर्ति को पूरे विधि विधान के साथ समुद्र, नदी या ताल ाब में विसर्जित कर अपने घरों को लौट आते हैं.

परिवार की पूजा षोड़षोपचार विधि रूप से करना सर्वोत्तम माना जाता है. शास्त्रों के अनुसार श्रीगणेश की पार्थिव प्रतिमा बनाकर उसे प्राण-प्रतिष्ठित कर पूजन-अर्चन के बाद विसर्जित कर देना चाहिए. अतः भजन-कीर्तन और सांस्कृतिक आयोजनों के बाद प्रतिमा का विसर्जन करना नहीं भूलें.

क्या है गणेश पूजन का फल

वस्त्र से ढंका कलश, दक्षिणा तथा गणेश प्रतिमा आचार्य को समर्पित करके गणेशजी के विसर्जन का उत्तम विधान माना गया है. गणेशजी का यह पूजन करने से बुद्धि और रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति तो होती ही है, विघ्न-बाधाओं का भी समूल नाश हो जाता है.

गणेश जी को गजानन कहते हैं इसका संकेत है हाथी की तरह धैर्यवान और बुद्धिमान होना पड़ेगा.

गणेश जी को विघ्नहर्ता भी कहते हैं. अतः इसके प्रतीक के रूप में उनके हाथ में परशुदंड भी है.

गणेश जी रिद्धि-सिद्धि के स्वामी हैं. अतः इनके पूजन से आपके सुख-संपदा और धन-धान्य की कमी नहीं होती है.

पूजा का समय

वैसे तो भगवान की पूजा कभी भी की जा सकती है परन्तु गणेशजी की पूजा सायंकाल के समय की जाए तो बेहतर माना जाता है. पूजन के बाद सर झुकाकर चंद्रमा को अर्घ्य देना चाहिए और ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा जरूर देनी चाहिए. सिर झुकाकर चंद्रमा को अर्घ्य देने के पीछे भी कारण व्याप्त है. माना जाता है कि जहां तक संभव हो, इस दिन चंद्रमा के दर्शन नहीं करने चाहिए. भूल बस या कारण बस इस दिन चंद्रमा के दर्शन हो जाते हैं तो आप कलंक के भागी बन जाते हैं. फिर भी घबराएं नहीं! हमारे शास्त्रों में इस तरह की भूल बस होने वाली घटनाओं से मुक्ति पाने के लिए विधान भी मौजूद हैं. ऐसा होने पर गणेश चतुर्थी व्रत कर कलंक से मुक्ति पाई जा सकती है.

बप्पा की पूजा में गणपति यंत्र का महत्व

गणेश-पूजन के दस दिनों के दौरान गणपति यंत्र के पूजन का विशेष महत्व है. जीवन को सुख-समृद्धि एवं सौभाग्य से परिपूर्ण करने के लिए इस यंत्र के पूजन का विशेष महत्व है. चाहे किसी नए व्यापार की शुरुआत हो, भवन-निर्माण का आरम्भ हो या आपकी किसी किताब, पेन्टिंग या यात्रा का शुभारम्भ हो, गणपति यन्त्र आपके कार्य में आने वाली हर प्रकार की बाधा से आपकी रक्षा करता है. जो इस यन्त्र का पूजन करता है वह अपने हर कार्य में सफल रहता है. इस यन्त्र को आप अपने पूजा के स्थान पर स्थापित कर सकते हैं. ■

हर साल भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से १० दिवसीय गणेश उत्सव की शुरुआत होती है जो अनंत चतुर्दशी तक चलती है. गणेश चतुर्थी के दिन घरों, पंडालों में रिद्धि सिद्धि के दाता गणपति जी विराजमान होते हैं.

मान्यता है कि इन दस दिनों तक गणेश जी कैलाश से धरती पर भक्तों के बीच रहकर उनकी हर समस्या दूर करते हैं. यही कारण है कि पूरे भारत में इस महोत्सव को धूमधाम से मनाया जाता है.

इस साल गणेश उत्सव का १९ सितंबर २०२३ को गणेश चतुर्थी से होगा. इसकी समाप्ति २८ सितंबर २०२३ को अनंत चतुर्थी पर होगी. आखिरी दिन बप्पा की मूर्ति का विर्सजन होता है.

गणेश चतुर्थी २०२३ मुहूर्त

गणेश चतुर्थी के दिन बप्पा की स्थापना शुभ मुहूर्त में ही करना चाहिए, इससे घर में शुभ और लाभ की प्राप्ति होती है. गौरी पुत्र परिवार के समस्ता दुख हर लेते हैं.

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी तिथि शुरू - १८ सितंबर २०२३, दोपहर १२.३९

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी तिथि समाप्त - १९ सितंबर २०२३, दोपहर ०१.४३

गणेश स्थापना समय - सुबह ११.०७ - दोपहर ०१.३४ (१९ सितंबर २०२३)

गणेश चतुर्थी पूजा विधि

गणेश चतुर्थी पर गणपति स्थापना से पहले पूजा स्थल को अच्छी तरह साफ कर लें.

अब पूजा की चौकी पर पीला या लाल कपड़ा बिछाएं. शुभ मुहूर्त में पूर्व में मुख करते हुए गणपति को चौकी पर स्थापित करें.

अब गणेश जी पर दूर्वा से गंगाजल छिड़कें. उन्हें हल्दी, चावल, चंदन, गुलाब, सिंदूर, मौली, दूर्वा,जनेऊ, मिठाई, मोदक, फल, माला और फूल अर्पित करें.

अब भगवान श्री गणेश के साथ-साथ भगवान शिव और माता पार्वती की भी पूजा करें. लड्डू या मोदक का भोग लगाएं फिर आरती कर दें.

इसी तरह १० दिन तक रोज सुबह शाम पूजा कर आरती करें और भोग लगाएं.

१० दिन तक गणेश उत्सव क्यों मनाते हैं ?

पुराणों के अनुसार गणेश चतुर्थी के दिन शंकर और पार्वती माता के पुत्र गणपति जी का जन्मोत्सव मनाया जाता है. गणेश उत्सव में १० दिन तक बप्पा की विधिवत पूजा अर्चना करता है उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं. वहीं एक पौराणिक कथा के अनुसार महर्षि वेदव्यास जी ने महाभारत की रचना के लिए गणेश जी का आह्वान किया था. व्यास जी श्लोक बोलते गए और गणपति जी बिना रुके १० दिन तक महाभारत को लिपिबद्ध लिखते गए. दस दिन में गणेश जी पर धूल मिट्टी की परत जम गई. १० दिन बाद यानी की अनंत चतुर्दशी पर बप्पा ने सरस्वती नदी में स्नान कर खुद को स्वच्छ किया, उसके बाद से ही दस दिन तक गणेश उत्सव मनाया जाने लगा.

गजाननं भूतगणादि सेवितं
कपित्थजम्बूफलचारु भक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम् ।।

गजाननं भूतगणादि सेवितं

प्राचीनतम वेदों में भी गणेश भगवान का वंदन किया गया है, जो सभी भूतगणों की सेवा करते हैं।

कपित्थजम्बूफलसार भक्षितम्

गणेश भगवान का प्रिय भोजन कपित्थ और जम्बू फल की रसिकता से भरा होता है।

उमासुतं शोकविनाशकारणम्

उमा देवी के पुत्र होने से वह सभी दुःखों का नाश करने वाले होते हैं।

नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम्

मैं विघ्नेश्वर भगवान के पादकमल की प्रार्थना करता हूं।

अर्थ

इस श्लोक में, श्री गणेश भगवान की महिमा और महत्वपूर्ण गुणों का वर्णन किया गया है। गणेश भगवान को 'गजानन' कहा गया है क्योंकि उनके मुखका आकार एक हाथी के समान होता है। वे भूतगणों की सेवा करते हैं, जिन्हें 'भूतगणादि सेवितं' कहा गया है। इसके अलावा, उनकी प्रिय भोजन की प्रशंसा की गई है, जिनमें कपित्थ और जम्बू फल की रसिकता सहित होती है। उनके माता पिता शिव और उमा के पुत्र होने के कारण वे सभी शोकों को नष्ट करने में सक्षम होते हैं, जिसे 'उमासुतं शोकविनाशकारणम्' कहा गया है।

इस श्लोक के अंत में, गणेश भगवान के पादकमल की प्रार्थना की गई है, जिसके साथ 'नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम्' लिखा है। इसके माध्यम से शिष्य यह प्रकट करता है कि वह विघ्नेश्वर भगवान की पूजा करता है और उनके पादकमल की सेवा में निरंतर रहता है।

श्री गणेश के कई मंत्र प्रसिद्ध हैं लेकिन एक खास मंत्र जो श्री गणेश जी सबसे प्रसिद्ध मंत्र है। इस मंत्र उच्चारण करने से भगवान को प्रसन्न करने का आसान मार्ग माना गया है। ये मंत्र है वक्रतुंड महाकाय इस मंत्र में श्री गणेश जी के भव्य रूप के बारे में बताते हुए उनसे हमेशा कृपा बरसाने की प्रार्थना की जाती है। इस मंत्र को बेहद प्रभावशाली माना जाता है। इस मंत्र इतना प्रसिद्ध का कि हिन्दू धर्म में शादी के कार्ड में सबसे पहले इस मंत्र को लिखा जाता है। ऐसा कहा जा सकता है कि कोई भी शुभ कार्य करने से पहले इसी मंत्र उच्चारण किया जाता है।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

वक्रतुण्ड महाकाय मंत्र का हिंदी अर्थः

जिनका मुंह घुमावदार है। जिनका शरीर विशाल है, जो अपने भक्तजनों के पाप को तुरंत हर लेते है, जो करोड़ों सूर्य के समान तेजस्वी हैं, जो ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैला सकते हैं, जो सभी कार्यों में होने वाले बाधाओं को दूर कर सकते है, वैसे प्रभु आप मेरे सभी कार्यों की बाधाओं को शीघ्र दूर करें। आप मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि सदैव बनाए रखें।

नीरज चोपड़ा ने रचा इतिहास

भारतीय दिग्गज जैवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ने वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप का गोल्ड मेडल अपने नाम कर इतिहास रच दिया है। उन्होंने पाकिस्तानी एथलीट अरशद नदीम को पछाड़ यह गोल्ड मैडल अपने नाम किया है। बता दें कि यह कारनामा करने वाले नीरज चोपड़ा पहले भारतीय बन गए हैं।

हालांकि, नीरज चोपड़ा के लिए शुरुआत अच्छी नहीं हुई थी। वह पहले प्रयास के बाद १२वें स्थान पर थे। उनका थ्रो फाउल करार दे दिया गया था। लेकिन इसके बाद नीरज चोपड़ा ने बेहतरीन वापसी की। दूसरे राउंड के बाद नीरज चोपड़ा ने ८८.१७ मीटर के साथ टॉप पर जगह बना ली और जर्मनी के जुलियन वेबर दूसरे राउंड में ८५.७९ मीटर भाला फेंककर दूसरे स्थान पर आ गए। जबकि इस राउंड के बाद तीसरे नंबर पर चेक रिपब्लिक के जैकब वादलेच ८४.१८ मीटर के स्कोर के साथ रहे।

पाकिस्तान के अरशद नदीम को हरा नीरज ने जीता गोल्ड

भारतीय दिग्गज नीरज चोपड़ा ने तीसरे राउंड में ८६.३२ मीटर की दूरी पर भाला फेंका। दूसरी तरफ तीसरे राउंड के बाद पाकिस्तान के खिलाड़ी अरशद नदीम ८७.८२ मीटर की दूरी पर भाला फेंका कर दूसरे स्थान पर आ गए। लेकिन पाकिस्तान के दिग्गज जैवलिन थ्रोअर अरशद नदीम को सिल्वर मेडल ही हाथ लगा। बता दें कि इससे पहले नीरज चोपड़ा ओलंपिक के साथ डायमंड लीग में भी गोल्ड मेडल जीत चुके हैं। वहीं, अब इस दिग्गज ने वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीतकर बड़ा इतिहास रच दिया है।

आपको बता दें कि नीरज चोपड़ा पानीपत जिले के गांव खंडरा के रहने वाले हैं। उनके प्रदर्शन को लेकर ग्रामीणों में खासा उत्साह रहा। नीरज के परिजन और गांव वालों को मैच से पहले ही यकीन था कि उनका नीरज इस बार स्वर्ण पदक जीतकर भारत वापस लौटेगा। नीरज के स्वर्ण पदक जीतते ही पूरा गांव ने जश्न मनाया।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने रचा इतिहास, शूटआउट में पाकिस्तान को हराकर जीता वर्ल्ड कप

भारत ने चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को रोमांचक शूटआउट में २ . ० से हराकर पहला पुरूष हॉकी ५ एशिया कप जीत लिया है। निर्धारित समय तक स्कोर ४ . ४ से बराबर था। इस जीत के साथ ही भारत ने एफआईएच पुरूष हॉकी ५ विश्व कप २०२४ में भी प्रवेश कर लिया। भारत के लिये मोहम्मद राहील (१९वां और २६वां), जुगराज सिंह (सातवां) और मनिंदर सिंह (१०वां मिनट) ने निर्धारित समय में गोल दागे। वहीं गुरजोत सिंह और मनिंदर सिंह ने शूटआउट में गोल किये।

पाकिस्तान के लिये निर्धारित समय में अब्दुल रहमान (पांचवां), कप्तान अब्दुल राणा (१३वां), जिकरिया हयात (१४वां) और अरशद लियाकत (१९वां) ने गोल दागे। इससे पहले भारत ने शनिवार को ही सेमीफाइनल में मलेशिया को १०-४ से रौंदकर फाइनल में प्रवेश किया था। पाकिस्तान ने पहल ` सेमीफाइनल में ओमान को ७-३ से हराकर फाइनल में जगह बनायी थी।

भारत को टूर्नामेंट के एलीट पूल चरण के मैच में पाकिस्तान से ४-५ से हार मिली थी। भारत की ओर से सेमीफाइनल में मोहम्मद राहील (नौवें, १६वें, २४वें, २८वें मिनट), मनिंदर सिंह (दूसरे मिनट), पवन राजभर (१३वें मिनट), सुखविंदर (२१वें मिनट), दिप्सन टिर्की (२२वें मिनट), जुगराज सिंह (२३वें मिनट) और गुरजोत सिंह (२९वें मिनट) ने गोल दागे। वहीं मलेशिया के लिए कप्तान इस्माइल आसिया अबू (चौथे मिनट), अकहिमुल्लाह अनवर (सातवें, १९वें मिनट), मोहम्मद दिन (१९वें मिनट) में गोल किये।

शतरंज के ग्रैंडमास्टर रमेशबाबू प्रगनानंद...

भारतीय शतरंज के ग्रैंडमास्टर रमेशबाबू प्रगनानंद ने फिडे वर्ल्ड कप शतरंज टूर्नामेंट के फाइनल मुका बले में दमदार प्रदर्शन किया , लेकिन वो खिताब जी तने से चूक गए. उन्हें दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस का र्लसन के हाथों शिकस्त झेलनी पड़ी. फा इनल के तहत दो दिन में दो बाजी खेली गईं और दो नों ही ड्रॉ पर खत्म हुईं. इसके बाद टाईब्रेकर से नती जा निकला. बतादें कि तीन दिन तक चले फाइनल मुकाबले में ४ बाजियों के बाद नतीजा निकला. १८ साल के प्रगनानंद ने शुरुआती दोनों बाजियों में ३२ साल के कार्लसन को कड़ी टक्कर दी . दोनों के बीच मंगलवार को पहली बाजी खेली गई, जो ३४ चालों तक गई थी , मगर नतीजा नहीं निकल सका.जबकि दूसरी बाजी बुधवार को खेली गई. इस बार दोनों के बीच ३० चालें चली गईं और यह भी ड्रॉ पर खत्म हुई. शुरुआती दोनों बाजी ड्रॉ होने के बाद गुरुवार (२४ अगस्त) को टाईब्रेकर से नतीजा निकला. टा ईब्रेकर के तहत प्रगनानंद और कार्लसन के बीच २ बाजियां खेली गईं.

रमेशबाबू प्रगनानंद ने शतरंज की दुनिया में एक नया इतिहास लिख दिया है। सिर्फ १८ साल की उम्र में रमेशबाबू ने फिडे शतरंज विश्व कप टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बना ली है। उन्होंने २१ अगस्त, २०२३ को सेमीफाइनल मैच में अमेरिकी ग्रैंडमास्टर फैबियानो कारूआना को टाईब्रेक में हरा दिया। अब शतरंज विश्व कप के फाइनल में प्रगनानंद का सामना विश्व के नंबर एक खिलाड़ी मैगनस कार्लसन से होगा।

१० अगस्त, २००५ को चेन्नई, तमिलनाडु में जन्मे रमेशबाबू प्रगनानंद एक भारतीय शतरंज खिलाड़ी हैं। जिन्हें देश की सबसे प्रतिभाशाली प्रतिभाओं में से एक माना जाता है। रमेश बाबू के पिता स्टेट कॉर्पोरेशन बैंक में काम करते हैं, और उनकी मां नागलक्ष्मी एक गृहिणी हैं। उनकी एक बड़ी बहन वैशाली आर हैं, जो शतरंज खेलती हैं। पांच साल की उम्र से यह शतरंज प्रतिभा शतरंज खेल रही है। वो भी एक महिला ग्रैंडमास्टर है। १९ साल की वैशाली ने एक इंटरव्यू में बताया था कि शतरंज में उनकी रुचि एक टूर्नामेंट जीतने के बाद बढ़ी और इसके बाद उनका छोटा भाई भी इस खेल को पसंद करने लगा। आज वैशाली भारत में शतरंज की मशहूर खिलाड़ी है। बहन को चेस खेलता देख प्रगनानंद भी उससे प्रभावित होकर शतरंज को महज तीन साल की उम्र में अपने जीवन का हिस्सा बना लि

या था। क्योंकि बहन चेस खेलने की ट्रेनिंग लेती थी तो उनकी बहन ने ही उन्हें चेस खेलना सिखाया था।

सात साल की उम्र में ही प्रगनानंद ने विश्व युवा शतरंज चैंपियनशिप जीती थी। तब सात साल की उम्र में इससे उन्हें फेडरेशन इंटरनेशनेल डेस एचेक्स (FIDE) मास्टर की उपाधि मिली। इसके बाद २०१५ में उन्होंने चैंपियनशिप का अंडर-१० डिविजन जीता। वहीं १० साल की उम्र में उन्होंने शतरंज के सबसे कम उम्र के अंतरराष्ट्रीय मास्टर का खिताब भी हासिल किया। ऐसा करने वाले वह उस समय सबसे कम उम्र के खिल ड़ी थे। इसके बाद १२ साल की उम्र में ग्रैंडमास्टर बने, ऐसा करने वाले वह उस समय के दूसरे सबसे कम उम्र के खिलाड़ी थे। बता दें कि १६ वर्षीय प्रगनानंद शतरंज के इतिहास में न केवल दूसरे सबसे कम उम्र के ग्रैंडमास्टर हैं, बल्कि इसे हासिल करने वाले इतिहास में सबसे कम उम्र के भारतीय भी हैं। शतरंज के खेल में सबसे प्रतिष्ठित उपाधि ग्रैंडमास्टर है। इस उपाधि को प्राप्त करने के लिए खिलाड़ी को २,५०० की शास्त्रीय या मानक FIDE रेटिंग प्राप्त करनी होती है। साथ ही अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में तीन ग्रैंडमास्टर मानदंड भी प्राप्त करने होते हैं। महज १२ साल की उम्र में इस असाधारण प्रतिभा ने यह खिताब हासिल कर लिया था।

वहीं 'चेस डॉट कॉम' की वेबसाइट के मुताबिक २२ फरवरी २०२२ को सिर्फ १६ साल की उम्र में प्रगनानंद तत्कालीन विश्व चैंपियन मैगनस कार्लसन को हराने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बन गये थे। जब उन्होंने एयरथिंग्स मास्टर्स रैपिड शतरंज टूर्नामेंट में एक रैपिड गेम में कार्लसन को हराया। सबसे दिलचस्प बात यह है कि नंबर एक चेस खिलाड़ी मैगनस कार्लसन को प्रगनानंद ने केवल ३९ चाल में परास्त कर दिया था। उनसे पहले यह कमाल केवल विश्वनाथन आनंद और पी हरिकृष्णा ही कर पाये थे। हालांकि, सबसे कम उम्र में विश्व चैंपियन को हराने का यह रिकॉर्ड १६ अक्टूबर २०२२ तक था, जब इसे एक अन्य भारतीय गुकेश डी द्वारा तोड़ा गया।

नवंबर, २०१८ में टाटा स्टील चेस इंडिया २०१८ चैंपियनशिप के दौरान भारत के ५ बार वर्ल्ड चैंपियन रहे विश्वनाथन आनंद से प्रगनानंद का सामना हो चुका है। हालांकि, तब प्रगनानंद को विश्वनाथन आनंद से हार का सामना करना पड़ा था। लेकिन, उस वक्त दिये एक इंटरव्यू में विश्वनाथन आनंद ने कहा कि भविष्य में प्रगनानंद रमेशबाबू अच्छा करेंगे और देश का नाम रोशन करेंगे। मैं इसके लिए आश्वस्त हूं। हालांकि बता दें कि भारतीय ग्रैंडमास्टर विश्वनाथन आनंद ५ बार वर्ल्ड चैंपियन रह चुके हैं। वे पहली बार १९८८ में ग्रैंडमास्टर बने थे। उन्होंने २०००, २००७, २००८, २०१० और २०१२ में खिताबी जीत दर्ज की थी

पहाड़ी पनीर टिक्का

सामग्री
पनीर क्यूब्स - २ कप
प्याज कटे - १ कप
शिमला मिर्च कटी - १ कप
टमाटर कटा - १
तेल - १ टेबलस्पून
नमक - स्वादानुसार
हरा धनिया कटा - १/२ कप
पुदीना कटा - १ कप
जीरा - १ टी स्पून
हरी मिर्च कटी - १ टेबलस्पून
फ्रेश क्रीम - १ टेबलस्पून
दही ताजा - २ टेबलस्पून
नींबू रस - १ टी स्पून
नमक - स्वादानुसार
विधिः

पहाड़ी पनीर टिक्का बनाने के लिए सबसे पहले पनीर, प्याज, शिमला मिर्च और टमाटर के एक-एक इंच के चौकोर टुकड़े काट लें. इसके बाद इन सभी सामग्रियों को अलग रख दें. अब पुदीना पत्तियों, धनिया पत्ती, हरी मिर्च को बारीक काट लें. इसके बाद इन चीजों को मिक्सर जार में ट्रांसफर करें. मिक्सर में जीरा, दो बड़ी चम्मच दही और एक बड़ी चम्मच क्रीम भी डालें और पीस लें. इसके बाद तैयार पेस्ट को एक बाउल में निकाल लें.

अब इस पेस्ट में १ चम्मच नींबू रस और स्वादानुसार नमक डालकर अच्छी तरह से फेंट लें. इसके बाद टिक्का तैयार करने वाली आयरन स्टिक को लें और उस पर थोड़ा सा तेल लगाकर चिकना कर लें. इसके बाद इस पर पनीर, शिमला मिर्च, प्याज और टमाटर के एक-एक टुकड़े को लगाते जाएं. इसी तरह एक-एक कर सभी सामग्रियों से स्टिक्स तैयार करते जाएं. अब इन टिक्कों पर तैयार किया मेरीनेड लगाएं और १५-२० मिनट के लिए अलग रख दें. अब एक नॉनस्टिक पैन में १ चम्मच तेल डालकर गर्म करें. जब तेल गर्म हो जाए तो उसमें टिक्के की सारी स्टिक्स को रखकर फ्राई करें. इसे बीच-बीच में पलटते हुए सेकें. जब टिक्का अच्छी तरह से सिककर सुनहरा हो जाए और उसमें क्रस्पीनेस आ जाए तो गैस बंद कर दें और गर्मागर्म ही पड़ाही पनीर टिक्के को टमाटर सॉस के साथ सर्व करें.

चीनी मलाई पराठा

सामग्री
गेहूं आटा - १ कटोरी
मलाई ताजी - २ टेबलस्पून
चीनी - २-३ टी स्पून
देसी घी - जरूरत के मुताबिक
नमक - १ चुटकी
विधिः

चीनी मलाई पराठा बनाने के लिए सबसे पहले एक बर्तन में आटा डालें और उसमें चुटकीभर नमक मिला दें. अब थोड़ा-थोड़ा करते हुए पानी डालें और आटा गूंथ लें. आटा गूंथने के बाद उसे १० मिनट के लिए अल ग रख दें, जिससे ठीक से सैट हो जाए. इसके बाद आटे की समान अनुपात की लोइयां तोड़ लें. अब एक लोई लें और उसे बेलें. लोई बेलने के बाद इस पर देसी घी लगाएं और चीनी डालकर फैला लें.

अब लोई को बंद कर दें और सूखा आटा लगाकर दोबारा बेलें. अब एक नॉनस्टिक तवे को मीडियम आंच पर गर्म करें. तवा गर्म होने के बाद उस पर पराठा डालकर सेकें. कुछ देर बाद पराठे के किनारों पर घी डाले और पराठा पलट दें. अब पराठे के ऊपरी हिस्से पर घी लगाएं. पराठा पलट पलटकर दोनों ओर से तब तक सेकें जब तक कि सुनहरा होकर क्रिस्पी न हो जाए.

अब पराठे के ऊपर मलाई डालकर उसे चारों ओर फैला लें. नाश्ते के लिए टेस्टी चीनी मलाई पराठा तैयार है. इसे गर्मागर्म सर्व करें.

खांडवी

सामग्री
बेसन - १०० ग्राम
दही - १ कप
अदरक पेस्ट - १/२ टी स्पून
कच्चा नारियल कद्दूकस - १ टेबलस्पून
हरा धनिया कटा - १ टेबलस्पून
करी पत्ते - ४-५
हरी मिर्च कटी - २
हल्दी - १/४ टी स्पून
तेल - १ टेबलस्पून
नमक - स्वादनुसार
विधिः

खांडवी बनाने के लिए सबसे पहले एक बर्तन में बेसन छान लें. इसके बाद एक अन्य बाउल में दही डालें और उसे अच्छी तरह से फेंट लें और स्मूद कर लें. इसके बाद बेसन में दही डालकर ठीक ढंग से मिलाएं. इसके बाद इस घोल में २ कप पानी डालकर बैटर तैयार करें. फिर हल्दी, अदरक पेस्ट और स्वादानुसार नमक डाल कर सभी चीजों को घोल के साथ मिक्स करें. अब एक कड़ाही को मीडियम आंच पर रखकर उसमें बेसन का घोल डाल दें. इसके बाद बड़ी चम्मच से चलाते हुए बेसन घोल को पकाएं. जब बेसन का घोल गाढ़ा होने लग जाए तो गैस की फ्लेम को धीमी कर दें. इसके बाद बेसन का घोल ८-१० मिनट तक और पकाएं. इस दौरान इसे बीच-बीच में चलाते रहें. इतने वक्त में खांडवी का घोल ठीक तरह से गाढ़ा हो जाएगा.

अब एक ट्रे लें और उसमें खांडवी का तैयार घोल डालकर फैलाते जाएं. ध्यान रखें कि घोल पतला ही फैलाना है. घोल ज्यादा होने पर अलग-अलग ट्रे में डालकर फैलाएं. इसके बाद ट्रे को १० मिनट के लिए ऐसे ही छोड़ दें जिससे घोल ठंडा होकर सैट हो जाए. इसके बाद चाकू की मदद से जमी परत की २ इंच चौड़ी और लगभग ६ इंच लंबी पट्टियां काट लें. फिर हर पट्टी को लेकर उससे रोल बना लें और एक प्लेट में अलग रखते जाएं.

इसके बाद एक छोटे पैन में तेल डालकर गर्म करें. तेल गर्म होने के बाद इसमें राई, करी पत्ते और कटी हरी मिर्च डालकर तड़का लगाएं. अब इस तड़के को खांडवी के ऊपर डालकर अच्छी तरह से फैला लें. स्वाद से भरपूर खांडवी बनकर तैयार हो चुकी है. इसके ऊपर कद्दूकस नारियल छिड़ककर स्नैक्स के तौर पर सर्व करें.

मल्टीग्रेन डोसा

सामग्री
रागी - १/२ कटोरी
राजगीरा - १/४ कटोरी
ज्वार - १/४ कटोरी
चावल - १/२ कटोरी
काला चना - १/४ कटोरी
उड़द दाल - १ कटोरी
राजमा, मूंग दाल - १/४ कटोरी
देसी घी - जरुरत के मुताबिक
नमक - स्वादानुसार
विधिः

मल्टीग्रेन डोसा बनाने के लिए सबसे पहले रागी, ज्वार, काला चना समेत अन्य सभी अनाज और दालों को अच्छी तरह से साफ करें और फिर उन्हें पानी से अच्छी तरह से धोकर ७-८ घंटे के लिए भिगोकर रख दें. तय समय के बाद छलनी की मदद से अनाज के मिश्रण से पानी अलग कर दें. अब इन्हें मिक्सर की मदद से थोड़ा-थोड़ा करते हुए पीसें और स्मूद पेस्ट तैयार कर लें. इस पेस्ट को एक गहरे तले वाले बर्तन में डालते जाएं.

जब सारा पेस्ट तैयार हो जाए तो उसमें थोड़ा सा नमक डालकर मिलाएं और बर्तन को ढककर २-३ घंटे के लिए किसी गर्म जगह पर रख दें, जिससे डोसे में थोड़ा खमीर उठ सके. तय समय के बाद डोसा बैटर को लेकर एक बार फेंट लें और इसके बाद एक नॉनस्टिक तवे को मीडियम आंच पर गर्म करें. जब तवा गर्म हो जाए तो उस पर थोड़ा सा घी डालकर चारों ओर फैला लें.

अब एक कटोरी में मल्टीग्रेन डोसा का बैटर लें और उसे तवे के बीच में डालकर गोल-गोल करते हुए फैलाएं. इसे कुछ देर सेकें उसके बाद डोसा पलट दें और उसके किनारों पर चम्मच की मदद से थोड़ा सा घी डाल दें. डोसा दोनों ओर से सुनहरा होने तक सेकें और फिर फोल्ड कर प्लेट में उतार लें. इसी तरह सारे बैटर से मल्टीग्रेन डोसे तैयार कर लें. नाश्ते में पोषण से भरपूर मल्टीग्रेन डोसे चटनी, सॉस या सांभर के साथ सर्व करें.

ऑफिस की थकान मिटाने के तरीके...

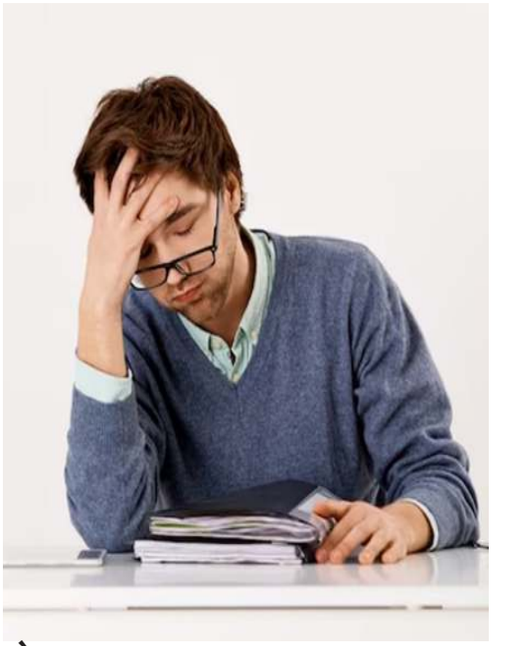

काम की वजह से कभी कभी जरूरत से ज्यादा थक जाना एक सामान्य बात है। परंतु यदि आपकी शारीरिक या भावनात्मक थकावट किसी अन्य कारण से हो रही है तो आपको तुरंत किसी विशेषज्ञ की मदद लेनी चाहिए। यदि आपको शरीर में दर्द, भूख में बदलाव, चिड़चिड़ापन, डिप्रेशन, पेट की तकलीफ, बुरे ख्याल, निराशा, हीन भावना, नींद न आना या ज्यादा नींद आना जैसे लक्षण महसूस हो रहे हैं तो तुरंत किसी विशेषज्ञ से मिलें क्योंकि कई बार अधिक चिंता करने के कारण शरीर में इस प्रकार के विकार उत्पन्न हो जाते हैं। एक चिकित्सक आपके मानसिक स्वास्थ्य लक्षणों के साथ आपकी थकान के पीछे कारणों का पता लगाने में आपकी मदद कर सकता है।

ऑफिस का काम आपको बहुत अधिक थका सकता है। थकावट महसूस करने के लिए शारीरिक श्रम जरूरी नहीं होता। कई बार मानसिक तौर पर किए गए कार्य भी आपको शारीरिक और मानसिक रूप से बुरी तरह थका देते हैं। आप जिस प्रकार की भी नौकरी करते हैं, उससे जुड़ी जरूरतें और मांगें आपको शारीरिक और भावनात्मक रूप से थका सकती हैं, भले ही आप कार्य करने के पश्चात अपने ऑफिस अथवा काम से छुट्टी पा लें। काम के अलावा तनाव के अन्य कई कारण भी हो सकते हैं जैसे कि आपसी संबंध से जुड़े हुए मुद्दे, वित्तीय संबंधी चिंताएं, स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं आदि। यह सभी आपके तनाव को बढ़ा सकते हैं। कई लोग बच्चों की चिंता से परेशान रहते हैं और कई माता पिता की चिंता से।

यदि काम करके आप स्वयं को सामान्य से थोड़ा अधिक थका हुआ महसूस करने लगे हैं, तो सबसे पहले जरूरी है कि आप अपनी उस आदत पर नजर डालें जो थकान को बढ़ाने में योगदान दे रही है। ऐसा हो सकता है कि अपने काम को पूरा करने के बाद सिर्फ अपने पसंदीदा कुर्सी में आराम से बैठ कर अपने फोन पर लगे रहना चाहते हो और यही वह स्थिति हो जो आपको बहुत आराम देती हो। ऐसा भी हो सकता है कि आप सामान्यतः खुद को समय देने के लिए (आराम करने के लिए) देर से उठते हों, और जिसके कारण जब तक आप सोने के लिए बिस्तर पर नहीं जाते तब तक आपको पूरी तरह से आराम नहीं मिल पाता।

ऐसा हो सकता है कि आप बाहर निकलना चाहते हो जैसे कि आप अपने दोस्तों को देखते हैं। या फिर कुछ समय निकाल कर बाहर खाना खाने का की योजना बनाना चाहते हैं। या फिर आप घर पर ही कुछ अच्छा बनाने की योजना बना रहे हो परंतु आपको

अपने अंदर ऊर्जा ही महसूस नहीं हो रही कि आप इनमें से कोई भी कार्य कर सकें। पौष्टिक भोजन, बेहतर नींद और शारीरिक गतिविधियां आपके तनाव को जादुई रूप से गायब नहीं कर सकती हैं। परंतु छोटे-छोटे बदलाव आपकी थकान को कम करने में काफी सहायक सिद्ध हो सकते हैं। साथ ही यह आपके मानसिक तनाव को भी कम करने में महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

यह बात सच है कि एक अच्छी नींद आपको निश्चित रूप से कम थका हुआ महसूस कराने में मदद करती है। परंतु यदि आप नियमित तौर पर व्यायाम करते हैं तो इससे आपके शरीर के अन्दर सकारात्मक हॉमीन सक्रिय रहते है और नींद भी अच्छी आती है। यदि आप पूर्ण रूप से व्यायाम नहीं कर सकते तो कोई चिंता की बात नहीं है। आप चाहे तो एक छोटी सी शुरुआत आज से भी कर सकते हैं। व्यायाम आपके अंदर की ऊर्जा के स्तर और मनोदशा, दोनों को ही बेहतर बना सकते हैं।

जब आप हर दिन शाम को और सप्ताहांत को भी अपने ऑफिस के काम से जूझते रहते हैं, या हर १५ मिनट में अपने ईमेल की जांच जारी रखते हैं तो आप स्वयं को ऑफिस के लिए अधिक सूचित और तैयार महसूस करते हैं। ऐसे में आपके सहकर्मी या ग्राहक यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि आप तक हमेशा ही पहुँचा जा सकता हैं, क्योंकि, अक्सर पूरी तरह से 'छुट्टी' ले लेना एक तरह से असंभव कार्य होता है। इसीलिए जब आप हमेशा ही काम के लिए उपलब्ध होते हैं तो आपके पास स्वयं के लिए कोई वक्त नहीं होता। यह एक मुख्य कारण है जिससे आप थका हुआ और उदासीन महसूस करने लगते हैं।

हमेशा काम के माहौल में रहना आप को बुरी तरह थका सकता है। ज़रूरत है इस बात की कि आप कम से कम कुछ घंटे काम के माहौल से पूरी तरह दूर रहें।

यदि आपसे अपने निर्धारित घंटों के अलावा भी काम से जुड़े कार्यभार को संभालने की उम्मीद की जा रही है तो आपको अपने मैनेजर से बात करनी चाहिए। उनके साथ बात करके आपको अपने कार्य करने के घंटों को निर्धारित कर देना चाहिए। आपको इस बात को भी पूरी तरह साफ कर देना चाहिए कि आप किस समय काम के लिए उपलब्ध नहीं होंगे।

कभी-कभी अधिक कार्यभार होने के कारण आपको देर तक काम करना पड़ सकता है। परंतु यह हर किसी के कार्यक्षेत्र का सिर्फ एक हिस्सा होना चाहिए। जब यह आदत में बन जाता है तो व्यक्ति के पास स्वयं के लिए समय ही नहीं रह जाता जो कि उसके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

इस बात का ध्यान रखें कि क्या आप दूसरों को खुश रखने के लिए अतिरिक्त काम स्वेच्छा से कर रहे हैं या फिर स्वयं को किसी अपराध बोध से बचाने के लिए ऐसा कर रहे हैं। यदि ऐसा है तो आपको विनम्रता से अपनी क्षमता से अधिक कार्य करने के लिए मना कर देना चाहिए, जिससे कि आप भविष्य में बेहतर काम कर सकें।

अपने मैनेजर से अपने कार्य और टारगेट की अवधि को लेकर उपस्थित विकल्पों के विषय में चर्चा करना एक अच्छा विचार हो सकता है। यदि आप स्वयं को बहुत अधिक थका हुआ महसूस कर रहें हैं या आप के लिए कार्य करना मुश्किल हो रहा हो, तो जरूरी है कि आप अपने मैनेजर से बात करें। आपको अपने सीनियर या मेनेजर को यह समझाना चाहिए कि यदि आप आराम करेंगे, तो आप पुनः खुद को ऊर्जावान महसूस करेंगे और इसके कारण आपकी कार्यक्षमता अपने आप ही बढ़ जाएगी, जिससे सभी को लाभ होगा।

यदि आपके पास इतने अधिक कार्य हैं जो वास्तव में बिना किसी की मदद के पूरे करना बहुत मुश्किल हो, तो ऐसी स्थिति में मदद के लिए पूछना कभी भी गलत नहीं होता। ऐसी स्थिति में बेहतर होगा कि आप अपने मैनेजर से मदद के लिए बात करें। आप यह सोचकर चिंता नहीं कर सकते कि यदि आपने मदद की मांग की तो यह आपकी कमजोरी या कार्य ना कर पाने की क्षमता को प्रदर्शित करेगा। याद रखें कि आपका मैनेजर चाहता है कि आप अपने काम में अपना सबसे अच्छा प्रदर्शन करें। वह तब तक आप को मदद नहीं कर सकते जब तक कि उन्हें यह पता नहीं चलेगा कि आपको वास्तव में मदद की आवश्यकता है अथवा नहीं। इसी कारण अपनी परिस्थिति से अपने मैनेजर को अवगत कराना भी आप ही का कर्तव्य है, किसी और का नहीं। ऐसा करने से आप जिम्मेदार दिखेंगे और अपनी कंपनी के लिए आपकी निष्ठा भी दिखेगी। जब आपके पास बहुत सारा काम अकेल ` पूरा करने के लिए होता है तो ऐसी स्थिति में अपने मैनेजर को बता करके उनसे कार्य को दोबारा असाइन करवाइए अथवा आप चाहे तो ऐसी स्थिति में उनसे अपने किसी साथी के साथ कार्य करने की इच्छा को भी बता सकते हैं।

अपनी तरफ से आप उन कार्य की जिम्मेदारियों को लेने से बचें जिन्हें आप पूरी तरह से नहीं कर सकते अथवा जिन्हें करना आपके लिए संभव ना हो। अतिरिक्त काम को स्वीकार करना वास्तव में सम्मान और सकारात्मक सोच का उदाहरण जरूर होता है। परंतु यदि अतिरिक्त काम के करने के बाद आप स्वयं को पूरी तरह से ऊर्जा हीन और उदासीन पाएं, तो ऐसे कार्य को लेने से अच्छा है कि आप पहले ही सम्मान पूर्वक मना कर दें। क्योंकि जब आप थका महसूस करते हैं तो आप अपनी सामान्य कार्य क्षमता से भी कम कार्य कर पाते हैं।

कुछ ऐसी क्रियाकलापों में खुद को लगाएं जो आपको ऊर्जावान महसूस कराने के साथ ही आपके अंदर किसी गुण को पैदा करें सकें। जैसे कि आप चाहे तो बागवानी कर सकते हैं, म्यूजिक सीख सकते हैं, कोई कोर्स कर सकते हैं, कुकिंग सीख सकते हैं, या फिर कोई किताब लेकर उसे पढ़ सकते हैं।

आराम करते हुए पसंदीदा संगीत सुनने के साथ चाय या कोफ़्फे का लुत्फ़ उठाना।

खुद को पम्पर करने के लिए ऑनलाइन शौपिंग करें - जैसे ब्लूटूथ स्पीकर, लैपटॉप टेबल, बैग, टी-शर्ट या कुछ और

दोस्तों के साथ बड़ी पार्टी मनाने के बजाय घर में रुक कर स्वयं के साथ एक शांत रात बिताएं। तारों को देखें, सुगन्धित कैंडल जलायें, और बहती हवा को महसूस करें।

योग, ध्यान और अन्य ऐसी क्रियाओं का अभ्यास करें, जो मन को शांत करतीं हैं।

अपने करीबी दोस्तों से नियमित संपर्क रखें।

अपनी सभी आवश्यकता ओं की पहचान करें और आत्म देखभाल के लिए एक योजना जरूर बनाएं यह आपकी कार्यक्षमता बढ़ाने के साथ-साथ आपकी आंतरिक शांति के लिए भी जरूरी है।

अपने प्रियजनों और ख़ास दोस्तों से बात करें

सदैव तनाव में रहना और खुद को सिर्फ काम तक सीमित कर देना गलत है। यह स्थिति आपको स्वयं के अंदर अकेलेपन की तरफ धकेल देती है और आप अवसाद से ग्रस्त हो जाते हैं। स्वयं के स्थान पर अपने किसी प्रिय व्यक्ति को रखकर सोचें कि यदि उसके ऊपर काम का इतना अधिक बोझ होता और वह इस प्रकार से सदैव तनावग्रस्त स्थिति में रहता तो आप कैसा महसूस करते। जब आप इस तरह सोचेंगे, तो आप समझ पाएंगे कि आप से प्यार करने वाले लोग आपकी मदद करना चाहते हैं। अच्छा होगा कि आप स्थिति बिगड़ने से पहले अपने प्रिय जनों से बात करके अपने मन का बोझ हल्का कर लें, इससे आपका तनाव स्वतः ही कम हो जाएगा।

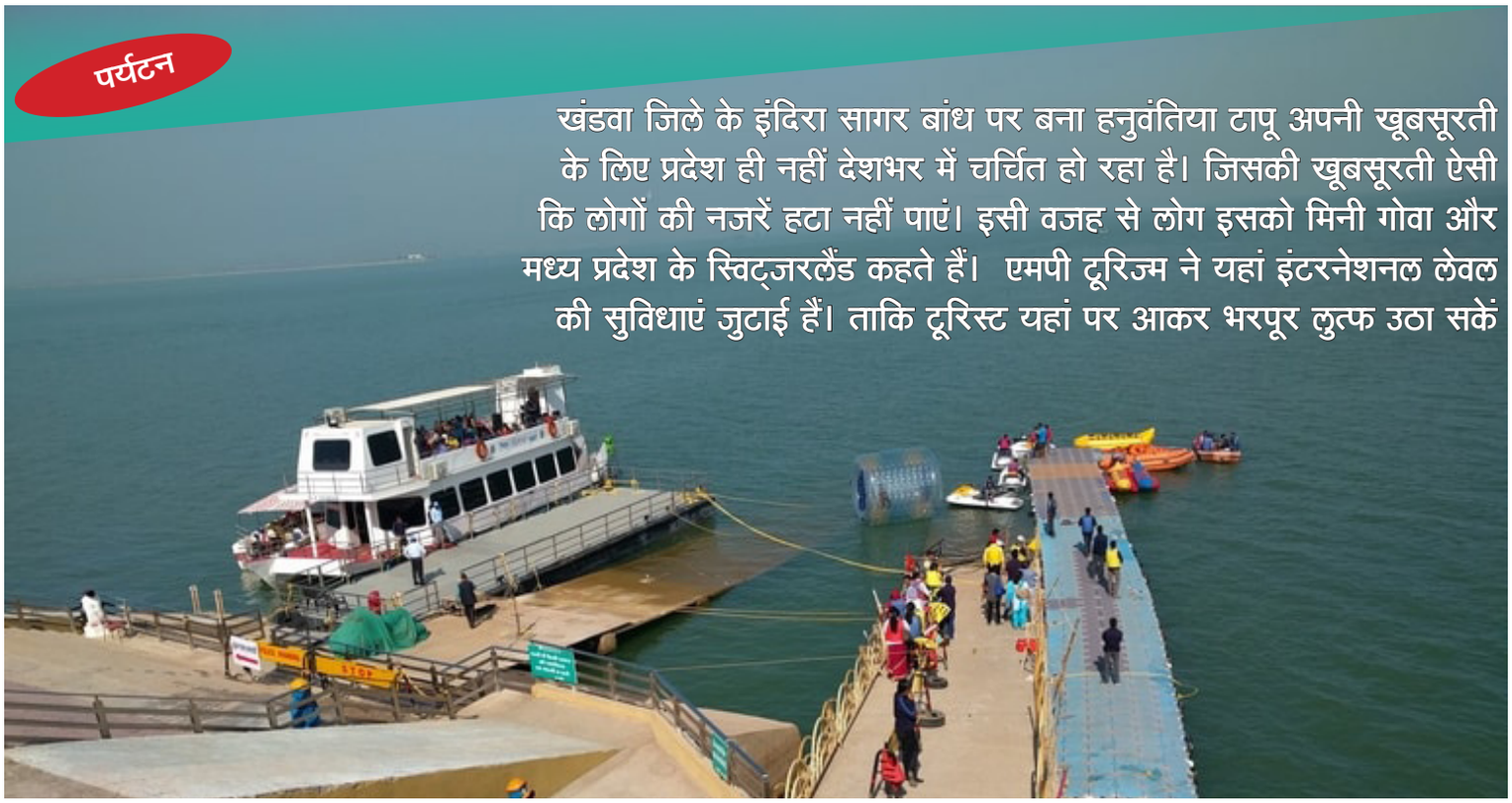

खंडवा जिले के इंदिरा सागर बांध पर बना हनुवंतिया टापू अपनी खूबसूरती के लिए प्रदेश ही नहीं देशभर में चर्चित हो रहा है। जिसकी खूबसूरती ऐसी कि लोगों की नजरें हटा नहीं पाएं। इसी वजह से लोग इसको मिनी गोवा और मध्य प्रदेश के स्विट्जरलैंड कहते हैं। एमपी टूरिज्म ने यहां इंटरनेशनल लेवल की सुविधाएं जुटाई हैं। ताकि टूरिस्ट यहां पर आकर भरपूर लुत्फ उठा सकें

मिनी गोवा और मध्य प्रदेश के स्विट्जरलैंड कहे जाने वाला

हनुवंतिया टापू

हनुवंतिया टापू मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में स्थित बेहद खूबसूरत जगह है। यह द्वीप खंडवा के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है जो अपने खुबसूरत दृश्यों और वाटर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज के लिए फेमस है, और अपने इसी सुरम्य वातावरण और स्पोर्ट्स एक्टिविटीज हर साल हजारों पर्यटकों को अपनी और अट्रेक्ट करने में कामयाब होता है। बता दे हनुवंतिया द्वीप को हनुमंतिया द्वीप के नाम से भी जाना जाता है जिसे हाल ही में, मध्य प्रदेश पर्यटन विकास केंद्र द्वारा इस जगह को एक बेहतरीन दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया गया है। जब भी आप यहाँ आयेंगे तो यह द्वीप आपको बिभिन्न वाटर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज, फ्लोटिंग, ट्रेकिंग, बर्ड वॉचिंग और वनस्पति निशान रोमांच के साथ आश्चर्यचकित करता है। इस आइलैंड में हर साल एक जल महोत्सव का आयोजन भी किया जाता है जिसमे देश के विभिन्न हिस्सों से पर्यटक शामिल हो सकते है। हनुवंतिया टापू कोई प्रकृति द्वारा निर्मित टापू नही है। वास्तव में हनुवंतिया टापू या हनुमंतिया द्वीप का निर्माण इंदिरा सागर बांध के बैकवाटर से हुआ है जिसे मध्य प्रदेश पर्यटन विकास केंद्र द्वारा लगभग २० करोड़ की लागत से तैयार किया गया है।

खंडवा से लगभग ४७ किलोमीटर दूरी पर मुंदी नामक तहसील में स्थित हनुवंतिया टापू का इतिहास कुछ बर्षो पुराना ही है। इस खूबसूरत द्वीप का निर्माण इंदिरा सागर बांध के निर्माण से उत्पन्न हुई झील के कारण हुआ है। जबकि इस टापू को अपना नाम स्थानीय गाँव के नाम से प्राप्त हुआ है। हनुवंतिया टापू में वाटर स्पोर्ट्स से लेकर ट्रेकिंग तक वह सभी एक्टिविटीज अवेलेवल है जो यहाँ आने वाले पर्यटको को कभी निराश नही करती है।

वाटर स्पोर्ट्स : यदि आपको वाटर स्पोर्ट्स एन्जॉय करना पसंद है तो हनुवंतिया टापू में वाटर स्पोर्ट्स की एक लम्बी श्रंखला मौजूद है। जब भी आप यहाँ आयेंगे तो स्कूबा डाइविंग, स्नोर्कलिंग, वॉटर ज़ोरिंग, वॉटर पैरासेलिंग, बनाना बोट, मोटर बोट और जेट स्की, वाटर सर्फिंग, हाउसबोट जैसे विभिन्न वाटर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज को एन्जॉय कर सकते है।

लैंड एक्टिविटीज : हनुवंतिया आइलैंड वाटर स्पोर्ट्स के साथ साथ क्लब हाउस, काइट फ्लाइंग, जिप लाइनर, क्लाइंबिंग वॉल, किड्ज जोन, बैलगाड़ी की सवारी जैसी लैंड एक्टिविटीज से भी यहाँ आने वाले पर्यटकों को काफी अट्रेक्ट और मनोरंजित करता है।

एयर एक्टिविटीजः हनुवंतिया आइलैंड लैंड पैरासेलिंग, हॉट एयर बैलून, पैरामोटर्स जैसी एयर एक्टिविटीज के लिए भी काफी फेमस है जिन्हें आप अपने फ्रेंड्स के साथ हनुवंतिया आइलैंड की ट्रिप में एन्जॉय कर सकते है।

ट्रेकिंग : हनुमंतिया ट्रेकर्स के बीच खंडवा के सबसे लोकप्रिय जगहें में से एक है। हनुवंतिया टापू के आसपास एक विशाल जंगल फैला हुआ जहाँ आप प्राकृतिक सौंदर्य के मध्य ट्रेकिंग करते हुए कुछ स्थानीय और विदेशी फूलों और कुछ वन्यजीवों को देख सकते है।

बर्ड वॉचिंगः हरे भरे पेड पौधों से घिरा हुआ हनुवंतिया टापू बर्ड वाचेर्स के लिए भी स्वर्ग के समान है। मोर, काले सारस, एक छोटे से कॉर्मोरेंट और यूरोपीय ऑस्ट्रे यहां पाई जाने वाली प्रजातियां हैं जिन्हें आसानी से देखा जा सकता है। इनके अलावा आप यहां कुछ विदेशी सेंट्रल इंडियन बर्ड प्रजातियां भी देख सकते हैं।

हनुवंतिया आइलैंड में एक्टिविटीज की टाइमिंगस

वाटर एक्टिविटीज का टाइम : सुबह ९.०० बजे से शाम ६.०० तक

एयर एक्टिविटीज का टाइम : सुबह ६.०० बजे से शाम ९.०० तक और शाम ४.०० बजे से शाम ६.०० तक

बैलगाड़ी की सवारी का समय : शाम ४ बजे से शाम ६ बजे तक

सांस्कृतिक कार्यक्रम का समय : शाम ७ बजे से शाम ८ बजे तक

नागचून बांध खंडवाः नागचून बांध खंडवा के प्रमुख पर्यटक स्थल में से एक है। यह बांध घनी हरियाली के शांत वातावरण से घिरा हुआ है जो इसे खंडवा में घूमने के लिए सबसे सुरम्य जगहें में से एक बनाती है।

घंटाघर खंडवाः घंटाघर खंडवा के प्रमुख ऐतिहासिक स्थान में से एक है जिसका निर्माण सन १८८४ में अंग्रेजों द्वारा किया गया था। बता दे यह प्रसिद्ध स्थान सूरज कुंड, पद्म कुंड, भीम कुंड और रामेश्वर कुंड जैसे कुंड के लिए प्रसिद्ध है जो चारों ओर चार दिशाओं में फैले हुए हैं। यदि आप खंडवा में हनुवंतिया टापू घूमने आने वाले है तो आपको अपना कुछ समय निकालकर घंटाघर जरूर आना चाहिये।

दादा धुनी वाले दरबारः दादा धुनी वाले दरबार खंडवा के सबसे प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है। वास्तव में यह दरबार श्री दादाजी की समाधि है, जो यहाँ आने वाले भक्तो की मनोकामना पूर्ण करने और लोगों के दुखों को दिव्य तरीके से ठीक करने के रूप में जाने जाते है।

गौरी कुंज खंडवाः भारत के सबसे प्रतिष्ठित गायकों में से एक, किशोर कुमार गांगुली को समर्पित, गौरी कुंजा, खांडवा के प्रसिद्ध पर्यटक स्थल में से एक है। राजेश खन्ना द्वारा उद्घाटित, गौरी कुंजा खंडवा में बॉलीवुड प्रेमियों के लिए एक विशेष स्थान है। गौरी कुंज अक्सर विभिन्न कला और सांस्कृतिक प्रदर्शनों की मेजबानी भी करता है जिस दौरान स्थानीय लोगो और काफी संख्या में पर्यटक हिस्सा लेते है।

तुलजा भवानी माता मंदिर खंडवाः तुलजा भवानी माता मंदिर खंडवा के प्रसिद्ध मंदिर और भारत में स्थापित ५१ शक्तिपीठों में से एक है। जहाँ हर दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु माता तुलजा भवानी को आशीर्वाद लेने के लिए यहाँ आते है।

ओंकारेश्वर मंदिर खंडवा : पवित्र नर्मदा नदी के तट पर स्थित ओंकारेश्वर मंदिर भारत में स्थापित १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक है। ओंकारेश्वर मंदिर मध्य प्रदेश में हिंदुओं के लिए एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है जहाँ प्रत्येक बर्ष देश के विभिन्न हिस्सों से लाखो श्रद्धालु पवित्र नर्मदा नदी में डुबकी लगाने और भगवान शिव के दर्शन के लिए यहाँ पहुचते है। इसीलिए आप जब भी हनुवंतिया टापू की यात्रा पर आयें तो अपना कुछ समय निकालकर ओंकारेश्वर मंदिर के दर्शन के लि ए जरूर आयें।

नव चांदनी देवी धाम : नव चंडी देवी धाम खंडवा में देवी शक्ति को समर्पित एक लोकप्रिय तीर्थ स्थान है। यहां पर नव चंडी के रूप में पूजा की जाती है, देवी शक्ति इस मंदिर की मुख्य देवता हैं। यहां आने का सबसे अच्छा समय फाल्गुन के त्योहारी सीजन के दौरान फरवरी और मार्च के महीने में होता है। इस दौरान एक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है जिसे कई सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियां भी होती हैं।

इंदिरा सागर बांध खंडवाः खंडवा में नर्मदा नदी पर बना इंदिरा सागर डेम महत्वपूर्ण परियोजना के साथ साथ खंडवा का एक आकर्षक पर्यटक स्थल और पिकनिक स्पॉट है जो प्रत्येक बर्ष बड़ी मात्रा में पर्यटकों की मेजबानी करता है। यदि आप खंडवा में हनुवंतिया टापू की ट्रिप पर आ रहे हैं तो आप इंदिरा सागर डेम की यात्रा के बारे में भी जरूर सोचना चाहिये।

सैलानी रिजॉर्ट खंडवाः इंदिरा सागर बांध के बैकवाटर में स्थित सैलानी रिजॉर्ट शहर की भीड़ भाड़ से दूर आराम करने के लिए खंडवा की सबसे अच्छी जगहें में से एक है। खूबसूरत जगह भव्य आवास का दावा करती है, जहाँ आप अपनी फैमली के साथ क्वालिटी टाइम स्पेंड करते हुए स्पीड बोटिंग, सर्फिंग, पैडल बोटिंग और क्रूजिंग जैसी कई गतिविधियों का आनंद ले सकते हैं।

Image Credit : Ganesh Kumar Arumugam

मथुरा कृष्ण जन्मभूमि में जन्माष्टमी पर दिखेगी चन्द्र यान की सफलता की झलक...

ब्रज में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के आगामी उत्सव की तैयारियों की रौनक़ बढ़ गई है. लाखों भक्तों ने अपने आराध्य भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के लिए ब्रज में पहुंचने की योजना बना ली है. मथुरा कृष्ण जन्मभूमि के मंदिरों में होना वाला जन्म अभिषेक जन्माष्टमी का मुख्य केंद्र रहता है और इस बार श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर जन्माष्टमी का उत्सव और भी दिव्य और अलौकिक होने वाला है. श्री कृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान के सचिव, कपिल शर्मा, ने बताया कि इस वर्ष भगवान के ५२५०वें जन्मोत्सव के अवसर पर जन्मस्थान की सजावट, ठाकुर जी की पोशाक, और श्रृंगार बेहद दिव्य होगा. जन्मस्थान को कारागार के रूप में सजाया जाएगा, जिसमें गर्भगृह और बाहरी भाग शामिल होंगे. कृष्ण चबूतरा पर भगवान की सभी लीलाओं का प्रदर्शन भी किया जाएगा. यह उत्सव भगवान कृष्ण के जन्मस्थान पर आने वाले श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है.

जन्माष्टमी के संपूर्ण दिन का कार्यक्रम

कान्हा के जन्मोत्सव मंदिर में ७ सितंबर को सुबह ५:३० बजे से भगवान की मंगला आरती के साथ शुरू होगा. इसके बाद, सुबह ८:०० बजे ठाकुर जी का दिव्य पंचामृत अभिषेक किया जाएगा, साथ ही मंत्रोचरण के साथ पुष्पर्चान किया जाएगा. सुबह १०:०० बजे, भागवत भवन में श्री राधाकृष्ण युगल सरकार के चरणों में मंगलारती और वेदमंत्रों के साथ पुष्पांजलि दी जाएगी.

जन्माष्टमी का मुख्य जन्म महाभिषेक रात्रि ११:०० बजे से होगा

जन्माष्टमी के दौरान होने वाला मुख्य जन्म अभिषेक का कार्यक्रम ७ सितंबर को रात्रि ११:०० बजे से श्री गणेश- नवग्रह के पूजन से आरंभ होगा. साथ ही, १००८ कमल पुष्पों से सहस्त्रार्चन करते हुए ठाकुर जी का आवाहन किया जाएगा. इसके बाद रात १२:०० बजे, भगवान के प्राकट्य के साथ सम्पूर्ण मंदिर परिसर में ढोल नगड़ों के साथ भगवान के जन्मोत्सव की धूम पूरे ब्रज में दिखाई देगी. जन्म के साथ ही भगवान की जन्म आरती भी शुरू हो जाएगी, जो रात १२:०५ तक चलेगी.

जिसके बाद भगवान का जन्म अभिषेक सर्वप्रथम स्वर्ण मंडित रजत कामधेनु स्वरूपा गौ के द्वारा किया जाएगा, जो कि रात्रि १२:०५ से लेकर १२:२० तक चलेगा, जिसे पयोधरमहाभिषेक भी कहा जाता है. इसके बाद भगवान रजत कमल पर विराजमान होंगे और उनका दूध, दही, घी, बूरा, शहद के साथ दिव्य औषधियों और वनस्पतियों से जन्म महाअभिषेक १२:२० से लेकर १२:४० तक किया जाएगा. जिसमें श्री राम जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष महंत श्री नृत्यगोपाल दास महाराज भी मौजूद रहेंगे. अभिषेक के बाद भगवान कृष्ण की श्रृंगार आरती रात १२:४० से १२:५० तक होगी और शयन आरती रात ०१:२५ से लेकर ०१:३० बजे तक होगी, जिसके बाद ठाकुर जी को शयन कराकर दर्शन बंद कर दिए जाएंगे.

इसरो के वैज्ञानिकों की ओर से बनाए गए चंद्र यान ने २३ अगस्त को चांद पर पहुंचकर एक इतिहास रच दिया था, जिससे पूरे देश का मान-सम्मान ऊंचा हुआ और इस बार इसरो की इस सफलता की झलक श्री कृष्ण जन्मस्थान मंदिर में भी देखने को मिलेगी. इस वर्ष मंदिर भगवान के लिए जो पुष्प बांग्ला सजाया जाएगा, उसका नाम इसरो के चीफ़ श्रीधर परिकर सोमनाथ के नाम पर रखा गया है. साथ ही, जन्माष्टमी के दौरान ठाकुर जी पोशाक धारण करेंगे. उसका नाम प्रज्ञान प्रभास रहेगा, जो कि चन्द्र यान के लैंडर प्रज्ञान रोवर के नाम पर रखा गया है.

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पूजन विधि

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर भक्तजन अपनी श्रद्धानुसार उपवास कर सकते हैं। इस दिन के व्रत की विधि बहुत साधारण हैं। श्रद्धालु लोग अपनी इच्छानुसार व्रत कर सकते हैं। लोग इस दिन पुरे दिन का व्रत करते हैं और रात्रि में कृष्ण जन्म के पश्चात् भोजन करते हैं। कुछ लोग निराहार व्रत करते हैं, कुछ लोग फल खाकर व्रत रखते हैं, तो कुछ लोग फरियाल खाकर व्रत करते हैं।

श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को रात १२ बजे हुआ था। इसलिए प्रतिवर्ष मंदिरों एवं घरों में जन्माष्टमी का पूजन रात्रि १२ बजे करते हैं। भगवान श्री कृष्ण का ध्यान पहले से अपने सम्मुख प्रतिष्ठित श्रीकृष्ण की नवीन प्रतिमा में करें। तत्पश्चात श्री कृष्ण का आवाहन करने के बाद, उन्हें आसन देने के लिये कुछ पुष्प अञ्जलि में लेकर अपने सामने छोड़े। आसन प्रदान करने के बाद, पाद्य (चरण धोने हेतु जल) समर्पित करें। पाद्य समर्पण के बाद, भगवान को अर्घ्य (सिर के अभिषेक हेतु जल) समर्पित करें। इसके पश्चात सम्पूर्ण स्नान कराकर, श्री कृष्ण को वस्त्र पहनाना चाहिए। फिर यज्ञोपवीत प्रदान कर भगवान को सुगन्धित द्रव्य (चन्दन, रोली, इत्र) व चावल प्रदान करें ।

श्रीकृष्ण के श्रंगार के लिए विभिन्न प्रकार के आभूषण (धैर्हैसहू) से अलंकृत करना चाहिए।

तत्पश्चात फूल व माला अर्पित करें।

फिर श्रीकृष्ण को नैवेद्य (माखन,मिश्री,पंजीरी, चरणामृत,फल) एवं ताम्बूल (पान, सुपारी के साथ) समर्पित करें। चरणामृत दूध, दही, शहद, घी व शक़्कर का मिश्रण हैं। भोग में तुलसी (ऊल्त्रे) पत्ते अवश्य होने चाहिए।

भगवान श्री कृष्ण की दीप, धूप और कर्पूर से आरती व स्तुति करनी चाहिए।

फिर दक्षिणा प्रदान कर भगवान को नमस्कार करना चाहिए।

Aditya-L1 Launch: ISRO ने पहला सूर्य मिशन आदित्य-एल१ किया लॉन्च

इसरो ने चंद्रयान ३ की सफलता के बाद आज एक और कदम सूर्य की और बढ़ा दिए है। इसरो ने आज अपने पहले सूर्य मिशन 'आदित्य-एल१' को लॉन्च कर दिया है। इस मिशन को २ सितंबर दोपहर ११ बजकर ५० मिनट पर श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया गया। मीडिया रिपोर्टर्स की माने तो भारत के इस पहले सौर मिशन से इसरो सूर्य का अध्ययन करेगा। मीडिया रिपोर्टर्स की माने तो इसरो के पहले सूर्य मिशन आदित्य एल-१ को अंतरिक्ष में लैग्रेंज प्वाइंट यानी एल-१ कक्षा में स्थापित किया जाएगा। इसके बाद यह ये सैटेलाइट सूर्य पर होने वाली गतिविधियों का २४ घंटे अध्ययन करेगा। मीडिया रिपोर्टर्स के अनुसार लैग्रेंज प्वाइंट तक पहुंचने में करीब ४ महीने का समय लगेगा। इस पॉइंट पर ग्रहण का प्रभाव नहीं पड़ता, जिसके चल ते यहां से सूरज पर आसानी से रिसर्च की जा सकती है। इस मिशन की अनुमानित लागत ३७८ करोड़ रुपए बताई जा रही है।

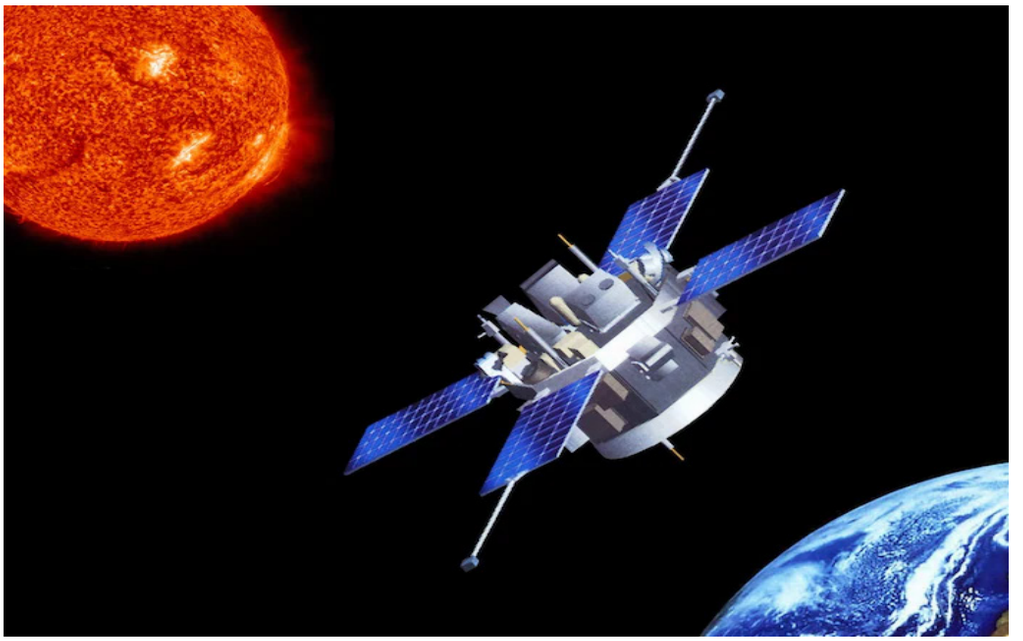

भारत के अलावा दुनिया के कितने देश कर रहे हैं सूर्य अभियान पर काम?

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान की वेधशाला आदित्य एल १ सफल प्रक्षेपण के साथ अपने १५ लाख किलोमीटर के सफर पर चल पड़ा है. यह भारत का सूर्य का अध्ययन करने वाला पहला अंतरिक्ष अभियान है लेकिन भारत ऐसा करने वाला पहला देश नहीं है. इससे पहले अमेरिका, यूरोप, जापान और चीन सूर्य के अध्ययन के लिए अंतरिक्ष यान भेज चुके हैं. इनमें अमेरिका के नासा और यूरोप की ईसा ने कई अभियान तो जापान और चीन ने भी अपने यान प्रक्षेपित किए हैं.

भारत के इसरो ने २ सितंबर को ही अंतरिक्ष में लैग्रेंज बिंदु एल१ के लिए आदित्य एल१ का सफल प्रक्षेपण किया है. यह लगातार सूर्य पर अपने सात उपकरणों के जरिए नजर रखेगा और सूर्य के वायुमडंल की ऊपरी परतों और उसकी कुछ प्रक्रियाओं का अध्ययन करेगा. इसके साथ ही वह पृथ्वी के पास के मौसम का भी अध्ययन करेगा. दुनिया में सूर्य के लिए सबसे ज्यादा संख्या में अंतरिक्ष अभियान अमिरका की स्पेस एजेंसी नासा ने भेजे हैं. नासा ने अगस्त १९९७ में एडवांस्ड कंपोजीशन एक्सप्लोरर (एस) नाम का अपना सबसे पहले सौर अभियान प्रक्षेपित किया था जिसका मकसद अंतरिक्ष से सूर्य की मैग्नेटिक फील्ड और कणों का अध्ययन करना था. इसके बाद अक्टूबर २००६ में नासा ने सोलर टेरेस्ट्रियल रिसेशन्स ऑबजर्वेटरी अभियान के तहत दो एक से अंतरिक्ष यानों को सूर्य की कक्षा में भेजा था जिसमें एक पृथ्वी के आगे और एक पीछे की ओर स्थापित किया गया था.

इसके बाद नासा ने फरवरी २०१० में सोलर डायनामिक्स ऑबजर्वेटचरीऔर जून २०१३ में इंटरफेस रीजन इमेजिंग स्पैक्ट्रोग्राफ जून २०१३ में भेजा था. लेकिन नासा का सबसे चर्चित अभियान अगस्त २०१८ में प्रक्षेपित किया गया पार्कर सोलर प्रोब जो दिसंबर २०२१ में सूर्य के उच्च वायुमंडल के पास पहुंचकर सूर्य के सबसे पास पहुंचने वाला पहली मानवीय वस्तु बना था. इसने वहां के कणों के नमूने लिए और मैग्नेटिक फील्ड का विशेष अवलोकन किया था. फरवरी २०२० में नासाने यूरोपीय स्पेस एजेंसी के साथ सोलर ऑर्बिटर का प्रक्षेपण किया था. इसका मकसद सूर्य का सौरमंडल के वातावरण के निर्माण में योगदान की पड़ताल करना था. इसके साथ ही नासा ने ईसा के साथ ही जाक्सा के साथ भी साझेदारी की थी और दिसंबर १९९५ मं सोलर एंड हेलियोस्फियरिक ऑबजरवेटरी का प्रक्षेपण किया था.

जापान की स्पेस एंजेंसी जाक्सा भी सूर्य के अनुसंधान में खासी रुचि लेती रही है उसका पहले सैटेलाइल हिनोतोरी (एस्ट्रो-ए) का मकसद सूर्य की ज्वालाओं से निकलने वाली एक्स विकिरणों का अध्ययन करना था. इसके बाद जापान न् यूहकोह (सोलर-ए) १९९१ में, नासा के साथ मिलकर सोहो १९९५ में और १९९८ में ट्रांजिएंट रीजन एंड कोरोनल एक्स्प्लोरर (ट्रेस) अभियान किए थे. वहीं २००६ में हिंनोदे (सोलर-बी) अमेरिका और यूके के सहयोग से भेजा गया था.

यूरोप की यूरोपीय स्पेस एजेंसी ईसा ने १९९० में यूल्योसेस यान सूर्य के ध्रुवों के अध्ययन के लिए अंतरिक्ष में भेजा था. अक्टूबर २००१ में ईसा ने प्रोबा-२ यान भेजा था जो सबसे छोटे सैटेलाइट था. ईसा ने नासा के साथ मिलक फरवरी २०२० में सोलर ऑर्बिटर और दिसंबर १९९५ में सोहो के साथ सहयोग किया था.

चीन पिछले साल ही सूर्य के अध्ययन के लिए अंतरिक्ष में अभियान भेजने वाले समूह में शामिल हुआ है. चीन की चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंसेस के नेशनल स्पेस साइंस सेंटर के द्वारा तैयार किया गया एडवांस स्पेस बेस्ड सोलर ऑबजर्वेटरी (ASO-S) का प्रक्षेपण अक्टूबर २०२२ में किया गया था.

सुभाष घई कर रहे हैं नये चेहरे की तलाश...

बॉलीवुड अभिनेता सनी देओल की फिल्म 'गदर-२' बॉक्स ऑफिस पर कमाई के मामले में झंडे ़गाड़ रही है। इस फिल्म की सफलता के बाद अब कई मेकर्स अपनी पुरानी सफल फिल्मों का सिक्वल बनाने की सोचने लगे है। इनमें से ही एक है सुभाष घई जो अपनी सुपरहिट फिल्म 'खलनायक' का सीक्वल बनाने जा रहे है। खबरों की माने तो सुभाष घाई ने 'खलनायक-२' की घोषणा कर दी है। सुभाष ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर करते हुए, लिखा 'अगर मीडिया आज भी 'खलनायक' के बारे में बात कर रहा है और यंग जनरेशन संजय दत्त के किरदार बल्लू बलराम के साथ कनेक्ट करते हुए इसका सीक्वल बनाने की मांग कर रहे हैं। तो हमारे पास डबल एनर्जी के साथ 'खलनायक २' ना बनाने की कोई वजह ही नहीं हैं। मीडिया रिपोर्टर्स की माने तो सुभाष घई ने बताया की 'गदर-२ की सफलता के बाद कई मैसेज आए कि मैं खलनायक-२ क्यों नहीं बना रहा? तो अब हम इस पर काम करने जा रहे हैं और आपको जल्द ही इस बारे में खबर मिलेगी।

खबरें ऐसी आ रही है कि खलनायक २ के लि ए शायद सुभाष घई अब संजय दत्त को साइन करने के मूड में नहीं हैं। हालांकि इसकी पुष्टि नहीं हुई है लेकिन निर्माता ने यह साफ कर दिया है कि उन्होंने फिल्म खलनायक २ के लिए अभी किसी को अप्रोच नहीं किया है। संजय दत्त को भी नहीं। लगता है खल नायक २ के लिए कुछ विशेष प्लानिंग की जा रही हैं। माना ये भी जा रहा है कि नयी कहानी के साथ नयी कास्ट भी हो सकती हैं!

नवाजुद्दीन सिद्दीकी एक ट्रांसजेंडर!

नवाजुद्दीन सिद्दीकी बॉलीवुड में अपनी पीढ़ी के सबसे बेहतरीन अभिनेताओं में से एक हैं। अपने लंबे और सफल करियर में उन्होंने कई दिलचस्प किरदार निभाए हैं। उनकी हालिया रिलीज 'हड्डी' में अभिनेता को पहली बार एक ट्रांसजेंडर की भूमिका निभाते हुए देखा जा सकता है। निर्माताओं ने इसका बहुप्रतीक्षित ट्रेलर इंटरनेट पर जारी कर दिया। अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी की फिल्म हड्डी सात सितंबर को ओटीटी प्लेटफॉर्म जी-५ पर रिलीज होगी। हड्डी का निर्देशन अक्षत अजय शर्मा ने किया है। फिल्म की पटकथा अक्षत ने अदम्य भल्ला के साथ मिलकर लि खी है। हड्डी की कहानी बदला लेने की भावना पर आधारित है, जो मुंबई शहर में सक्रिय आपराधिक गिरोहों की जटिल सांठगांठ को कुशलता से उजागर करती है। हड्डी में फिल्मकार अनुराग कश्यप भी एक अहम भूमिका में नजर आएंगे। अनुराग ने एक बयान में कहा," अक्षत ने मेरे साथ कई वर्षों तक सहायक निर्देशक के रूप में काम किया है। मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूं कि निर्देशक के रूप में अक्षत की पहली फिल्म में मुझे एक अभिनेता के तौर पर काम करने का मौका मिला। " अनुराग ने कहा कि उन्हें विश्वास और उम्मीद है कि दर्शक फिल्म में नवाजुद्दीन के किरदार को पसंद करेंगे। फिल्म में इला अरुण, मोहम्मद जीशान अय्यूब, सौरभ सचदेवा, श्रीधर दुबे, राजेश कुमार, विपिन शर्मा और सहर्ष शुक्ला जैसे कलाकार भी नजर आएंगे।

रणवीर सिंह बढ़ाएंगे डॉन की विरासत को ...

बॉलीवुड की सुपरहिट फ्रेंचाइजी डॉन में अब आपको शाहरुख नजर नहीं आएंगे। उनकी जगह अब आपको बॉलीवुड हीरों रणवीर सिंह नजर आएंगे। बता दें की अब डॉन का नया युग शुरू होने जा रहा है। हाल ही में मेकर्स ने डॉन ३ का टीजर भी रिलीज किया और फिल्म में रणवीर सिंह के होने की जानकारी दी। आपको बता डॉन में सबसे पहले अमिताभ बच्चन नजर आए थे। अमिताभ की फिल्म के कई सालों बाद डॉन में शाहरुख खान नजर आए जो डॉन फ्रेंचाइज में दो बार दिखें, लेकिन अब रणवीर तीसरे एक्टर होंगे, जो इस विरासत को आगे बढ़ाएंगे और फिल्म में डॉ न का रोल प्ले करेंगे। वहीं रणवीर सिंह के शाहरुख खान को रिप्लेस करने की बात पर फैंस ने डॉन ३ में रणवीर को लेने पर नाराजगी जताई। वहीं, अब एक्टर ने फिल्म को लेकर एक पोस्ट शेयर किया है। पोस्ट में उन्होंने अपने बचपन की कुछ तस्वीरें शेयर की हैं।

हैंडसम शशि को देखते ही एक्टिंग भूल गईं शर्मिला

इंडस्ट्री के हैंडसम हीरो के तौर पर पहचाने जाने वाले सुपरस्टार ज्यादातर रोमांटिक फिल्मों में ही नजर आते थे. हालांकि बहुमुखी प्रतिभा के धनी एक्टर को मेकर्स ने रोमांटिक इमेज से परे कभी देखा ही नहीं था. उनकी खूबसूरती एक वक्त में उनके लिए परेशानी का सबक बन गई थी. हालांकि उन्होंने अपने करियर में कई ऐसे किरदार निभाए जो दर्शकों के जहन में बस गए. बावजूद इसके वह कभी सुपरहीरो नहीं बन पाए.

बात उस दौरान की है जब शर्मिला टैगोर फिल्म 'कश्मीर की कली' की शूटिंग कर रही थी और शशि कपूर भाई शम्मी कपूर से मिलने फिल्म के सेट पर आए थे. ये पहला मौका जब फिल्म की हीरोइन शर्मिल ा टैगोर ने उन्हें पहली बार देखा था. उनकी खूबसूरती देख शर्मिला अपने होश खो बैठी थी. उस दौर की कई विदेशी एक्ट्रेसेस भी शशि कपूर पर जान छिड़कती थीं. उस दौर में दर्शक उनकी खूबसूरती के दीवाने हुआ करते थे. उनकी खूबसूरती की वजह से ही लोग थिएटर तक खींचे चले आते थे. लेकिन उन्हें कभी इसी खूबसूरती की वजह से स्टारडम नहीं मिल सका.शशि कपूर की खूबसूरती की दीवानी उस दौर की कई एक्ट्रेस हुआ करती थीं. दुबले-पतले, बड़ी-बड़ी आंखें देख हर कोई उनकी खूबसूरती का कायल हो जाता था. बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक शर्मिला टैगोर ने उस दौर का जिक्र करते हुए बताया था कि 'कश्मीर की कली' के सेट पर शशि कपूर अपने भाई शम्मी कपूर से मिलने एक दिन सेट पर पहुंचे थे. उस वक्त जब पहली बार शर्मिला ने शशि कपूर को देखा तो वह होश गवा बैठी थी. उनकी हालत ऐसी हो गई थीं कि वह एक्टिंग ही नहीं कर पा रही थी. उन्होंने डायरेक्टर को ये तक कह दिया था कि वह सेट से शशि कपूर को हटा दें क्योंकि वह एक्टिंग ही नहीं कर पा रही हैं. ऐसे में डायरेक्टर शक्ति सामंत ने मजबूरी में शशि को सेट से चले जाने को कहा था.'

प्रो.अच्युत सामंतः एक महान् शिक्षाविद् तथा एक निःस्वार्थी राजनेता

प्रो.अच्युत सामंता का पारदर्शी सरल व्यक्तित्व एक ऐसा तीर्थ है जहाँ शब्द मौन हो जाते हैं और भावनाएँ उनके साक्षात दर्शन के लिए हिलोरें लेने लगतीं हैं। प्रो. अच्युत सामंताः हजार हाथोंवाले आधुनिक देवता हैं जो बिना मांगे जरुरतमंदों को सबकुछ दे देते हैं। यह एक सहज मानव स्वभाव है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके अपने कटु अनुभव सदैव याद रहते हैं लेकिन वह अपने जीवन के सभी सुखद अनुभवों को भूल जाता है। प्रत्येक व्यक्ति सबसे पहले अपना जीवन संवारता है, अधिक से अधिक भौतिक सुखों का उपभोग करना चाहता है लेकिन प्रो अच्युत सामंत राजा जनक की तरह विदेह हैं।

महाप्रभु जगन्नाथ के प्रदेश ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर स्थित कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ इण्डस्ट्रियल टेक्नालॉजी ''कीट डीम्ड विश्वविद्यालय'' तथा विश्व के सबसे बड़े प्रथम आदिवासी आवासीय विश्वविद्यालय ; कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोसल साइंसेज, ''कीस डीम्ड विश्वविद्यालय'' के संस्थापक तथा कंधमाल लोकसभा के माननीय सांसद हैं महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत। वे सचमुच एक आलोक पुरुष हैं, दिव्यपुरुष हैं, ओडिशा के अमृतपुत्र हैं तथा आदिवासी समुदाय के कल्याण के लिए जीवित मसीहा भी हैं। वे एक सरल, सहज, उदार, परोपकारी, सहृदय तथा आत्मीय स्वभाववाले सज्जन पुरुष हैं। उनका पैतृक गांव कलराबंक उनके भगीरथ प्रयत्नों से एशिया का स्मार्ट विलेज बन चुका है जहां पर ग्रामीणों तथा बच्चों के सेवार्थ सबकुछ उनकी ओर से उपलब्ध है। उनकी स्वर्गीया मां नीलिमारानी सामंत ही उनके असाधारण सफल जीवन की वास्तविक प्रेरणा रहीं। वे आजीवन एक वात्सल्यमी आदर्श माँ रहीं प्रो अच्युत सामंत के लिए। प्रोफेसर अच्युत सामंत सचमुच श्रेष्ठता के आदर्श हैं और विनम्रता और सादगी के जीवंत प्रमाण भी हैं।

प्रो.अच्युत सामंता का पारदर्शी सरल व्यक्तित्व एक ऐसा तीर्थ है जहाँ शब्द मौन हो जाते हैं और भावनाएँ उनके साक्षात दर्शन के लिए हिलोरें लेने लगतीं हैं।

प्रो. अच्युत सामंताः हजार हाथोंवाले आधुनिक देवता हैं जो बिना मांगे जरुरतमंदों को सबकुछ दे देते हैं। यह एक सहज मानव स्वभाव है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके अपने कटु अनुभव सदैव याद रहते हैं लेकिन वह अपने जीवन के सभी सुखद अनुभवों को भूल जाता है। प्रत्येक व्यक्ति सबसे पहले अपना जीवन संवारता है, अधिक से अधिक भौतिक सुखों का उपभोग करना चाहता है लेकिन प्रो अच्युत सामंत राजा जनक की तरह विदेह हैं। वे आज भी भुवनेश्वर, नयापली में दो कमरों वाले किराये के मकान में रहते हैं तथा साग-भात खाकर वे लाखों युवाओं का रोलमॉडल बनकर उनका सर्वांगीण विकास करते हैं। उनके जीवन को संवारते हैं। प्रो अच्युत सामंत एक दिव्य पुरुष तथा आलोक पुरुष हैं। उनकी विनम्रता ,सहजता तथा उनके चेहरे पर सदैव छाई रहनेवाली भगवान बुद्ध-जैसी शांति तथा मुस्कराहट उनके पारदर्शी व्यक्तित्व को प्रेरणादायक बना देतीं हैं। प्रो अच्युत सामंत जब मात्र चार साल के शिशु थे तभी उनके पिताजी अनादि चरण सामंत का एक रेलदुर्घटना में असामयिक निधन हो गया। प्रो अच्युत सामंत के व्यक्तिगत जीवन के आरंभ के लगभग २५ साल उनको अपने आपको स्वावलंबी बनाने में लगे तथा शेष २५ साल आदिवासी समाज तथा लोकसेवा में व्यतीत हुए हैं। ५९ वर्षीय प्रो अच्युत सामंत ने कीट-कीस-कीम्स तथा अपने सभी शैक्षिक संस्था समूहों के माध्यम से अबतक जो कुछ भी किया है वह सचमुच कल्पना से परे है। उन्होंने कीट-कीस-कीम्स का इतना विशाल

तम स्वरुप खडा कर दिया है जो किसी भी एक गरीब युवा के लिए असंभव है। प्रो अच्युत सामंत स्वयं यह मानते हैं कि इस असाधारण उपलब्धियों के लिए वे तो सिर्फ एक निमित्त मात्र हैं , किया तो उनके इष्टदेव जगन्नाथ जी और हनुमान जी ने हैं। प्रो अच्युत सामंत को कामयाबी के इस मुकाम तक पहुंचने में उन्हें पग-पग पर अनेक मुसीबतों, समस्याओं, अपमानों, आलोचनाओं, तिरस्कारों तथा बेवजह के विवादों से गुजराना पड़ा। लेकिन वे लक्ष्य तथा अपने कर्तव्य-पथ पर अबाध गति से चलते रहे। भगवान भोलेनाथ की तरह वे अपने जीवन में आनेवाले सभी हलाहल को पीते रहे। १५नवंबर,२०१९ को वे कर्मवीर अच्युत सामंत के रुप में 'कौन बनेगा करोड़पति'' के हॉट सीट पर बैठे। दुनिया प्रो अच्युत सामंत को जानी। कौन बनेगा करोडपति द्वारा प्रो अच्युत सामंत को मिले मानपत्र में लिखा था- ''समर्पण के प्रतीक, मानवता की बेहतरीन मिसाल, कर्म ही जिसका धर्म है, सेवा ही जिसकी निष्ठा है, उनके जैसे कर्मवीर प्रो अच्युत सामंत को सम्मानित करके 'केबीसी'स्वयं को सम्मानित महसूस कर रही है।

सच तो यह है कि प्रो अच्युत सामंत सभी से प्यार करते हैं और सभी उनको प्यार करते हैं। २०२० की वैश्विक महामारी कोरोना संक्रमण काल में एक तरफ जहां सभी अपने-अपने घरों में एकांतवास कर रहे थे वहीं प्रो अच्युत सामंत ओडिशा सरकार तथा ओडिशा के माननीय मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक जी की प्रेरणा तथा सहयोग से ओडिशा में चार-चार कोविद-१९ अस्पताल खोले। कोरोना योद्धाओं आदि की हर प्रकार के सेवा तथा सहायता की। साधु-महात्माओं से लेकर बौद्ध भिक्षुओं तक उन्होंने अपनी ओर से अनवरत भोजन आदि उपलब्ध कराया। २०२० मार्च से लेकर जुलाई २०२० तक अपने द्वारा स्थापित कीस के कुल तीस हजार से भी अधिक आदिवासी बच्चों को उनके गृहगांव में सूखा राशन से लेकर चूड़ा-चीनी, दाल तथा सूखा फल आदि अपनी ओर से निःशुल्क उपलब्ध कराया। उन आदिवासी बच्चों को उनकी पाठ्य-पुस्तकें तथा अन्यान्य शैक्षिक संसाधान आदि उपलब्ध कराये। अगर कोई उनसे कुछ सिखना चाहे तो उनके जीवन-दर्शनःआर्ट ऑफ गिविंग (जिसकी शुरुआत उन्होंने १७मई,२०१३ से बैंगलुरु से किया)।

''कीस'' आज भारत का प्रथम आदिवासी आवासीय विश्वविद्यालय बन चुका है जबकि कीट पहले से ही डीम्ड विश्वविद्यालय है जहां पर लगभग चालीस हजार से भी अधिक बच्चे उच्च तथा तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। प्रो अच्युत सामंत का कीस आज दुनिया का वास्तविक तीर्थस्थल है जहां पर आदिवासी बच्चे समस्त आवासीय सुविधाओं का निःशुल्क उपभोग करते हुए केजी कक्षा से लेकर पीजी कक्षा तक फ्री पढ़ते हैं तथा प्रो अच्युत सामंत को अपना आदर्श मानकर अपने व्यक्तित्व का सम्यक विकास करते हैं। हिन्दी समालोचक स्वर्गीय रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'श्रद्धा' पाठ में यह बताया है कि किसी के प्रति श्रद्धा के आधार तीन हैं। पहली श्रद्धा व्यक्ति की असाधारण प्रतिभा, दूसरी श्रद्धा व्यक्ति का शील अथवा पारदर्शी चरित्र है तथा तीसरे प्रकार की श्रद्धा व्यक्ति विशेष की साधन-संपन्नता है। ये तीनों प्रकार की श्रद्धा के वास्तविक हकदार हैं प्रो. अच्युत सामंत।प्रो अच्युत सामंत को ''गरीबों की सुनो,वो तुम्हारी सुनेगा,तुम एक पैसा दोगे,वह दस लाख देगा।-हिन्दी फिल्मी गाना बहुत पसंद है और उसे ही वे अपने कर्मयोगी जीवन का आधार बना लिए हैं। कुल लगभग २५ देवालय बनानेवाले प्रो अच्युत सामंत प्रतिदिन स्वयं तीन-तीन घण्टे पूजा-पाठ करते हैं। उनसे मिलनेवालों में साधु-महात्माओं की संख्या अधिक है जो उनको आशीर्वाद देने के लिए भारत के विभिन्न प्रदेशों से आते हैं और अपने आपमें गौरवान्वित महसूस करते हैं। वहीं प्रो अच्युत सामंत कंधमाल लोकसभा सांसद के रुप में अपनी छवि निःस्वार्थ जननायक और लोकनायक के रुप में प्रतिष्ठित कर चुके हैं। प्रो. अच्युत सामंत प्रतिमाह पहली तारीख को श्रीजगन्नाथ धाम पुरी जाकर भगवान जगन्नाथ के दर्शन अवश्य करते हैं। वे प्रतिमाह के अंतिम शनिवार को सिरुली महावीर के दर्शन अवश्य करते हैं। वे अपने गांव स्मार्ट विजेल कलराबंक जाकर अपने द्वारा निर्मित रामदरबार में सभी देवी-देवताओं की पूजा अवश्य करते हैं। वे अपने भुवनेश्वर नयापली स्थित किराये के मकान में प्रत्येक महीने की संक्रांति के दिन सुंदरकाण्ड का अखण्ड संगीतमय पाठ अवश्य कराते हैं।

सच कहा जाय तो प्रो अच्युत सामंत का जीवन सहज रुप में आध्यात्मिक जीवन बन चुका है।उनके द्वारा स्थापित कीट -कीस का पूरा परिवेश भी उनके मार्गदर्शन में पूरी तरह से आध्यात्मिक लगता है। वे पुरी गोवर्द्धन मठ के १४५वें पीठाधीश्वर और पुरी के जगतगुरु शंकराचार्य परमपाद स्वामी निश्चलानन्दजी सरस्वती महाराज के परम शिष्य हैं।प्रो सामंत सच्चे ईश्वरभक्त हैं, गुरुभक्त हैं, ब्राह्मणभक्त हैं तथा वे पूरी तरह से आध्यात्मिक जीवन जीनेवाले संत हैं। वे समाज के उपेक्षित और विकास से वंचित आदिवासी समुदाय के बच्चों के लिए देवदूत हैं। उनकी सोच सदैव सकारात्मक है।प्रो अच्युत सामंत के वास्तविक विदेह जीवन के अवलोकन से ऐसा जान पडता है कि प्रो अच्युत सामंत सचमुच एक महान् शिक्षाविद् तथा निःस्वार्थी राजनेता हैं।

ग्वाटेमाला के दो विश्वविद्यालयों से प्रो अच्युत सामंत को मिली मानद डॉक्टरेट की डिग्री

भुवनेश्वर, १२अगस्तः महान् शिक्षाविद् और प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता प्रो अच्युत सामंत को ग्वाटेमाला के दो विश्वविद्यालयों से मानद डॉक्टरेट की डिग्री से सम्मानित किया गया। प्रो सामंत को ग्वाटेमाला रूरल विश्वविद्यालय और माया काकचिकेल विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की मानद डिग्री से सम्मानित किया गया। यह प्रो अच्युत सामंत की ५४वीं और ५५वीं मानद डॉक्टरेट की डिग्री है। उन्हें यह सम्मान शिक्षा और समाज सेवा, खासकर आदिवासी शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया गया। ग्वाटेमाला के ग्रामीण विश्वविद्यालय के रेक्टर और संस्थापक फिदेल रेस ली ने विश्वविद्यालय के एक विशेष कार्यक्रम में प्रो अच्युत सामंत को ५४वीं डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की। इसी प्रकार प्रो सामंत को ५५वीं मानद डॉक्टरेट की डिग्री माया काकचिकेल विश्वविद्यालय द्वारा एक अनोखे तरीके और एक विशेष स्थानीय आदिवासी परंपरा में प्रदान की गई। चूंकि यह विश्वविद्यालय एक आदिवासी विश्वविद्यालय है, इसलिए उनकी परंपरा के अनुसार, सबसे पहले उनके देवता की पूजा की गई और प्रो सामंत को मानद उपाधि प्रदान करने की अनुमति दी गई। बाद में पूरी तरह से हरे-भरे और प्राकृतिक वातावरण में प्रो सामंत और उन्हें मिलनेवाली मानद डॉक्टरेट की डिग्री ग्वाटेमाला की आदिवासी परंपराओं के अनुसार ४ घंटे तक पूजा की गई। इस मौके पर एक अनोखे अंदाज में जश्न मनाया गया। कार्यक्रम में माया काकचिकेल विश्वविद्यालय के संस्थापक, वहां के नोबेल पुरस्कार विजेता, ग्वाटेमाला में भारतीय राजदूत और विश्वविद्यालय के कर्मचारीगण उपस्थित थे।

कीस में विश्व मानवविज्ञान कांग्रेस का समापन

जनजाती लोगों को खुद पर शोध करना चाहिएः श्री अर्जुन मुंडा

कीस विश्वविद्यालय में आयोजित विश्व विज्ञान कांग्रेस २०२३ संपन्न हुई। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होते हुए, केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्री श्री अर्जुन मुंडा ने विश्व शांति फैलाने में सम्राट अशोक की महत्वपूर्ण भूमिका पर एक शानदार और व्यावहारिक भाषण दिया। उन्होंने कलिंग की ऐतिहासिक भूमि में अशोक के परिवर्तन के साथ-साथ जगन्नाथ पंथ और आदिवासी संस्कृति के बीच जटिल संबंधों पर चर्चा की। उन्होंने कहा, जनजाती लोगों को आत्म-चिंतन में संलग्न होना चाहिए, अपने समुदायों पर शोध करना चाहिए और यह केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से ही संभव होगा। उन्होंने कहा, 'अगर हम उन्हें उचित शिक्षा

देकर सशक्त बना सकें, तो वे अपने मुद्दों को स्वयं हल करने में सक्षम होंगे।'

कीस विश्वविद्यालय में स्वदेशी लोगों के लिए एक विश्व स्तरीय संग्रहालय की स्थापना पर, मंत्री ने कहा, 'जनजातीय मामलों का मंत्रालय इस सहयोगी परियोजना के लिए तैयार है, लेकिन इसे केवल ओडिशा सरकार के औपचारिक प्रस्ताव के बाद ही शुरू किया जा सकता है।' केंद्रीय मंत्री ने कीट-कीस के संस्थापक के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा, 'डॉ. अच्युत सामंत दुनिया के सर्वश्रेष्ठ इंसान हैं और वह वास्तव में एक संवेदनशील व्यक्ति हैं। वह बताते हैं कि कैसे दृढ़ संकल्प, समर्पण, दूरदर्शिता और निस्वार्थ कड़ी मेहनत से सफल ता हासिल की जा सकती है। हममें से हर किसी को उनसे यह सीखना चाहिए।'' मानवविज्ञान सीखने पर उन्होंने कहा, 'हमें जनजाती लोगों के साथ बातचीत करनी होगी क्योंकि वे पहले से ही प्रकृति को समझते हैं। प्रकृति माँ के बिना हमारा अस्तित्व भी खतरे में है।''

अपने संबोधन में, कीट-कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने कहा, 'विश्व मानव विज्ञान कांग्रेस के लिए, कीस मानव विज्ञान पर शोध के लिए आदर्श स्थान और सर्वोत्तम स्थान है।' उन्होंने यूरोप में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का जिक्र किया, जहां एक प्रसिद्ध जापानी मानवविज्ञानी ने कीस को 'दुनिया की सबसे बड़ी मानवविज्ञान प्रयोगशाला' कहा था। कीस विश्वविद्यालय के कुलपति और यूनाइटेड इंडिया एंथ्रोपोलॉजी फोरम (यूआईएएफ) अध्यक्ष प्रोफेसर दीपक कुमार बेहरा, ने कहा, 'कीस विश्वविद्यालय ने यूआईएएफ, दिल्ली विश्वविद्यालय, उत्कल विश्वविद्यालय और संबल पुर विश्वविद्यालय के सहयोग से डब्ल्यूएसी २०२३ का आयोजन किया। पाँच दिवसीय भव्य आयोजन में ३५० सत्र, २० गोलमेज बैठकें, २० कार्यशालाएँ और १२० पैनल चर्चाएँ हुईं। दुनिया भर के ५१ देशों के १,१०० से अधिक मानवविज्ञानी शामिल हुए और १,२०० शोध पत्र प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि डब्ल्यूएसी से पहले ८ प्री-कांग्रेस सत्र हुए थे और डब्ल्यूएसी के बाद १० सत्र होंगे।

दक्षिण अफ्रीका के क्वाज़ुलु-नटाल विश्वविद्यालय में मानव विज्ञान के प्रोफेसर आनंद सिंह ने जनजाती छात्रों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करने में डॉ. सामंता के नेतृत्व की सराहना की। डब्ल्यूएसी के अध्यक्ष और दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पी. सी. जोशी ने कहा, 'यह विश्व कांग्रेस शायद अब तक की सबसे सुलभ और किफायती मानवविज्ञान कांग्रेस थी। यह विषय के सभी पहलुओं से निपटता है और कीस ऐसा करने के लिए सबसे अच्छी जगह है। जनजातीय सलाहकार परिषद, प्रैक्टिस के प्रोफेसर जैसी पहल ने कीस को अद्वितीय बना दिया है।''

ब्रिटेन के डरहम विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग की ब्रिटिश अकादमी की फेलो प्रोफेसर चार्लोट एन रॉ बर्ट्स ने कांग्रेस की आश्चर्यजनक सफलता की प्रशंसा की। सतत विरासत विकास पर यूनेस्को चेयर और ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अमरेश्वर गल्ला का मानना था कि कांग्रेस जनजाती सशक्तिकरण में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित होगी, जिससे वे सम्मानजनक जीवन जीने में सक्षम होंगे। उन्होंने कीस को जनजाती संग्रहालयों के प्रबंधन के लिए योग्य पेशेवरों को तैयार करने के लिए व्यावहारिक संग्रहालय मानवविज्ञान पर एक अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू करने पर विचार करने की सिफारिश की। यूआईएएफ के महासचिव प्रो. एस. ग्रेगरी द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कांग्रेस का समापन हुआ।

कीट- कीस में राज्य स्तरीय ७७वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

भुवनेश्वर, १४ अगस्त २०२३ : कीट-कीस, कीम्स और कीट इंटरनेशनल स्कूल में मंगलवार को राज्य स्तरीय तरीके से ७७वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। मुख्य अतिथि के रूप में पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति संदीप कुमार ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। छात्रों को संबोधित करते हुए न्यायमूर्ति कुमार ने कहा कि समाज के कमजोर वर्गों और आदिवासी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके उनका विकास और देश का विकास किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि कीट और कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत के अच्छे काम की बदौलत आज कीस दुनिया भर में लोकप्रिय हो चुका है। इस मौके पर संस्थापक डॉ. सामंत ने कहा कि भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्र के नाम अपने भाषण में शिक्षा के महत्त्व पर जोर दिया था,

हम कीट और कीस के माध्यम से पिछले ३० वर्षों से ऐसा हम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर छात्र अच्छी शिक्षा प्राप्त करें तो वे स्वतंत्रता का मूल्य समझ सकते हैं।

कीट -कीस के सचिव आरएन दास, कीस के कुलपति प्रोफेसर दीपक बेहरा, कुलसचिव डॉ. प्रशांत कुमार राउतराय एवं अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ता अवसर पर उपस्थित थे। इस अवसर पर कीस छात्रों द्वारा एक प्रभावशाली परेड के साथ एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इसी प्रकार, कीट विश्वविद्यालय में संस्थापक डॉ. सामंत ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस मौके पर कीट विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सस्मितारानी सामंत, कुलसचिव प्रोफेसर शरणजीत सिंह, कुलसचिव डॉ. ज्ञानरंजन मोहंती सहित बड़ी संख्या में संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे। इसी प्रकार कीम्स मैं कुलपति डॉ. सीबीके मोहंती ने और कीट इंटरनेशनल स्कूल मैं चेयरपर्सन डॉ. मोनालिसा बल ने ध्वजारोहण किया।

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय का १९वां वार्षिक दीक्षांत समारोह आयोजित

दृढ़ संकल्प के साथ मानव कल्याण हेतु ज्ञान का प्रयोग करना चाहिए : प्रो गणेशी लाल

भुवनेश्वर, १९अगस्त : कीट डीम्ड विश्वविद्यालय का १९वां वार्षिक दीक्षांत समारोह विश्वविद्यालय के इनडोर स्टेडियम में एक भव्य समारोह के रुप में आयोजित हुआ। शनिवार को आयोजित इस दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि के रुप में ओडिशा के मान्यवर राज्यपाल प्रो गणेशी लाल ने योगदान दिया। कुल लगभग ६६३८ विद्यार्थियों को स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी की डिग्री प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रोफेसर गणेश लाल ने अपने वक्तव्य वक्तव्य में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि ज्ञान का उपयोग दृढ़ संकल्प के साथ मानव कल्याण के लिए करना चाहिए। उन्होंने यह कहा कि भगवान ने हमें कई अच्छे गुणों के साथ इस धरती पर भेजा है। हमें इन सभी अच्छे गुणों को मानव जाति के कल्याण में प्रयोग करने की आवश्यकता है। इस मौके पर कीट विश्वविद्यालय के कुलाधिपति अशोक कुमार परीजा ने कहा कि शिक्षा बेहतर भविष्य के लिए पासपोर्ट की तरह है। ग्रेजुएशन केवल डिग्री प्राप्त करने के बारे में नहीं है, यह छात्रों के बीच होने वाले गुणात्मक परिवर्तन के बारे में भी है। आगे आप युवा अपने सपनों को साकार करने जा रहे हैं। कीट विश्वविद्यालय के प्रोचांसलर सुब्रत आचार्य ने छात्रों से कहा कि इस विश्वविद्यालय के स्नातकों की एक अद्वितीय सामाजिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि छात्रों की भागीदारी जरूरी है ताकि वे अपने-अपने क्षेत्र में मिसाल कायम कर सकें। इस अवसर पर भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष एवं परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव प्रो. अजीत कुमार मोहंती, स्वस्ति ग्रुप होटल्स के अध्यक्ष जितेंद्र कुमार मोहंती और टेक महिंद्रा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक चंद्र प्रकाश गुरनानी को डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

कीट विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सस्मिता सामंत ने विश्वविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कीट विश्वविद्यालय की विभिन्न उल्लेखनीय उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर विदिता सामंत को विश्वविद्यालय के समग्र प्रदर्शन के लिए संस्थापक स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया, जबकि अनन्या त्रिपाठी को सर्वश्रेष्ठ पीएचडी छात्र, स्वाति सुदेस्ता पंडा को सर्वश्रेष्ठ स्नातक छात्र और निर्मल कुमार पंडित को सर्वश्रेष्ठ स्नातक के रूप में संस्थापक स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इस मौके पर संस्थापक अच्युत सामंत, उपाध्यक्ष उमापद बोस, संपादक आर एन दाश, कीट विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शरणजीत सिंह, किम्स के कुलपति प्रो. सीबीके मोहंती प्रमुख रूप से उपस्थित थे, जबकि कीट विश्वविद्यालय के चांसलर प्रो. ज्ञान रंजन मोहंती ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

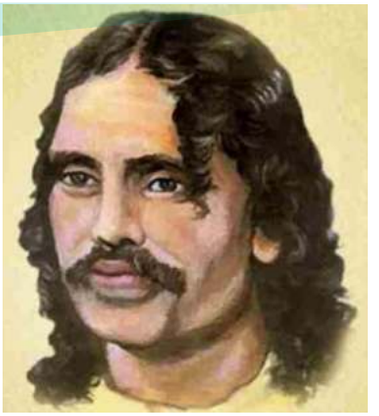

भारतेन्दु हरिश्चन्द्रः

खडीबोली हिन्दी के जन्मदाता जिन्हें खडीबोली हिन्दी-लेखन का दिव्य आशीर्वाद दिया स्वयं महाप्रभु जगन्नाथ ने

भारतेन्दु हरिश्चंद्र का जन्म ०९सितंबर, १८५० को बनारस, उत्तरप्रदेश में हुआ। वे खडीबोली हिन्दी के जन्मदाता थे जिन्हें खडीबोली हिन्दी में लेखन का दिव्य आशीर्वाद स्वयं महाप्रभु जगन्नाथ ने दिया। वे जब मात्र पांच साल के थे तब सबसे पहले उनकी माताजी की मृत्यु हो गई और जब वे मात्र दस साल के थे तभी उनके पिताजी चल बसे। उनका बाल्यकाल उनके माता-पिता के वात्सल्य तथा प्यार से वंचित रहा। उनकी विमाता ने उनको खूब सताया। उनके पिता गोपाल चंद्र भी एक कवि थे। पिता की प्रेरणा से ही वे लेखन क्षेत्र में आगे बढ़े। बहुत कम उम्र में ही वे अपने माता-पिता को खो दिये लेकिन उनके जीवन की सबसे रोचक घटना यह रही कि मात्र १५ साल की उम्र में वे अपने माता-पिता के साथ एकबार जगन्नाथ पुरी भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए आये। भगवान जगन्नाथ के दर्शन किये और उन्हीं के दिव्य आशीष ने खडी बोली हिन्दी में लेखन का उन्होंने श्रीगणेश किया।

जगत के नाथ से उन्होंने हिंदी गद्य को एक नई शैली प्रदान की जो खडीबोली हिन्दी के रुप में विश्वविख्यात है। उन्हें हिन्दी साहित्य का पितामह तथा खडी बोली हिन्दी का जन्मदाता कहा जाता है। उनका मूल नाम 'हरिश्चन्द्र' था और 'भारतेन्दु' उनकी उपाधि थी। हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में उन्होंने अपनी असाधारण लेखन प्रतिभा का सदुपयोग किया। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिंदी में नाटकों का प्रारम्भ उन्होंने ही किया। ऐसी बात नहीं है कि उनके पूर्व हिन्दी में नाटक-लेखन नहीं था परन्तु भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ही हिंदी नाटक-लेखन की नींव को और अधिक सुदृढ़ बनाया। वे आजीवन एक सफल कवि, व्यंग्यकार, नाटककार, पत्रकार तथा साहित्यकार रहे। वे मात्र ३४ वर्ष की उम्र में ही खडीबोली हिन्दी का विशाल साहित्य रचकर अमर हो गये। उनकी वैश्विक चेतना भी प्रखर थी। उन्हें अच्छी तरह पता था कि विश्व के कौन से देश कैसे और कितनी उन्नति कर रहे हैं। इसलिए उन्होंने १८८४ में उत्तरप्रदेश के बलिया के दादरी मेले में 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है' पर एक सारगर्भित तथा ओजस्वी भाषण दिया जिसमें उन्होने लोगों से कुरीतियों और अंधविश्वासों को त्यागकर अच्छी-से-अच्छी शिक्षा प्राप्त करने, उद्योग-धंधों को विकसित करने, आपसी सहयोग एवं एकता को सतत बढाने की अपील करते हुए जीवन के सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनने का आह्वान किया।देश की गरीबी, पराधीनता, अंग्रेजी शासकों के अमानवीय व्यवहार तथा शोषण का चित्रण करना ही वे अपने खडी बोली हिन्दी में साहित्य रचना का लक्ष्य बनाये। हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में भी उन्होंने अपनी असाधारण लेखन प्रतिभा का भरपूर उपयोग किया।वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिंदी पत्रकारिता, नाटक और काव्य के क्षेत्र में उनका बहुमूल्य योगदान रहा। वे एक संवेदनशील साहित्यकार थे। उनका सबसे लोकप्रिय नाटक सत्य हरिश्चन्द नाटक आज भी सत्यमार्ग पर आजीवन चलने का संदेश देता है।उनका नाटक भारत दुर्दशा उन दिनों के भारत की वास्तविक झलक है। उनकी रचनाओं में प्राचीन तथा नवीन का अनोखा सामंजस्य है। एक उत्कृष्ट कवि, सशक्त व्यंग्यकार, सफल नाटककार, जागरूक पत्रकार तथा ओजस्वी गद्यकार का असामयिक निधन ६जनवरी,१८८५ हो गया।अपने साहित्यिक योगदानों के बदौलत १८५७ से लेकर १९०० तक को भारतेन्दु युग के नाम से जाना जाता है।उनकी बढती लोकप्रियता के प्रभावित होकर उन्हें बनारस के विद्वानों ने १८८० में उन्हें भारतेन्दु की उपाधि प्रदान की।वे आज भी हमारे बीच हिन्दी खडीबोली के जन्मदाता के रुप में अमर हैं।

१५ साल की उम्र में वे अपने माता-पिता के साथ एकबार जगन्नाथ पुरी भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए आये। भगवान जगन्नाथ के दर्शन किये और उन्हीं के दिव्य आशीष ने खडी बोली हिन्दी में लेखन का उन्होंने श्रीगणेश किया। जगत के नाथ से उन्होंने हिंदी गद्य को एक नई शैली प्रदान की जो खडीबोली हिन्दी के रुप में विश्वविख्यात है। उन्हें हिन्दी साहित्य का पितामह तथा खडी बोली हिन्दी का जन्मदाता कहा जाता है। उनका मूल नाम 'हरिश्चन्द्र' था और 'भारतेन्दु' उनकी उपाधि थी। हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में उन्होंने अपनी असाधारण लेखन प्रतिभा का सदुपयोग किया। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिंदी में नाटकों का प्रारम्भ उन्होंने ही किया। ऐसी बात नहीं है कि उनके पूर्व हिन्दी में नाटक-लेखन नहीं था परन्तु भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ही हिंदी नाटक-लेखन की नींव को और अधिक सुदृढ़ बनाया। वे आजीवन एक सफल कवि, व्यंग्यकार, नाटककार, पत्रकार तथा साहित्यकार रहे। वे मात्र ३४ वर्ष की उम्र में ही खडीबोली हिन्दी का विशाल साहित्य रचकर अमर हो गये।

-अशोक पाण्डेय

बीजू पटनायक खेल पुरस्कार मिला कीस के छात्रों को

छात्रों ने दिया मुख्यमंत्री को धन्यवाद

भुवनेश्वर, ४/९: इस वर्ष विभिन्न खेलों में कीस के ५५ छात्रों ने बीजू पटनायक खेल पुरस्कार जीते हैं। इस मौके पर कीस के छात्रों ने मुख्यमंत्री नवीन पटनायक का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कीट और कीस के संस्थापक प्रो अच्युत सामंत ने खिलाड़ियों से जुड़ने के अवसर पर कहा कि, मुख्यमंत्री नवीन पटनायक हमेशा ओडिशा में खेल और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते रहे हैं। यही कारण है कि आज ओडिशा से कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी निकले हैं। कीट और कीस के कई छात्रों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ओडिशा का नाम रोशन किया है। कीस के खिलाड़ियों को हमेशा प्रोत्साहित करने के लिए हम कीट और कीस के परिवार मुख्यमंत्री को धन्यवाद और आभार व्यक्त करना चाहते हैं। प्रो अच्युत सामंत ने कहा कि खिलाड़ियों को बढ़ावा देने के लिए सर्वाधिक राशि उपलब्ध कराने वाला ओडिशा देश का एकमात्र राज्य है। उन्होंने छात्रों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सफलता हांसिल करने के लिए दृढ़ संकल्प और एकाग्रता के साथ खेल जारी रखने की सलाह दी।

इस साल ओडिशा से कुल ३८८ लोगों को बीजू पटनायक खेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है जबकि कीस से केवल ५५ छात्र हैं इसमें शामिल हैं। अकेले रगबी में ४१ खिलाड़ियों ने बीजू पटनायक खेल पुरस्कार जीता है। इसके अलावा, कीट और कीस के कई छात्रों को इस वर्ष राष्ट्रीय और एशियाई खेल प्रतियोगिताओं के लिए चुना गया है।

स्थानीय रवींद्र मण्डप में चिन्ता-व-चेतना ओडिशी विकास संस्था द्वारा आयोजित तीन दिवसीय ४६वां वर्षा महोत्सव २७ अगस्त को शाम में वर्षा गीतप्रस्तुति के साथ समाप्त हो गई जिसमेंसंगीता गोसाईं,तेजस्विनी राउत,राजलक्ष्मी पात्र,स्मरिणका पटनायक,विद्युत प्रभा दास आदि की वर्षा संगीत प्रस्तुति यादगार रही। नुपूर के कलाकारों, रघुराजपुर के गोटपुअ नृत्य के कलाकारों,संगीत गुरुओं में लक्ष्मीकांत पालित, शरत पाणि, समीर रंजन आदि को साथ-साथ चिन्मय रथ, बंदीश पालित, नीमाकांत राउत, देवाशीष महापात्र, वरदा, बबलू, अविनाश दास, आलोक , सीमा, किरन, समीर रंजन आदि को सम्मानित किया गया।

मेघ मल्हार उत्सवदिनांक २६ अगस्त २०२३ शनिवार को भुवनेश्वर शाखा महिला प्रकोष्ठ ने तीज एवं सिंधारा उत्सव का भव्य आयोजन किया। इस अवसर पर सभी विप्र समाज स परिवार उपस्थित रहे। संस्कृतिक कार्यक्रम के साथ ही हाईटी एवं रात्रि भोजन का भी प्रबंध था। महिलाओं के लिए क्विज एवं बच्चों के लिए गेम्स का भी आयोजन किया गया था। सभी बहनों ने सुंदर-सुंदर नृत्य एवं गीत प्रस्तुत किए। छोटे-छोटे बच्चों का प्रयास भी सराहनीय रहा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि रही श्रीमती मोनिका शर्मा राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, विप्र फाउंडेशन। विशेष अतिथि के तौर पर उपस्थित रहीं, विप्र फाउंडेशन महिला प्रकोष्ठ की प्रांतीय अध्यक्ष श्रीमती पूनम शर्मा, उपाध्यक्ष श्रीमती अलका शर्मा, कोषाध्यक्ष श्रीमती रेनू शर्मा, सचिव श्रीमती सुधा शर्मा, जैन महिला समाज की अध्यक्ष श्रीमती प्रेमलता सेठिया, अध्यक्ष मारवाड़ी महिला समिति की पी .आर. ओ.श्रीमती कृष्णा अग्रवाल, माहेश्वरी महिला समिति की अध्यक्ष श्रीमती मंजू पेरीवाल , प्रांतीय महासचिव श्री अशोक जी चौबे ,उड़ीसा क्रांति उड़ीसा के संस्थापक श्री नंदकिशोर जी जोशी ,श्री मोहनलाल जी उपाध्याय कटक से। भुवनेश्वर शाखा के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकारी सदस्य के साथ ही विप्र फाउंडेशन एवं परशुराम मित्र मंडल के सभी सदस्य भी इस आयोजन का अहम हिस्सा रहे, इनमें प्रमुख रूप से उपस्थित रहे परशुराम मित्र मंडल के अध्यक्ष श्रीमान आनंद जी पुरोहित, विप्र फाउंडेशन के पूर्व अध्यक्ष श्री रमेश जी शर्मा एवं विप्र फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ जी शर्मा, उपाध्यक्ष राधेश्यामजी शर्मा विप्र फाउंडेशन के कोषाध्यक्ष श्री पशुपति शर्मा। प्रांतीय अध्यक्ष श्रीमती पूनम शर्मा जी द्वारा दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया तत्पश्चात राष्ट्रगान एवं विप्र प्रार्थना का नृत्य के साथ गान किया गया।

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-७५

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 1,000/- का नकद इनाम!

प्रश्न १. स्टैच्यू ऑफ यूनिटी कहां है?

प्रश्न २. पंडित जवाहर लाल नेहरू को बच्चे क्या कहते थे?

प्रश्न ३. दिल्ली से पहले भारत की राजधानी कहां थी?

प्रश्न ४. भारत की खोज किसने की?

प्रश्न ५. टेलीफोन का अविष्कार किसने किया था?

प्रश्न ६. भारत की सबसे लंबी नदी कौन हैं?

प्रश्न ७. अंग्रेजी में कितने अल्फाबेट होते हैं?

प्रश्न ८. किस जानवर को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता हैं?

प्रश्न ९ : चिड़िया कहां रहती है?

प्रश्न १० : जल की रानी कौन है?

प्रश्न ११ : हमें स्वाद किससे पता चलता है?

प्रश्न १२ : भारतीय सेना के तीन अंग कौन-कौन से हैं?

प्रश्न १३ : हमारे राष्ट्रपिता कौन हैं?

प्रश्न १४ : हमारे प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?

प्रश्न १५ : हमारा राष्ट्रगान क्या हैं?

प्रश्न १६ : हमारा राष्ट्रीय पशु कौन है?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः.....

पूरा पताः .....

.....

.....

.....

फोन नं.: .....

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

लघु-कथा

नसीब का लिखा...

किसी एक गांव में बहुत ज्ञानी पंडित रहा करता था। पंडित आजू बाजू के सारे ही गावों मैं बहुत प्रख्यात था और इसी वजह से धनवान भी। पंडित का परिवार ज्यादा बड़ा नहीं था। पंडित अपनी पत्नी के साथ अपने बहुत बड़े घर में अकेला रहता था क्योंकि पंडित को कोई बेटा था नहीं और एक बेटी थी जिसका विवाह पास के गांव वाले एक श्रीमंत लड़के से हो चुका था।

पंडित ने शादी से पहले अपने होनेवाले दामाद की अच्छे से जांच पड़ताल की थी और अपनी बेटी का भविष्य भी ठीक से पढ़ा था तब जाकर उसने बेटी की शादी की थी। लेकिन चंद सालो में ही पंडित का दामाद बुरी आदतों के चंगुल में फंस गया। जुआ और शराब की बुरी लत ने उन्हें सड़क पर लाकर रख दिया था।

अपने बेटी की ऐसी दुर्दशा देखकर पंडित की पत्नी काफी दुखी होती थी और अक्सर पंडित को कहा करती थी तुम जाकर उनकी मदद कर आओ। पंडित हमेशा अपनी बीवी को यह कहकर उनकी मदद करने के लिए मना कर देता था कि अभी कुछ समय तक उनका बुरा वक्त चलना है। हम चाहे कितनी ही कोशिश कर ले जो उनके नसीब में नहीं है वह उन्हें नहीं मिल पाएगा।

पंडित की ऐसी बातों से उसकी पत्नी काफी दुखी हो जाया करती थी और मन ही मन सोचती थी कि,' कैसा स्वार्थी पिता है अपनी बेटी को इतने कष्टों में देखकर भी उसकी मदद करने के लिए मना करता है। आखिर भगवान ने जो इतना सारा धन धान्य दिया है उसका क्या करेंगे? हमें कोई और औलाद भी तो है नहीं ले देकर एक यही बेटी है और उसके लिए भी कुछ नहीं करेंगे तो किसके लिए करेंगे?'

पंडित ऐसा नहीं सोचता था। ऐसा नहीं है कि पंडित अपनी पुत्री से प्रेम नहीं करता था लेकिन उसने अपनी पुत्री की कुंडली इतने अच्छे से पढ़ी थी और वह यह पहले से ही जानता था की वह चाहे किसी भी लड़के से शादी करती लेकिन उसके जीवन में यह समय आने वाला ही था और बिना इसे भुगते उसको छुटकारा नहीं मिलने वाला था। एक दिन खाने पीने के लिए भी मोहताज हो चुके पंडित के बेटी और दामाद उसके घर पर आए। पंडित ने और उसकी बीवी ने दोनों का खूब आदर सत्कार किया और खूब अच्छा खाना खिलाया। बेटी और दामाद की पंडित से सहायता मांगने की हिम्मत ना हुई इसलिए वह बिना बोले ही वापस अपने घर को लौटने लगे।

लेकिन मां तो मां होती है पंडिताइन से रहा नहीं गया और बिना पंडित की इजाजत के उसने चोरी छुपे बूंदी के लड्डू बनाकर उसमें सोने के सिक्के रख दिए और बेटी और दामाद को दे दिए ताकि बेटी और दामाद की कुछ आर्थिक सहायता हो सके। पंडिताइन यह भी जान गई थी कि बेटी और दामाद शर्म के मारे उनसे मदद नहीं मांग रहे थे इसलिए उसने बेटी और दामाद को भी लड्डुओं में छिपे सिक्कों के बारे में कुछ नहीं बताया। 'जाहिर सी बात है कि जब वो लोग घर पर जाकर लड्डू खाएंगे तो उन्हें उसमें सोने के सिक्के मिल जाएंगे इस तरह बिना उनके मांगे ही उन तक मदद पहुंच जाएगी' सोच कर पंडिताइन मन ही मन अपने बेटी की मदद करने के लिए खुश होने लगी।

पंडित के दामाद और बेटी उन दोनों का आशीर्वाद लेकर अपने घर के तरफ रवाना हो गए। उन दिनों गाड़ियां तो होती नहीं थी घोड़ा गाड़ी या बेल गाड़ियां चलती थी। पैसे ना होते तो और चीजों की लेनदेन से भी व्यवहार होता था। बेटी और दामाद का गांव पंडित के घर से कोसों दूर था, फिर भी पैसों की कमी के चलते वह चलकर अपने गांव की तरफ निकल पड़े। थोड़े दूर ही चले थे कि पंडित की बेटी के पैर में मोच आ गई और अब उसको चलना भी मुश्किल हो गया।

पंडित के दामाद ने जब देखा कि उसकी बीवी अब बिल्कुल चलने में सक्षम नहीं है तो उसने एक टांगा अपने घर तक किराए पर ले लिया। दोनों पति पत्नी टांगे में बैठकर घर तक पहुंच गए लेकिन टांगे वाले को देने के लिए उनके पास पैसे थे नहीं इसलिए पंडिताईनने जो बूंदी के लड्डू उन्हे दिए थे वही किराया के तौर पर उस टांगे वाले को दे दिए।

टांगेवाला बूंदी के लड्डू को लेकर वहां से चला गया। टांगेवाला अपने घर की तरफ जा रहा था तब उसे एक हलवाई की दुकान दिखी। उसने सोचा कि थोड़े से बूंदी के लड्डूओ से मेरे घर के लोगों का पेट थोड़ी भरनेवाला है! इससे अच्छा मैं इन बूंदी के लड्डूओ को बेचकर उनसे कुछ चावल खरीद लेता हूं। टांगे वाले ने बूंदी के लड्डू हलवाई को बेच दिए।जिस गांव में वह हलवाई रहता था उसी गांव में एक आदमी ने अपने घर पर पूजा रखी थी और उसी पंडित को उस पूजा के लिए बुलवाया था। पूजा में लगने वाले प्रसाद के लिए उस आदमी ने उसी हलवाई से बूंदी के लड्डू लिए जहां पर उस टांगे वाल ने बेचे थे। हलवाई ने भी उस आदमी को टांगेवाले से खरीदे हुए लड्डू ही पहले दिए ताकि वह खराब ना हो जाए क्योंकि वह नहीं जानता था यह लड्डू कब बने हैं।

पूजा खत्म होने पर दक्षिणा और बूंदी के लड्डू लेकर जब पंडित अपने घर आया और खाना खाने बैठा तो प्रसाद में लाए बूंदी के लड्डू खाते वक्त लड्डू से सोने का सिक्का निकला! इस घटना को देखकर पंडिताइन की आंखों से आंसू बहने लगे। पंडित ने जब पंडिताइन से उसके रोने का कारण पूछा तो पंडिताइन ने पंडित को सब कुछ बताया और पंडित से उनकी बातों पर भरोसा ना करने के लिए माफी मांगी।

पंडित ने पंडिताइन के आंसू पोछे और कहा कि तुम्हारी तरह मैं भी हमारी बेटी को बहुत प्रेम करता हूं। लेकिन अगर हम उसकी अब मदद करते हैं तो दामाद हमसे हमेशा ऐसे ही मदद की अपेक्षा रखेगा और अपनी बुरी आदतों को कभी नहीं छोड़ेगा। पंडिताइन भी अब पंडित की बातों से सहमत हो गई। दो-तीन महीने बीत गए। पंडित के दामाद और बेटी फिर से एक बार उसके घर आए और इस बार उनकी परिस्थिति पहले से बेहतर थी क्योंकि पिछली बार खाली हाथ जाने के बाद दामाद ने नया काम शुरू किया था और अपनी सारी बुरी आदतें भी छोड़ दी थी।

-Pravin Kate

पूजा खत्म होने पर दक्षिणा और बूंदी के लड्डू लेकर जब पंडित अपने घर आया और खाना खाने बैठा तो प्रसाद में लाए बूंदी के लड्डू खाते वक्त लड्डू से सोने का सिक्का निकला! इस घटना को देखकर पंडिताइन की आंखों से आंसू बहने लगे। पंडित ने जब पंडिताइन से उसके रोने का कारण पूछा तो पंडिताइन ने पंडित को सब कुछ बताया और पंडित से उनकी बातों पर भरोसा ना करने के लिए माफी मांगी। पंडित ने पंडिताइन के आंसू पोछे और कहा कि तुम्हारी तरह मैं भी हमारी बेटी को बहुत प्रेम करता हूं। लेकिन अगर हम उसकी अब मदद करते हैं तो दामाद हमसे हमेशा ऐसे ही मदद की अपेक्षा रखेगा और अपनी बुरी आदतों को कभी नहीं छोड़ेगा। पंडिताइन भी अब पंडित की बातों से सहमत हो गई।

बेटी पढ़ाओ

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

पतझड़ की वह रात

सांझ घनी हो गई और उसके साथ ही खाकी चिपचिपाता और ठंडा कोहरा भी घना होता चला गया। लहरें पहले से कहीं ज़्यादा शोर के साथ सरसरा रही थीं। उन पेटियों के ऊपर पानी की धरें ज़्यादा ज़ोर के साथ पड़ने लगी थी। और कहीं दूर पर पहरेवाले ने अपना पहरा भी शुरू कर दिया था; बहकती हुई-सी उसकी आवाज, सुनाई पड़ जाती थी, कभी-कभी। इसकी तली भी है या नहीं?' मेरी सहायिका ने कोमल स्वर में पूछा। मेरी समझ में नहीं आया कि वह किसके विषय में पूछ रही है, इसलिए मैं चुप रहा। 'मैं पूछती हूं कि इस पेटी की गहराई की कोई थाह भी है? अगर है, तो हम उसे पाने की बेकार कोशिश कर रहे हैं। हम इस तरह से खाई खोद रहे हैं, जिसकी तह पर हमें खाली तख्तों के सिवाय शायद और कुछ न मिले। फिर हम उन्हें इतने नीचे घुसकर हटाएंगे कैसे? इससे तो अच्छा यही है कि ताला तोड़ दो! ताला बिल्कुल रही है।'

बिलकुल नया शहर।

जान न पहचान।

न खाने के लिए जेब में पैसा और न रात बिताने के लिए साढ़े तीन हाथ जगह ही! पतझड़ के मौसम में ऐसी . थी एक दिन मेरी हालत!

जिन-जिन कपड़ों के बगैर काम चल सकता था, सो मैंने सब एक-एक कर के पहले तीन-चार दिन में बेच डाले और फिर शहर के उस भाग की ओर चला, जहां जहाज़ों के खड़े होने का अड्डा था।

इस स्थान का नाम था ईस्ते।

जहाज़ों के चलने के लिए अनुकूल मौसम में इस्ते मज़दूरों के कठोर जीवन के कोलाहल से जैसे उफूनता रहता है, परंतु वह अब सुनसान और वीरान था, क्योंकि अक्टूबर का महीना समाप्त हो चला था।

गीली रेतीली भूमि पर मेरे पैर मुझे किसी तरह घसीटे ही लिए चले जा रहे थे, और उसे क्रेद-कुरेद कर कैसे भी खाने के टुकड़े की तलाश में लगे थे। और मैं भरपेट भोजन पा जाने की आशा में सूने मकानों और गोदामों की खाक़ छान रहा था।

आज की सभ्य दुनिया में हमारे पेट की भूख की अपेक्षा दिमाग की भूख आसानी से मिट जाती है। आप सड़कों पर चक्कर काटते हैं, बड़ी बड़ी आलीशान इमारतें देखते हैं, जो बाहर से तो खूबसूरत हैं ही, और अंदर से भी होंगी ही; उन्हें देखकर आपके दिल में भवन-निर्माण-कला, सफाई तथा आरोग्य, और अक़्ल मंदी से भरे हुए अनेक विषयों पर बड़े-बड़े ख्यालात उठते है। निहायत सफाई और सलीके से पहने-ओढ़े शरीफ़ लोग आप को राह चलते दिखाई देते हैं, जो बड़ी होशियारी से आपकी अपनी असली बुरी हालत को देखकर भी नहीं देखते, और शाइस्ता तौर से आपसे नजर बचाकर चल देते हैं! खैर जो कुछ भी हो, लेकिन भूखे आदमी का दिमाग पेट-भरे आदमी के दिमाग से कहीं ज्यादा दुरुस्त और ताकतवर होता है और ऐसी हालत में भी आप नंगे-भूखों के हलात में कुछ काम की ज़रूरी बातें सोच शाम बढ़ती चली आ रही थी, और पानी तो बरस ही रहा था। उत्तरी हवा तेज़ी से चल रही थी।

खाली दूकानों और डुटियल झोपड़ों में से वह सनसना कर निकल जाती, और सराय की पुती हुई खिड़कियों से जा टकराती। रेतीले तट पर शोर करके छपछपाती हुई तरंगें उत्तरी हवा के इस भयानक झोंके के कोड़े की मार खाकर जैसे बिलबिलाकर फेन उगल ने लगतीं! उन तरंगों के ऊंचे उठे हुए सफेद हिस्से एक दूसरे के पीछे भागते हुए धुंध की तरफ चले जा रहे थे, और आपस में भिड़-भिड़ जाते थे! मालूम होता था कि कहीं नदी को सर्दी आने का पता लग गया था, और इस डर से कि बर्फ की सर्द और क्रूर बेड़ियां यहीं आज ही रात में उसे बांध न लें, वह बेतहाशा भागी चली जा रही थी। आसमान अंधेरा था।

बादल जम गए थे।

धड़ाधड़ बरसने वाले पानी की एक बूंद भी नहीं दिखाई देती थीं ।

एक उल्टी हुई डोंगी, जो अंधड़ द्वारा खूब झकझोरे गए बेंत की जड़ से बंधी हुई थी, मेरे चारों तरफ फैली हुई प्रकृति की इस मौत की-सी भयानकता को और भी बढ़ा रही थी। यह उल्टी हुई डोंगी और झकझोरे गए पेड़-सारा का सारा दृश्य वीरान, और सुनसान था-मौत की तरह मरा हुआ और डरावना; और आसमान के आंसू रोके न रुकते थे...सब कुछ ऊजड़ और म्लान...निर्जीव, केवल मैं ही जीता था-लेकिन मेरे लिए भी सर्दी मौत बनकर निगलने के लिए खड़ी थी!

तब मैं अठारह बरस का था-कितनी प्यारी अवस्था होती है यह! और उस ठंडी और गीली रेती पर मैं चलता ही चला गया। कंपकंपी ले मेरे दांत बज रहे थे, जैसे भूख और ठिठुरन का स्वागत कर रहे हों। मैं कुछ खाने की तलाश में बड़ी सतर्कता के साथ एक खाली पेटी को खखोड़ था कि यकायक उसके पीछे मुझे पानी से तरबतर एक औरत अपने झुकते हुए कंधों को मजबूती और मोह से पकड़े हुए ज़मीन से चिपटती दिखाई पड़ी। मैं जाकर उसके पीछे खड़ा हो गया और देखने लगा कि वह कर क्या रही है। उन पेटियों के नीचे रेती के नीचे रेती में वह अपने हाथों से ही गड्ढा खोद रही थी।

मैं उसके और नजदीक सरक आया और बोला-

'यह क्या कर रही हो?'

वह चीख पड़ी और हड़बड़ाकर खड़ी हो गई!

भय से फटी हुई अपनी बड़ी-बड़ी भूरी आंखों से वह मुझे देख रही थी और मैं अपने सम्मुख देख रहा था एक समवयस्क सुंदर लड़की, किंतु उसके मुखपर तीन नीले दाग थे, जिनने दुर्भाग्यवश उसके सौंदर्य को कम कर दिया था, यद्यपि वे बड़े अच्छे ढंग के साथ पड़े थे-दो छोटे दाग उसकी दोनों आंखों के नीचे थे और जरा बड़ा तीसरा दाग बिंदी की जगह माथे पर था! इस प्रकार की तरतीब किसी ऐसे ही कलाकार की करतूत थी, जिसका काम केवल मनुष्य के सौंदर्य को बिगाड़ना ही हों।

उस लड़की ने मुझे देखा-और देखती रही। डर उसकी आंखों से धीरे-धीरे दूर हो गया था!

उसने रेत को अपने हाथों से झाड़कर सिर की सूती ओढ़नी संभाली, बैठ गई, और तब बोली-'तुम भी शायद खाने की फिराक में हो? अच्छा तो फिर खोदना शुरू करो! मेरे तो हाथ थक गए हैं। वहां...' उसने एक ओर झोपड़ी की तरफ उंगली उठाते हुए कहा, 'रोटी जरूर होगी...और तरकारी भी...उस दूकान में अब भी काम होता है।'

मैं खोदने लगा। वह ज़रा देर खड़ी मुझे देखती रही, फिर मेरे पास बैठकर मुझे मदद देने लगी।

हम चुपचाप खोदते गए। इस समय मैं नहीं कह सकता कि उस वक्त मैंने ज़ाब्ता फौज़दारी, सदाचार, पराया माल, और भी बहुत-सी इसी क्स्म की बातों को, जिनपर अकूलमंद और तजुर्बेकार आदमियों की राय में ज़िंदगी के हरेक कृदम को उठाने से पहले गौर करना चाहिए, जरा भी सोचा-विचारा था।

सच्चाई के नजदीक से नजदीक रहने की वजह से मैं यह जरूर कहूंगा कि खुदाई करनें में मैं इतना व्यस्त थां कि मुझे इसके सिवाय कि उसपेटी में नीचे क्या होगा, दुनिया की किसी भी अन्य बात का ध्यान उस वक्त नहीं था!

सांझ घनी हो गई और उसके साथ ही खाकी चिपचिपाता और ठंडा कोहरा भी घना होता चला गया। लहरें पहले से कहीं ज़्यादा शोर के साथ सरसरा रही थीं। उन पेटियों के ऊपर पानी की धरें ज़्यादा ज़ोर के साथ पड़ने लगी थी। और कहीं दूर पर पहरेवाले ने अपना पहरा भी शुरू कर दिया था; बहकती हुई-सी उसकी आवाज, सुनाई पड़ जाती थी, कभी-कभी ।

इसकी तली भी है या नहीं?' मेरी सहायिका ने कोमल स्वर में पूछा। मेरी समझ में नहीं आया कि वह किसके विषय में पूछ रही है, इसलिए मैं चुप रहा।

'मैं पूछती हूं कि इस पेटी की गहराई की कोई थाह भी है? अगर है, तो हम उसे पाने की बेकार कोशिश कर रहे हैं। हम इस तरह से खाई खोद रहे हैं, जिसकी तह पर हमें खाली तख्तों के सिवाय शायद और कुछ न मिले। फिर हम उन्हें इतने नीचे घुसकर हटाएंगे कैसे? इससे तो अच्छा यही है कि ताला तोड़ दो! ताला बिल्कुल रही है।'

औरतों के दिमाग़ में अच्छे ख्यालात ज़रा कम उठा करते हैं, परंतु उठा जरूर करते हैं। और मैंने अच्छे ख्यालातों की हमेशा कद्र की है और जहां तक हो सका है, उनको काम में लाने की कोशिश भी! मैंने ताला टटोला और पा लेने पर उसे झटकना शुरू किया! जरा देर में ही वह खुलकर चोट खाए सांप की तरह बिलबिलाता हुआ एक तरफ जा पड़ा। पेटी का चौखूंटा ढकक्कन खुल गया । इस पर वह धीमे प्रशंसात्मक स्वर में बोली-'तुम तो बिलकुल पत्थर जैसे हो!'

आज स्त्री के मुंह से मुझे रत्ती भर तारीफ भी पुरुष की ढेर सारी चापलूसी के मुकाबले में ज़्यादा प्यारी लगती है, चाहे वह चापलूसी प्राचीन और अर्वाचीन सभी महान व्याख्यान दाताओं की सम्मिलित कला से भी उत्तम क्यों न हो! लेकिन तब मैं लड़कियों का ज़रा कम ख्याल करता था, इसलिए उस वक़्त मैंने अपनी साधिन की प्रशंसा पर कोई ध्यान देना तो अलग रहा, प्रत्युत कड़ाई और परेशानी के साथ पूछा- क्या बात है?'

बड़े मलिन स्वर में उसने हमारी प्राप्ति का ब्यौरा देखना शुरू ९ 'टोकरी भर बोतलें-मोटी-मोटी फ्रें-एक छतरी,एक लोहे का बर्तन! लेकिन यह सब तो खाए नहीं जा सकते थे; सो मैं रही-सही आशा भी खो बैठा था कि वह बड़े ललचाए स्वर में बोल उठी-'अहाहा! मिल गया!'

'क्या?'

'रेटी...रोटी...जरा गली हुई है-लो!'

एक रोटी मेरे पैरों के पास आकर गिर पड़ी और उसके बाद मेरी साहसी साथिन भी; लेकिन तब तक मैं एक कौर काट चुका था, उससे मेरा मुंह भरा हुआ था, और मैं उसे जल्दी-जल्दी चबाने की कोशिश कर रहा था।

वहीं 'लाओ-जरा-सी मुझे भी दो-और हमें अब यहां ठहरना नहीं चाहिए-लेकिन हम जाएंगे कहां?'

उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से चारों ओर देखा-चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा, पानी-पानी-और डरावरा! 'देखो-वहां एक उल्टी डोंगी पड़ी है, चलो वहीं चलें!' 'अच्छा तो चलो!' और हम लोग चल दिए, अपनी लूट को मुंह भर-भर कर जल्दी जल्दी खाते हुए! पानी और भी ज़ोर से बरसने लगा। नदी की गड़गड़ाहट भी बढ़ रही थीं। कहीं न कहीं सीटी की एक लंबी, तेज, उपहास सी करती हुई आवाज़ आती मालूम पड़ रही थी-मानो वह कोई महान-व्यक्ति, जिसे ईश्वर कहते हैं, और जो किसी से नहीं डरता,-समस्त सांसारिक संस्थाओं की, इस पतझड़ की क्रूर वायु की, और हमारी हंसी उड़ा रही हो। और इस सीटी को सुन कर मेरा दिल दर्द से कराह उठा; किंतु तब भी मैं लालच से खाए ही चला गया और इस मामले में मेरे बराबर बाई तरफ चलती हुई मेरी साथिन लड़की ने पूरी-पूरी तरह मेरा साथ दिया। नहीं जानता क्यों मैं उससे पूछ बैठा--

'तुम्हारा नाम क्या है?'

खूब चबर-चबर खाते हुए उसने छोटा-सा उत्तर दिया-- 'नातशा ।'

मैंने उसे तन्मयता से देखा।

मेरे अंतर में कड़ी पीड़ा उठी। और फिर मैंने अपने सामने और चारों तरफ फैले हुए धुंध में आंखें गड़ा दीं। मुझे लगा कि मेरा दुर्भाग्य मुझपर एक रहस्यभरी क्रूर और रूखी हंसी-हंस रहा है!

डोंगी के तख्तों पर पानी मूसलाधार पड़ रहा था और अंदर बूंदों की आवाज बड़ी धीमी-धीमी आ रही थीं। इस धीमी मृदुल ध्वनि ने मेरे मन में निराशा और दुख से भरे विचार जागृत कर दिए। नाव की तली के तख्ते कुछ ढीले होने की वजह से हवा के जोर से खड़खड़ा रहे थे। इस खड़खड़ से बड़ी अशांति हो रही थी और जी बैठा जा रहा था। नदी की उत्ताल तरंगें तट पर जैसे दुख के थपेड़े खा-खा कर, जीवन की आशा खोकर सर पटक रही थीं; वे जैसे अपनी मलीनता को, निर्जीवता को सदैव के लिए मृत्यु की गोद में सुला देना चाहती थीं; जैसे वे असह्य बोझ से आक्रांत और शिथिल होकर खीझ उठी हों, और जिससे वे अब छुटकारा पाकर कहीं दूर जाने की प्रबल लालसा कर रही हों-फिर भी उन सब दुखों का, निराशाओं का, आभारों का, और मलीनताओं का रोना रोने में उन्हें शांति मिलती थी, सुख मिलता था।

यह भी आवाज लहरों की छपछपाहट में मिल गई। डोंगी के ऊपर से एक लंबी सर्द आह आती मालूम हुई-वह अनन्त थकित आह जैसे पृथ्वी ने ग्रीष्म से शरद तक के ऋतु-परिवर्तन से आहत और क्रांत होकर खींची हो। फेनिल नदी और उसके सुनसान किनारे पर झंझावात बहता ही रहा अपने मातमी गीत गाते हुए।

डोंगी के नीचे हमें कृतई आराम नहीं मिल रहा था। जगह तंग और सीली हुई थी। डोंगी की तली में नन्हें-नन्हें सूराखों से पानी टपक रहा था और उन्हीं में से होकर हवा भी ठंडी तीर सी आ रही थीं हम चुपचाप बैठे ठंड से ठिठुर रहे थे। मेरी तबियत सोने को कर रही थीं। नातशा डोगीं की दीवार से चिपट कर बैठे

SAVE WATER

पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ

पेड़-पौधे मत करो नष्ट,
साँस लेने में होगा कष्ट

रही और गुड़ीमुड़ी होकर गेंद की तरह हो गई। अपने दोनों घुटनों को छाती में दाबे हुए वह उन पर अपनी ठोड़ी टिकाए आंखें फाड़-फाड़कर नदी को देख रही थी। नीले निशानों की वजह से उसकी वे आंखें सूखे हुए मुख पर बहुत बड़ी-बड़ी मालूम हो रही थीं। वह हिली न डुली, और चुप ही रही ।

मुझे डर लगने लगा। मेरे जी में आया उससे बोलूं-लेकिन बात किस तरह शुरू करूं, यह समझ में नहीं आता था। फिर वही बोली-

'जीवन कितना भयानक शाप है!'

उसने एकदम सीधे-सीधे कह डाला-लेकिन उसके स्वर में अनमनापन था और था आत्मविश्वास। उसका यह कथन जीवन के प्रति उसकी कोई शिकायत नहीं थी। इन शब्दों में इतनी उपेक्षा थी इतनी अन्यमनस्कता थी कि वे शिकायत तो कहे ही नहीं जा सकते ! शिकायत करने में अपना एक लगाव रहता है। नातशा की भोली आत्मा ने जैसे समझा, कह डाला; और अपने सीधे-सादे विचार से जो निष्कर्ष उसने निकाला था, वह प्रगट कर दिया। मैंने उसके कथन का विरोध नहीं किया, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं वास्तव में मैं अपना ही विरोध न कर बैठ! इसलिए मैं चुपचाप रहा और वह भी ऐसे ही अचल बैठी रही, जैसे उसको चलायमान करने के लिए वहां कोई भी न हो।

'अगर हम बलबलाएं भी...तो फायदा?'-नातशा ने शांति और विचारशीलता पूर्वक फिर कहना शुरू किया, और अब भी उसके स्वर से किसी प्रकार की शिकायत की ध्वनि नहीं टपकती थी। यह स्पष्ट था कि वह बेचारी जो कुछ भी बोल रही है और कह रही है, सो अपने अनुभवों को ही दृष्टिगत करके ही तो!

जीवन के विकराल व्यंग और विकट उपहास से अपनी रक्षा करने के लिए ही तो उसे ऐसी धारणाएं बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा है। और जिस परिस्थिति में वह थी, उसमें 'बलबलाने'' के सिवाय वह और कुछ कर भी तो नहीं सकती थी!

इस विचारधारा की सच्चाई मेरे लिए प्राण-पीड़क हो उठी! और मुझे लगा कि अगर मैं कुछ देर और चुप रहा, तो रोने की नौबत आ जाएगी। और औरत के सामने रोना बड़ी शर्म की बात होती, और खासतौर से तब, जब वहीं स्वयं नहीं रो रही थीं मैंने उससे बोलने का संकल्प कर ही तो लिया।

'नातशा-बतलाओ तो तुम्हें किसी ने ठुकराया है?'-मैंने पूछा। इस प्रश्न से अधिक सीधी और मुलायम दूसरी बात मेरी समझ में नहीं आई।

'यह सब पाशका ने किया,' उसने मेरी सी आवाज में कहा।

पाशका कौन ?

प्रेरा प्रेमी; वह नानबाई था।

क्या वह अक्सर पीटा करता था?

जब भी वह नशे में रहता मुझे मारता था-और अक्सर ही।

और फिर एकदम मेरी तरफ मुड़कर वह मुझसे पाशका और उससे अपने परस्पर संबंध के बारे में बात करने लगी। उसने बतलाया कि पाशका नानबाई था। उसके लाल मूछें थीं और वह बैंजो बहुत बढ़िया बजाता था। वह नातशा से अक्सर मिलने आता था, और उसे खुश करता था। बड़े मजे का आदमी था वह। कपड़े भी एकदम साफ पहनता था। उसकी बास्कट पंद्रह रूबल की थी और घुटनों तक के बूट थे, इसीलिए वह उससे प्रेम करने लगी थी और धीरे-धीरे पाशकां उससे पैसा भी उधार लेने लगा था। पैसा जो कि और लोग नातशा को मिठाई खाने के लिए देते थे, उन्हें भी पाशका उससे छीन ले जाता था और उनकी शराब पी डालता था। शराब पीकर फिर नातशा को मारता था।

लेकिन वह बोली-'सो तो कुछ बात नहीं थी-वह चाहे मुझे जितना और मार लेता-लेकिन और दूसरी लड़कियों के पीछे जो फिरने लगा था-सो यह क्या मेरा अपमान नहीं था? मैं क्या उन लड़कियों से भी बुरी हूं! इसके साफ मानी यह थे कि वह मेरी उपेक्षा ही नहीं, उपहास भी करने लगा था! निर्दयी कहीं का!-परसों मैं अपनी मालकिन से जरा देर के लिए घूमने की इजाजत लेकर बाहर निकली थी! पाशका के पास पहुंची, तो देखा कि दिसका उसकी बगल में बैठी हुई है, नशे में चूर! और वह भी गुलटंग था। मैंने फटकारा-''बदमाश !'' बस उसने मेरी कुटंती करनी शुरू कर दी।

मेरी चोटी पकड़ कर घसीटा और लातों से मारा!

लेकिन जो कुगति उसने इसके बाद मेरी की, सो कुछ न पूछो!

उसने मेरे पास जो कुछ भी था, उसकी खूब दुर्दशा की। और इस हालत को, जिसमें इस वक़्त मैं हूं, मुझे पहुंचाकर छोड़ दिया । फिर मैं अपनी मालकिन के पास कौन सी सूरत लेकर जाती ?-उसने मेरा सब कुछ बिगाड़ दिया-मेरा साया-और मेरी बिल्कुल नई कुर्ती भी, जिसके लिये मैंने पांच का नोट खर्च किया था-सर से रूमाल खींच कर फाड़ डाला। हे ईश्वर! हाय अब मैं क्या करूं !'-वह यकायक शोकाकुल हो उठी। उसका स्वर जैसे खिंचा जा रहा था।

हवा हूकती ही रही; और भी ठंडी होती चली जा रही थी ।...मेरे दांत फिर किटकिटाने लगे!

नातशा सिमटी और मुझसे बिलकुल चिपटकर बैठ गई, और तब उस अंधकार में मुझे उसके नेत्रों की चमक दिखाई पड़ी।

तुम सब आदमी कमीने हो! मेरा बस चले तो सबको भट्टी में फूंक दूं-बोटी-बोटी काट डालूं! अगर कोई पुरुष मरता हो तो मैं उसके मुंह में थूक दूं। रत्ती भर रहम जो करूं कभी ! कमीने ! लुच्चे कहीं के ! पहले घिधियाते हैं, खुशामद करते हैं, कुत्तो की तरह पैरों पर लोटते हैं। और हम बेवकूफ औरतें तुम्हारी बातों में आकर अपना सब कुछ अर्पण कर देती हैं। और तुम हमें अपने पैरों तले रौंदते हों-अवारा गुण्डे कहीं के!

नातशा ने खूब जी भरकर पुरुषों को गालियां दीं और कोसा! लेकिन 'अवारा गुण्डों' को उसके इस कोसने में कोई जान, कोई घृणा, कोई कुत्सित भावना मुझे मालूम नहीं पड़ी!

जितने कटु शब्द उसने कहे थे, उनका स्वर उतना कटु नहीं था। उसकी आवाज में काफी शांति थी, और उसका जोर बहुत कम था! फिर भी इन सबका प्रभाव मेरे ऊपर उससे भी कहीं ज़्यादा पड़ा था, जितना कि निराशावाद की बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़कर और महान व्याख्यान सुनकर भी कभी नहीं पड़ा था! और न आगे भी पड़ सका है। इसकी सीधी-सी वजह है : वास्तव में मरते हुए आदमी का आक्रोश मृत्यु के सूक्ष्म और सजीवतम वर्णन से भी कहीं अधिक यथार्थ, सत्य, स्वाभाविक और प्रभावशाली होता है।

सचमुच मुझे बड़ा बुरा लग रहा था-अपनी साधिन की गालियों से नहीं, वरन सर्दी की वजह से!

मैंने धीरे से एक आह भरी और दांत पीसे!

और तभी मुझे दो नन्ही कोमल बाहें अपनी गर्दन और मुख को स्पर्श करती प्रतीत हुई-और उसी क्षण में एक आतुर, कोमल, सहानुभूतिसिक्त स्वर ' भी मेरे अंतस्तल को छू गया- तुम्हें कौन सा दुख है?

इस सवाल को पूछनेवाली क्या यह वही नातशा थी जो अभी अभी सारी पुरुष जाति को दुनिया भर की गालियां सुना चुकी थी, और उनके आमूल नाश पर तुली हुई थी!

मैं विश्वास करने के लिए तैयार था कि यह वही नातशा नहीं थी। परंतु वास्तविकता तो दूसरी ही थी। यही नातशा थी वह, और वह द्रुत स्वर से कह रही थी।

ओह बोलो न!

तुम्हें क्या दुख हैं?

सर्दी लग रही है? ठंड खा गए हो हो?

गुमसुम चुपचाप बुत बने बैठे हो! बोलते क्यों नहीं! मुझसे पहले ही क्यों नहीं कह दिया था कि सर्दी लग गई है! अच्छा आओ यहीं लेट जाओ 'पर फैला

नातशा ने खूब जी भरकर पुरुषों को गालियां दीं और कोसा! लेकिन 'अवारा गुण्डों' को उसके इस कोसने में कोई जान, कोई घृणा, कोई कुत्सित भावना मुझे मालूम नहीं पड़ी! जितने कटु शब्द उसने कहे थे, उनका स्वर उतना कटु नहीं था। उसकी आवाज में काफी शांति थी, और उसका जोर बहुत कम था! फिर भी इन सबका प्रभाव मेरे ऊपर उससे भी कहीं ज़्यादा पड़ा था, जितना कि निराशावाद की बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़कर और महान व्याख्यान सुनकर भी कभी नहीं पड़ा था! और न आगे भी पड़ सका है। इसकी सीधी-सी वजह है : वास्तव में मरते हुए आदमी का आक्रोश मृत्यु के सूक्ष्म और सजीवतम वर्णन से भी कहीं अधिक यथार्थ, सत्य, स्वाभाविक और प्रभावशाली होता है। सचमुच मुझे बड़ा बुरा लग रहा था-अपनी साधिन की गालियों से नहीं, वरन सर्दी की वजह से! मैंने धीरे से एक आह भरी और दांत पीसे! और तभी मुझे दो नन्ही कोमल बाहें अपनी गर्दन और मुख को स्पर्श करती प्रतीत हुई-और उसी क्षण में एक आतुर, कोमल, सहानुभूतिसिक्त स्वर ' भी मेरे अंतस्तल को छू गया-तुम्हें कौन सा दुख है? इस सवाल को पूछनेवाली क्या यह वही नातशा थी जो अभी अभी सारी पुरुष जाति को दुनिया भर की गालियां सुना चुकी थी, और उनके आमूल नाश पर तुली हुई थी! मैं विश्वास करने के लिए तैयार था कि यह वही नातशा नहीं थी। परंतु वास्तविकता तो दूसरी ही थी। यही नातशा थी वह, और वह द्रुत स्वर से कह रही थी।

लो...हां ठीक है! कहो अब कैसा लग रहा है? ओह! अपने हाथ मेरी कमर में तो डालो...और कसकर! ओह कितना अच्छा लगता है ! है न?...खूब गरम हो जाओगे अभी...फिर रात भर मजे से सोना! रात बहुत जल्द बीत जाएगी, देखना न!...अरे क्या तुम भी पीते हो...? घर से निकाल दिए गए हो क्या, हाय!...तो क्या हुआ।' और-और उसने मेरे साथ पूरी सहूलियत बरती...! मुझे बड़ा सुख...दिया!-और फिर ढाढ़स भी बंधाया!

कल्पना कीजिए! इस एकाकी घटना में कितना क्रूर व्यंग भरा था! एक मैं था, जो इस समय मानवता के भाग्य पर सोच-विचार कर रहा था; समाज के ढांचे और राजनीतिक आंदोलनों के पुनर्निमाण का इरादा कर रहा था; महान दानवी विद्धत्ता से पूर्ण पुस्तकों के उस अथाह गंभीर ज्ञान का, जिसे उनके लेखक भी नहीं समझते थे, इसी समय पर्यालोचन कर रहा था। और अपनी समस्त शक्ति लगाकर अपने को एक जानदार सक्रिय सामाजिक शक्ति बनाने की कोशिश कर रहा था। मुझे यहां तक लगने लगा कि जैसे मैंने कुछ-कुछ सफलता भी अपने उद्देश्य में प्राप्त कर ली है! जो भी हो, इस समय जो कुछ भी मैं अपने विषय में सोच रहा था, उसने मुझे विश्वास दिलाया है कि मुझे संसार में जीवित रहने का पूरा हकु है। और मैं संसार के इतिहास में महत्त्वपूर्ण भाग लेने के सर्वथा योग्य हूं। अरे इन क्षणों में एक नारी मुझे जीवन प्रदान कर रही थी-वह नारी जो अभागिन थी, अबला थी, सताई हुई थी, और जिसका जीवन में न कोई मूल्य था और न कोई हस्ती; जिसकी मैंने कोई सहायता नहीं की, और जिसने उल्टी मेरी ही सहायता की-और यदि सहायता करने की भावना भी मेरे दिल में उठी होती, तो मैं नहीं समझ पाता कि सहायता करता तो किस तरह!

हे आह! और मैं यह सोचने के लिए प्रस्तुत था कि यह सब यथार्थ 'एक स्वप्न है! भयानक स्वप्न! कष्टकर स्वप्न!

उफ! लेकिन यह सोचना असंभव था, क्योंकि ठंडी-ठंडी बूंदें मेरे ऊपर टपक रही थीं-और नातशा मुझसे सटी हुई थी...उसके गरम-गरम मादक निश्वास मेरे मुख को सहला रहे थे, यद्यपि उनमें मदिरा की गंध आ रही थी...फिर भी मुझे बड़ा प्यारा-प्यारा लग रहा था ।...बाहर हवा हूक रही थी और झुंझला रही थी। डोंगी पर पानी भी पड़ रहा था। नदी की लहरें तट से सिर धुन रही थीं...और हम लोग संपूर्ण आलिंगन में आबद्ध प्रेम में एक हुए जा रहे थे फिर भी सर्दी से कांप रहे थे! मुझे विश्वास है कि किसी ने भी इससे अधिक कष्टकर और भयंकर स्वप्न भी नहीं देखा होगा!

और नातशा बराबर बात करती रही, इधर-उधर की, न जाने कहां-कहां की, लेकिन उसके स्वर में सहानुभूति थी-और वह चीज़ थी, जो केवल नारी ही दे सकती है! उसकी ऐसी प्यारी सुंदर बातों के प्रभाव से मेरे अंतर में एक चिनगारी सुलग उठी, और फलस्वरूप मेरे हृदय में से कुछ द्रवित होकर गतिशील हो गया! ओलों की तरह आंसू मेरी आंखों से बह चले। और उस प्रवाह में मेरी बहुत कुछ बुराइयां, दुर्गुण, दुःख और गंदगी, जो रात मेरे हृदय को दूषित किए हुए थे, बह गए-धुल गए!

नातशा मुझे सुख जो दे रही थी!

अच्छा अच्छा बहुत हो गया। मान जाओ...मन भारी करने की कोई बात नहीं है...ईश्वर तुम्हें और भी सुअवसर देगा...अपने को संभाल कर फिर अपना ठीक-ठिकाना कर सकोगे!-फिर सब ठीक हो जाएगा-सब ठीक!' और अपने प्रगाढ़ आलिंगन में कसे-कसे वह मुझ पर अनगिनती चुंबन वारने लगी...प्यार से भरे वे मादक चुंबन...लेकिन सब व्यर्थ-!-सब व्यर्थ-!

उस दिन जीवन में सबसे पहले किसी नारी ने मुझे चूमा था-और शायद अंतिम बार भी-क्योंकि उतने जीवन से पूर्ण चुंबन फिर मैंने आज तक नहीं पाए-बाद को जितना भी प्यार मुझे मिला, उसके लिए मुझे बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा-और वास्तव में लाभ कुछ भी नहीं हुआ।

आओ! मन को क्यों मैला करते हो! अगर तुम्हारा कहीं ठीक इंतज़ाम नहीं होगा, तो मैं करूंगी'',--और उसका यह शांत आश्वासन से भरा-भरा धीमा स्वर मुझे मानो स्वप्न में सुनाई पड़ रहा था

और हम दोनों ऐसे ही भोर तक लेटे रहे सबेरा होने पर हम उस डोंगी के नीचे से निकल कर बाहर आए और शहर में चले गए...फिर हमने अच्छे मित्रों की तरह ही परस्पर बिदाई ली, और फिर कभी नहीं मिले! अपनी अच्छी नातशा को, उस नातशा को, जिसने उस पतझर की भयावह रात में मुझे सुख दिया था-ढूंढ निकालने के लिए मैंने शहर का कोना कोना छान डाला।

पर नातशा न मिली,न मिली!

अगर वह मर गई है, तब तो अच्छा ही है; जीवन के दुखपूर्ण जंजाल से छूट गई; 'ईश्वर उसकी आत्मा को शांति दे!' किंतु यदि वह जीवित है...तब भी मैं कहूंगा-'ईश्वर उसकी आत्मा को शांति दे!'...और उसे कभी भी अपने पतन का ध्यान भी न आए!...क्योंकि वह एक बेकार की व्यथा होगी, अगर जीवन जीवित रहने के लिए ही है तो!

- मैक्सिम गोर्की

नदी के लुटेरे

हम तो अपने धान खुद ही लगाएंगे, कौन दे उनकी मजदूरी, हमारे पास तो दो ही खेत हैं। मैहरों व ठाकुरों के पास बथेरे खेत हैं, वही लगाएंगे इन्हें अपने खेतों में'' जगतू की पत्नी खिल्लो बोली, ''मैहरों ने ही बुलाएं होंगे ये लोग, पूरे गांव के आधे खेत तो उनके पास ही हैं। जगतू बैलों को रोककर बीड़ी सुलगाने लगा। ''तुम्हें पता है ये लोग बड़े पागल आदमी हैं असली मकसद तो इनका नदी की बाढ़ में बहते सामान लूटने का है, धान तो ये गांव की ज़मीन में अपनी जगह बनाने के लिए लगाते हैं नदी से मोटे पत्थर भी इक्ट्ठा करते हैं, कुल्हें भी बना देते हैं नदी के पानी को खेतों तक भी मोड़ लाते हैं। वैसे हैं बड़े काम के आदमी। गांव में तो अब लोगों को इनकी आदत पड़ गई है।'' पहले चार लोग आए। फिर शाम तक और चार लोग आ गए। अपने काम से थोड़ी फुर्सत के वक्त गांव इक्का दुक्का मर्द उनकी ओर हो लिए।

वे आ गए, वे फिर से आ गए हैं। धान के खेतों को तैयार करते उनको आते सबने देखा। उनको धान के खेतों के उस पार खाली रेतीली ज़मीन में फैले सरपड़ों के बीच कंधों पर बड़े बोरू उठाए सबने देखा। उन्होंने नदी के एक कोने के सरपड़ के बीच खाली ज़मीनों में अपना सामान रखा और तंबू लगाने शुरू कर दिए। उनके आते ही खेतों को धान रोपने से पहले तैयार करते गांव के मर्दों व औरतों में उनके बारे में चर्चा शुरू हो गई।

''लो जी, इस बार भी धान लगाने के काम में उनकी मदद मिल जाएगी।'' बैल हांकता जगतू अपनी पत्नी से बोला। ''हां जी, पर हम तो अपने धान खुद ही लगाएंगे, कौन दे उनकी मजदूरी, हमारे पास तो दो ही खेत हैं। मैहरों व ठाकुरों के पास बथेरे खेत हैं, वही लगाएंगे इन्हें अपने खेतों में'' जगतू की पत्नी खिल्लो बोली, ''मैहरों ने ही बुलाएं होंगे ये लोग, पूरे गांव के आधे खेत तो उनके पास ही हैं। जगतू बैलों को रोककर बीड़ी सुलगाने लगा। ''तुम्हें पता है ये लोग बड़े पागल आदमी हैं असली मकसद तो इनका नदी की बाढ़ में बहते सामान लूटने का है, धान तो ये गांव की ज़मीन में अपनी जगह बनाने के लिए लगाते हैं नदी से मोटे पत्थर भी इक्ट्ठा करते हैं, कुल्हें भी बना देते हैं नदी के पानी को खेतों तक भी मोड़ लाते हैं। वैसे हैं बड़े काम के आदमी। गांव में तो अब लोगों को इनकी आदत पड़ गई है।'' पहले चार लोग आए। फिर शाम तक और चार लोग आ गए। अपने काम से थोड़ी फुर्सत के वक्त गांव इक्का दुक्का मर्द उनकी ओर हो लिए। गांव के नानकू ने जिज्ञासा वश उनके पास पहुंचते ही बोला, ''आ गए भई ! अच्छा हुआ, कहां से आए हो? तुम्हारे बारे में गांव के लोग बात करते है मैं तो अमृतसर में हलवाई हूं, इस बार बरसात तक लंबी छुट्टी पर आया हूं, किस ईलाके के हो, कौन सी जात है तुम्हारी। और क्या - क्या कीता है तंबू गाड़ते सबसे उम्रदराज अधेड़ से व्यक्ति ने विस्मय सी आंखों से नानकू की ओर देखा और तंबू गाड़ते ही बोला,''जी, दूर धार के उस पार के कोई पचास कोह में बसे गांव के झीर हैं हम, बरसात के मौसम में हमारे यहां कोई काम नहीं होता। न किसी के पास अच्छी खासी ज़मीन है और न करने के कुछ और, बस काम की तलाश में निकल आते हैं यहां। जहां से ये नदी अपना बहाव बढ़ाना शुरू करती है, वहीं है हमारा गांव। मै ध्यानू हूं, ये मनोहर, श्यामू, शूंका, बलैतू और ये जो लकड़ियां फाड़ रहा है न, ये हममें सबसे छोटी उम्र का हीरू है। बड़ा बहादुर है यह लड़का हीरू। पिछले दो सालों से आ रहा है अभी सीख रहा है हुनर पर इसके इरादों में अलग ही पंख हैं। हीरू कुल्हाड़ी से नदी के इधर-उधर से किए सूखे गट्ठों को फाड़ता रहा।

नानकू बोला,'' वैसे मैंने सुना है कि नदी में वहां सामान भी ईक्ट्ठा करते हो, चलो अच्छी बात है इस बार बरसात तो खूब होगी पर तुम लोगों को कुछ नदी में से मिलेगा कि नहीं यह तो भगवान ही जाने। पर मैंने सुना है कि तुम उफनती लहरों में से सब कुछ खींच लाते हो। क्या ये सच है।'' ध्यानू बोला,'' नदी की छोटी मोटी धाराओं में सीखते हैं मस्ती में चोबियां (डुबकियां) लगाना और फिर उस ख्वाजा की मर्जी से यहां तक पहुंच जाते हैं उफनती लहरों में अपनी जान जोखिम में डालने। बस मजबूरी ने ये काम भी सीखा दिया है। हमारे बुर्जुगों ने भी किया है यही सब। जनाब! ये तो ख्वाजा पीर की मर्जी है कि वह हमारी झोली में कुछ सामान डालता है न भी मिलेगा तो भी उसकी मर्जी है। बरसात के आखिरी दिनों तक हम यहां रहेंगे ही। धान लगाएंगे, खेत तैयार कर दिए है

सबने बांध बनाएंगे और नदी के बचे खुचे पानी को खेतों तक मोड़ लाएंगे। वर्शों से हमारे दादा पड़दादाओं के समय से यहां आते रहे हैं हम भी आ रहे हैं जब तक यह कीता चलेगा हमसे बस काम करेंगे, बाकी ख्वाजा की मर्जी। " हां! उसकी मर्जी! ठीक है भाईयों फिर मिलेगें। तुम्हारा अनोखा खेल इस बार मैं जरूर देखूंगा। कोई चीज की जरूरत हो तो बताना। वैसे मैं उस छप्पर में रहूंगा। बुर्जुगों के टाइम का बना है। मेरे पिता का नाम जानकू है ।'' ''हां! हां! महाराज बड़े नेक इंसान है आपके पिता उनके खेतों में धान लगाते हैं हम और खाने पीने का सामान दिल खोल कर देते हैं। अधिया हैं वे इस गांव के। आधी ज़मीन है पूरे गांव की हमारे पास। भला हो उनका'' ध्यानू बोला। नानकू बोला, ''शुक्र है तुम आ जाते हो। वर्ना पूरे गांव की औरतों व मर्दों से धान रूपाने के लिए तरले करने पड़ते हमें। अच्छा भाईयो''

कुछ ही दिनों में नदी में पत्थरों, आस पास की झाड़ियों व सबाल की मदद से बांध बनता। पानी भरने लगता खेतों में। मयान होता। मैहर के खेतों में उन प्रवासियों की टोली घुस जाती धान रोपने। पर इस सबके बावजूद वे अपने मनों में कई तरह के सपने भी रोपते रहते। जब धान रोपने का काम पूरे जोरों पर होता तो गांव की लड़कियां अपने ससुराल से कुछ दिनों की छुट्टी लेकर अपने माइके पहुंचकर धान लगाने में मदद करती। कोई घर खाली न बचता। साथ में ये अद्भुत लोग भी सिर्फ उन्हीं के खेतों में रोपते जो उन्हें उनकी मजदूरी दे सकें।

जब तपते जयेश्ठ की धूप उनके जिस्मों के अंदर छुपी महीन जीवनदायनी खून के साथ घुल मिली पानी की बूंदों को सोखनी शुरू कर देती, तो वे भी बड़े खुश होते, इसलिए नहीं कि शरीर का भार खाली हो रहा है बल्कि इसलिए कि इस बार का सावन का अंधा घोड़ा उनके लिए कई नेमते लाएगा। दूसरी ओर गांव के किसान इसी जयेश्ठ की गर्मी में अपने शरीर से सारी उर्जा को पसीने की बूंदों के साथ निचोड़ रहे होते। दिन की मेहनत के बाद हर रात को नदी की सारी मछलियों को वो लियाड़े से मारने के लिए निकलते और जब पत्थरों के बीच से गोदल 'लम्बी पूंछ वाली मछलियां' पानी की कमी व आग की तेज लौ से चुंधया चुकी उनकी कोमल आंखों के कारण बाहर आती, तो वे लोहे के सख्त दराटों के प्रहार से उनकी आत्माओं को उनकी मामूली वसा से परिपूर्ण काया से अलग कर देते। फिर वे लम्बी पूंछ वाली मछलियां उन नासमझ मछुआरों या फिर शौकिया शिकारियों के लिए उर्जा दायक भोजन के रूप में परिवर्तित हो जातीं।

ज्येश्ठ की समाप्ति तक जब नदी हर ओर से सूखने लग जाती तो कुछ परेशान से बगुले भी वहां से पलायन कर जाते। सिर्फ नदी में जलीय जीव बचते जो अपने वसापूर्ण भोजन को एक अतिरिक्त व्यजंन के रूप में किसी के परोसे जाने का दुस्वप्न पाल बैठे हैं। जब आषाढ़ अपनी तपस से मेघ रूपी रथ के पहियों को दौड़ाने के लिए सुनियोजित कर रहा होता तो वे अपना काला मुंह करके 'काली इंटे काला मुंह' का खेल खेलने का प्रंपच भी करते ताकि मेघ उनकी प्रार्थना के झांसे में आकर उनके हिस्से के आर-पार इतना मेघ बरसाए कि उस मेघ रूपी दानव के पीछे भागते लश्कर के साथ सब जीवन रूपी काया के मददगार पदार्थ बहते आएं और फिर वे अपनी हिम्मत, मस्ती, स्वार्थ व कलापूर्ण मेहनत के दम पर बीस-तीस उंचे उठे बाढ़ के पानी से वो सब सामान इक्ट्ठा कर सकें या लूट सकें जिससे उनके लिए कुछ महीनों का सामान इक्ट्ठा हो सके और जो उनकी पहचान, उनके अस्तित्व को बचा कर रख सके, जो वो करते आए हैं। वे न तो लुटेरे हैं न शिकारी, वे सिर्फ कलापूर्ण हुनर के दम पर नदी में बाढ़ के साथ बहने वाले सामान को सही दिशा की ओर मोड़ने वाले हिम्मती मर्द हैं जिसकी तुच्छ यांत्रिक जीवन की आदतों ने उन्हें रहस्यमयी इन्सान बनाने का जोखिम ले लिया है। यही यांत्रिक संसार उन्हें सब मर्दों से विभिन्न दर्जा दे रहा है और उनके अस्तित्व के कणों में नए कण जोड़ रहा है ताकि वे मानस पटल के सजाए दृश्यों में अपना नाम जोड़ सकें। दूर गांव से आए ये वे रहस्यमयी पुरूष समय के अंतराल के बाद अपनी उपस्थिती से गांव के मानसिक ताने बाने में दखल देते आ रहे हैं वे जिस विशेष स्थान से आते हैं पर न ही उनकी संख्या में कमी आती है। वे स्वर्णिम दिनों की रचना करके ही अपने ठिकानों को लौटते हैं वे अपने उर्जा से भरे शरीरों को गांव के किसानों के उन खेतों में धान लगाने के लिए भी झौंक देते, ताकि किसी को उनका आना खटके न। जब नदी के किनारे खाली पड़ी जमीन में उनके तंबू लग जाते तो गांव के लड़के, बुर्जुग और अन्य तंबूओं के पास कभी-कभार मंडराना शुरू कर देते। नदी की मछलियां अब भागने की फिराक में गहरी पानी की कंधराओं में छुपने लग पड़ती पर उन्हें ये पता नहीं कि ये हिम्मती पगलाए आदमी उन्हें ज़मीन व पानी की सात तहों से भी बाहर निकाल लेंगे।

औरतें उनके तबूंओं की ओर नहीं जाती पर उनकी विशेष कर्मों की चर्चा एक दूसरे से जरूर करतीं वे सभी अपनी कल्पनाओं की एक अनोखी दुनिया जरूर सजाती जो उन्होंने उन प्रतापी मर्दों के बारे में अपने शांत व सूखे पड़े विचारहीन मस्तिष्कों में की होती। उनकी कल्पनाओं में विविधता पूर्ण लहरें होती। कुछ मन ही मन उन मर्दों की तुलना अपने मेहनती मर्दों से करतीं जो वर्षों से इन खेतों में जुते हुए होने के बाद कभी उन्हें गांव से बाहर का क्षितिज आज तक दिखा न पाए। कुछ उनके बारे में सोचती कि जो प्रतापी मर्द नदी के तीव्र वेग से भी जीवन उपयोगी चीज़े निकाल लाते हैं वे कितने मज़ेदार व हसीन मर्द होंगे। वे अपनी स्वार्थी कल्पनाओं को भी अपने मन में सजातीं।

औरतों की नैपथ्य मानसिकता में अप्रत्याशित परिवर्तन ये मायवी लुटेरे चुपचाप किसी को बिना बताए कर चुके होते। उनका स्मरण सघन होकर उन लुटेरे मर्दों के नित्य कर्मों पर केंद्र निर्मित करता जाता। वे किसी भी बहाने उन मर्दों की चर्चा की खुमारी की अवस्था धारण कर लेतीं उन्हें उन दिनों सितारों में अधिक प्रकाश नज़र आता, उन्हें नीले आकाश में अधिक नील नज़र आता। उन्हें रातें अधिक स्वपनिल महसूस होती, उन्हें सूखती नदी एक मायावी जादूगरनी की तरह नज़र आती, उन्हें नीरस जिंदगी में ख्वाइशों की बेलों के फैलने और खिलते फूलों की अत्यधिक गंध महसूस होती। उनमें दिव्यता की मादकता को पीने की लालसा जागने लगती। वे समतल खेतों में शिखरों के उगने का आभास करतीं। उन्हें अपने कच्चे घरों के कमरों में एक रहस्यमय प्रकाश दौड़ता नज़र आता। उन्हें गांव की भूमि का हर हिस्सा रमणीय नजर आता। उन्हें ज्येष्ठ के उग्र सूर्य की प्राणदायक किरणें भी पृथ्वी के गुप्त आलिंगन में मदहोश नज़र आती। वे उनकी सुघड़ शक्तिशाली आकृतियों और प्रचंड इच्छा शक्ति की गुप्त भक्ति करने लगती। गांव के आभाविहीन सिर्फ देहाती किसान मर्दों के पास भी औरतों से विभिन्न विचित्र कल्पनाएं भी होती। वे अपनी मर्दानगी की उन बहादुर व रहस्यमय मर्दों के साथ तुल ना में लगे रहते। कोई सोचता,''मैंने इसी नदी से पांच-पांच मण के पत्थर अपने मजबूत कधों पर उठाए हैं पर क्या वे ऐसा कर सकते हैं?'' कोई सोचता कि उसने जेठ की पूरी रातें इसी नदी के किनारे शमशान के करीब बिताई हैं क्या वे ऐसा कर सकते? कुछ अपनी मर्दानगी को अपनी सहवास की शक्ति के प्रदर्शन के साथ उनके साथ कल्पना करते।

इन सब कल्पनाओं व मन की तसल्ली की बातों को बावजूद गांव के मर्द फिर भी पीछे छूट जाते। कुछ की विचित्र कल्पनाएं उन्हें शंका में डालती कि कहीं उनकी पत्नियां रात के स्वप्नों में उन गैर मर्दों के साथ लिप्त न हों। कईयों के साथ जब यह भ्रम उनके मन के रथ के साथ दौड़ने लगता तो वे मन ही मन उनसे नफरत करने लग पड़ते। लेकिन वे उन्हें अपने क्षेत्र से भगा नहीं सकते और फिर मज़बूरी की चादर ओढ़ कर अपने घरों के बरामदों में चुपचाप जेठ की ठंडी हवा

के साथ सोए रहते। कुछ अपनी मर्दानगी का प्रदर्शन तो चुपचाप बंद कमरे में कर आते पर उनकी शंकाएं उनका पीछा नहीं छोड़ती। वे अपनी पत्नियों के उन गैर मर्दों के साथ चर्चा से बचते, लेकिन कुछ इस चर्चा में जरूर फंसते जो सिर्फ उन्हें हताश व उनकी मूर्खता का प्रदर्शन ही करवातीं।

उधर तंबूओं में चर्चा चल रही है धयानू बोला,"मैं कहता हूं हीरू इस बार तो उन कत्थे को भट्ठियों को उजड़ना ही होगा जो हम देख कर आए हैं। खैर जो भट्ठी वालों ने खैर के कई मोछे रख छोड़े हैं काफी है, जो पानी के रास्ते आ सकते हैं। जंगलात वालों ने कई शहतीर भी नदी के किनारे रख छोड़े हैं, कुछ छप्पर भी उड़ जाएंगे। मैं कल तड़के ऊपर कोई पांच कोह तक गया था वहां फकीरू राम का घराट भी इस बार बह जाएगा, मुझे पक्का यकीन है, नदी की धारा घराट के करीब आ चुकी है। नदी का कभी कोई भरोसा नहीं और बाढ़ तो महाराश्रसी होती है। सभी हंस दिए। "बस इस बार मेघ खूब बरसे, सभी यही प्रार्थना करो, बाकी ख्वाजा पीर पर भरोसा रखो, वो हमें खाली हाथ घर वापिस नहीं भेजेंगे। दूसरा इलाके में हम चर्चा में आते है सब हमारे गुण गाते है। दूर - दूर से बाढ़ के समय हमारे कारनामे देखने आते है। अब जिसका घर बाढ़ में बह जाए वो तो हम जैसों को गालियां देता होगा। सौ-सौ मण की, पर आखिर किसी का सामान बहेगा तो ही हमारा काम चलेगा न।

उधर गांव में कुछ मन ही मन उनकी शिकायत गांव के पंच से करने की आधार विहिन योजनाएं बनाते लेकिन गांव का पंच उन्हें किस आधार पर नदी से भगाएगा, इस बात पर उन्हें कोई तर्क नहीं सूझता। नदी सरकार की है वे अपनी हिम्मत से उस जोखिम पूर्ण काम को अंदाज देते हैं इसमें पंच कुछ नहीं कर सकता, इस बात पर उनके मन में उठे अर्थविहिन विचार नदी की अथाह गहराई में डूब जाते। कुछ अपने मन में उन बहादुर लुटेरों की तरह नदी की बाढ़ में से कीमती सामान निकाल लाने के स्वप्न सजाते। लेकिन नदी की लहरों का वेग और बाढ़ का प्रचण्ड रूप जब हकीकत के आइने में धुंधला सा भी उनको नज़र आता तो उनकी आंखें फिर से बंद हो जाती और खेतों और खेतों, अपने कमजोर बच्चों, अपनी थकी हारी रोज के काम निपटाती व सिर पर गोबर उठाए खेतों की ओर दौड़ती पत्नियों व घर में बुजुर्गों के खांसने की आवाज़ों के साथ ही निम्न स्तर के सपने लेने लग पड़ते। कुछ इन सब के बीच कुछ हठ से पूर्ण रोमांचक सपने लेने से भी बाज नहीं आते।

गांव के पंच पुन्नू राम के जग में सब इक्ट्ठे हुए तो गांव के संगतू ने बात छेड़ दी, "पंच साहब! उन तबुओं वालों का कुछ करो, वो हर साल आ जाते हैं, सब कुछ लूट ले जाते है। कौन रोकेगा उन्हें गांव की मां बहनें हैं गैर प्रदेशियों का क्या भरोसा।" पंच बोले, "भई वर्षों से आ रहे हैं हमारे बुजुर्गों के समय से आते हैं, धान लगाने में हमारी मदद भी करते हैं। कभी किसी मां बहन पर नज़र नहीं डालते। मैं अब उन्हें क्या बोल सकता हूं। अब वो नदी के किनारे ही रहते हैं गांव में घुसते भी नहीं, हमसे ज्यादा मेल भाव नहीं करते बरसात के बाद चले जाते हैं।" संगतू फिर बोला, "अगर कहीं कुछ गलत हुआ तो फिर जवाब आपको ही देना होगा मुझे तो उन लोगों की नीयत में खोट दिखता है।" इस बात पर मंगतू भी बोल पड़ा, "अरे किसी का छप्पर बहे, खैर बहे कत्थे वाले ठेकेदारों की भट्ठियों उजड़े, तो वे खुश होते हैं लूट मचाते हैं।" अब सातूं राम बोला, "अरे इसमें उनका क्या कसूर है नदी में जो बह गया वो नदी का हो गया, अगर कोई लूट सके तो लूट लो, गांव के लड़के भी तो बाढ़ में उतरते हैं कभी कभार, याद नहीं है सबको बलैतू का लड़का बह गया था कोई पांच वर्ष पहले बाढ़ में से जंगलात के शहतीरों के लट्ठे पकड़ते वक्त। जिस साल बड़ी भयंकर बाढ़ आई थी और हम सब भी तो बाढ़ में से कई कुछ पकड़ कर लाए थे। अरे भई हिम्मत का काम है। रही बात उनकी हरकतों की तो हमें तो उनकी कोई बात बुरी नहीं लगती। हिम्मती मर्द है, कभी कोई शिकायत भी नहीं आई न कभी किसी औरत व लड़की के साथ बुरी नज़र की बात आई है। चलो फिर भी हमें चौकन्ना रहना होगा। अपनी सरहदों में रहते है, नदी के रोड़ों में भटकते फिरते हैं, कभी कभार अनाज के लिए आते हैं गांव में।"पंच ने आखिरी बात कही, भई हमारे समाज, हमारी परम्पराओं से जुड़ गए हैं, वर्षों का सिलसिला है हमारे बुर्जुगों के समय से आते है, जब तक आ रहे हैं आते रहें। कभी दो चार बह गए तो फिर कभी न आएगा कोई।" सबने जोर से ठहाका लगाया।

धान लगने का काम खत्म होते ही जब मानसून की प्रथम छोटी किश्तों से नदी का प्रवाह बढ़ता तो नदी में कूदने, गहरी लहरों को पार करने का वे अभ्यास करते, वो चुपचाप ग्रनेड़, गहरी आल में फेंकते और डुबकियां मार मार कर हर मरी मछली को ढूंढ लाते। जब मछलियां उनकी झोली में भर जाती तो वे उन्हें भी आस - पास के गांवों के लोगों को बेच देते। बची हुई मछलियां शाम को अपने लिए पकाते ।

इसके बाद जब मेघ अपने अंदर पानी को इक्ट्ठा करके उनके आसमान में बरसाने अपनी अंतिम इच्छा का उद्घोष कर देते तो पूरा गांव उन लुटेरे मर्दों के प्रदर्शन को देखने की इच्छा को और अधिक अंकुरित करने के लिए अपने खाली समय की खाद डालना शुरू कर देते। प्रदर्शन का समय जब नजदीक आ रहा होता तो भी वे लुटेरे मजे से रात को नदी की मछलियों से कई खेल खेलते। वे इस बात की परवाह नहीं करते कि लोग उनके बारे में किस विचार धारा को अपने घरों के बाहर रखी पालकियों में सजा रहे हैं। वे अल्हड़, हिम्मती मर्द अपने ही नशे में खोए, गांव वालों से उचित दूरी बना कर रखते ताकि गांव के स्त्री- पुरूष, बच्चे- बूढ़े उनकी कमजोरियों का ज़रा भी भान न पा सके और हमेशा उनके होते हुए या फिर चले जाने के बाद भी उनसे प्रभावित रहे और अपने नीरस व थके हारे जीवन के कुछ पलों की उनके लिए चर्चा में आहूति देते रहें। उनका दबदबा, उनका आभामंडिल व्यक्तित्व गांव की औरतों को सदा प्रभावित करता रहे वे अगर जब भी किसी गैर मर्द के बारे में सोचें तो उन हिम्मती मर्दों में से किसी एक को जरूर चुने।

सावन का अंधा घोड़ा उस नदी के ऊपर फैले आकाश में अपने ऊपर उठाया बादलों में जकड़ा अमोध जल का भार इधर-उधर फेंकने लगा और नदी का शांत स्वभाव तीन दिन की मूसलाधार बारिश के बाद प्रचंड और बर्बर स्वभाव बढ़ने लगा। लुटेरों की बड़ी एवं तीक्ष्ण आंखों में चमक बढ़ गई। उनके तबूं बरसात के मौसम में बेसुध होने लगे पर अब तबुंओं की परवाह किसे थी। अंधे घोड़े ने एक दिन अपना सारा भार फेंक देने की जिद् कर ली और नदी के किसी दूसरे हिस्से के किसी आकाश में बादल फूट उठे। लुटेरों ने ईश्वर की ओर मन में दुबके धन्यवाद भेजे। उम्मीद से बड़ी लहरें बाढ़ रूपी दानव की रंगरलियों में अपना आपा खो बैठीं और अपने साथ कई पेड, शहतीर,खैर के मोछे और नदी के किनारे कई तरह के कीमती सामान को बहाती हुई लाने लगी। गांव के मर्द अपनी बरसातियों और कई तो अपने बोरी से लिपटे सिरों से नदी की प्रचंड लहरों में गोते लगाते लुटेरों को एकटक कौतूहल से देख रहे थे। कुछ बच्चे भी उनके शरीरों से चिपके थे।

सभी पहाड़ी के कच्चे रास्ते पर अपने - अपने हिस्से के दृश्य अपनी इंद्रियों को मुफ्त में बांटने के लिए उतावले थे। "एक बड़ा शहतीर बहता हुआ आ रहा है।" नदी के एक हिस्से के एक मोड़ पर खड़े बाज की दृष्टि से लहरों पर नजरें टिकाए सबसे बड़ी उम्र के ध्यानू ने चिल्लाना शुरू कर दिया, "मोड़ खाती नदी शहतीर को किनारे से कुछ फासले पर बहाती हुई आगे निकल रही। कुद पड़ो! समय सही है।" चार तैराकों ने नदी की प्रचंड लहरों में छलांग लगा दी। उनमें से कुछ शहतीर से कई फुट दूर नदी में लुप्त होते दिखाई दिए और फिर गांव के लोगों की सांसे रूक गई। "वे बह गए, उनका काम खत्म हो गया , प्रतापी मर्द अब फिर से यहां नहीं आएंगें।" गांव का कोई बूढ़ा चिल्लाया,

Jai Santoshi Maa

Construction Electricians

• employed by electrical contractors or construction companies.

• maintenance departments of commercial buildings and other establishments.

• may be self-employed

Industrial Electricians

• heavy industry

• maintenance departments of factories, mines, mills, oil and gas plants, shipyards, and other industrial establishments Power System Electricians

• employed by electric power generation and transmission companiesa

Electrician

Om Shanti Apartment, Shop No. 7 , Ulhasnagar-4
Phone: 8862090310, 9096892562

''कोई उनकी मदद करो।'' पलक झपकते ही उनमें से दो प्रतापी शहतीर को अपने अपने मजबूत कंधों में जकड़े नजर आए और डूबे हुए तैराक फिर अपने काले सिरों के साथ नज़र आए।

गांव के लोग चिल्ला उठे , ''जय हो! जय हो! ऐसे बहादुर मर्दों की।'' चारों ने शहतीर को जकड़ लिया और उस पर सवार होकर नदी के एक किनारे तक उसे खींच लाए। गांव के कुछ युवा उनकी ओर दौड़ने को हुए तो उन्हें किसी ने रोक दिया। वे बेचारे अपनी कुछ बहादुरी को अपने अंदर दुबकने को मजबूर कर बैठे। मोड़ पर खड़े बाज की आंखों वाले ध्यानू ने फिर आवाज दी, ''शहतीरों का झुंड आ रहा है तैयार रहो।'' इस बार पांच -छः लोगों ने लहरों में प्रवेश कर दिया, वे कंधों तक पानी में दौड़ते रहे, जैसे ही शहतीर उनके कुछ फासले से निकला वे उस पर बाज की तरह झपट्टा मारने को डूबकी लगा देते। गांव वालों की सांसें रूक जाती उनका मुंह खुला और आंखें फटी रह जाती। उनके इतनी बरसात में भी होंठ सूख रहे थे। अद्भुत साहस के आभामयी नजारों से उनकी इंद्रियों के सारे रोम खुल रहे थे। कईयों की स्वप्निल इच्छाएं उनके अंदर छिपे भीरूता के बादलों को दूर भगा रही थी। वे भी मन ही मन नदी के लहरों में गोते लगाने के दिव्य स्वप्न खुली आंखों से ले रहे थे। पर हिम्मत किसी से उधार में नहीं मिलती, ये बात शायद उन्हें पता चल चुकी है।

लहरों का प्रचंड वेग उन्हें अपने भीरू ख्यालों को पकने का स्वांग रचने को रोक रहा था। बाढ़ की लहरे निर्बाध गति से आगे बढ़ती जा रही थी और अपने साथ उजड़ी दुनिया के अवशेष उठा कर शान से अपनी प्रचंडता दिखा रही थी। उसे रोकने वाले नहीं बल्कि चाहिए, उसके साथ बहने वाले चाहिए। टकराने वाले नहीं बल्कि उसकी कल्पना से भौतिक ख्याल चुराने वाले चाहिए। बहुत सी चीजें दूर वेग में बहती जा रही थी जिन्हें लुटेरे अपनी बुद्धि व चातुर्य कला से छोड़ देना नहीं चाह रहे थे। एक नया वेग लहरों ने अपनाया, पानी की गंध में कीमती सामान की गंध को सबसे माहिर लुटेरे ने महसूस कर लिया। वह फिर चिल्लाया,'' अपनी बाजुओं में फिर से जोश भर लो, कत्थे की किसी भट्ठी की अंतिम यात्रा में शामिल होना है। तैयार रहो।'' खैरों के मोछे भी आ रहे हैं बहते हुए कोई सप्ताह बाद फिर पूरा दिन व पूरी रात मूसलाधार बारिश ने रिकार्ड तोड़ दिया। इस बार बेचारे कई लोगों के नदी के किनारे के छप्पर बाढ़ में बह आए थे। एक तरफ मुसीबतों का पहाड़ गिरा था और दूसरी तरफ लूट का बाज़ार सजा था। जो एक बार बाढ़ में बह गया, भला उसको कौन रोक पाता। कई छप्पर ५० कोह पर उजड़, तो कई ३० कोह पर।

एक के बाद एक कत्थे की भट्ठी से उजड़े कत्था बनाने वाले खांचे नदी में तैरते नजर आए। लुटेरों ने फिर से अपने अनुभव व जुनून को नदी के प्रचंड वेग के अहसान पर छोड़ दिया। काले बादलों ने इस दृश्य को देखकर अपना मुंह खोल दिया और छम - छम बारिश बरसने लगी। कभी प्रतापी शरीर लहरों में ओझल होते, तो कभी उनके काले सिर वाले शरीर फिर से नज़र आते तो देखने वाले दर्शकों की जान में जान आती। वे छम - छम बारिश में भी वे इन दृश्य को देखने का मौका खोना नहीं चाहते। नदी की खर - पतवार के गुच्छे, बड़े पेड़ों की जड़ों के अवशेष नदी के प्रवाह में ऐसे नाचते जैसे वे अपनी ही जिंदगी की अंतिम यात्रा में शामिल होकर जश्न मनाते हुए किसी स्वर्ग के सागर की ओर भागे जा रहे हों। लेकिन कहीं न कहीं शायद उनकी किस्मत को रोकने वाले लुटेरे जरूर उन पर स्वार्थी निगाहें टिका कर नदी के अगले किसी मोड़ पर बैठे होंगे।

शाम को लुटेरों ने अपने - अपने हिस्से का बंटवारा कर डाला, सुबह लूट के सामान को कम दाम में उड़ाने वाले खरीददारों ने सब साफ कर दिया। नदी की लहरें अब कुछ शांति का पाठ जपने की तैयारी कर रही थीं। सबसे बड़े व दल के मुखिया ने सबसे कम उम्र के लुटेरे के हाथ कुछ कम माल थमाया और उसे आज ही दल छोड़ने को कहा। सबसे उम्रदराज लुटेरे ने उसके हिस्से में भी कुछ कटौती कर दी। छोटे लुटेरे के मन ने इस बंटवारे को नामंजूर कर दिया। लुटेरों में फूट की झाड़ियां अकुंरित हो गई जबकि नदी के किनारे के सारी खर - पतवार नदी की बाढ़ के पहले वेग में ही किसी दूरस्थ इलाके में अपने लिए छांव तलाशने निकल गई थी। सब लुटेरों के काले सिरों के अंदर छिपे चतुर मस्तिष्कों में अलग-अलग विचार कौंध रहे थे। पर वे दल के मुखिया से सहमत होने के लिए विवश थे। सबसे कम उम्र के जाबांज तैराक ने अपना तंबू उखाड़ लिया। वह जाते-जाते बोला ,''अब मैं कभी हिस्सा न मागूंगा , चाहे तो अकेले ही नदी में कूदना पड़े।'' उम्रदराज जाबांज ने उसकी जिद् को पिघलाना चाहा, उसे अधिक मेहनताना भी देना चाहा पर वह सिर्फ एक नियम के कारण नहीं माना।

उम्रदराज जांबाज ध्यानू ने अपने दल की ऐकता की दुहाई दी और अपने नियमों के जंजाल को भी समझाना चाहा। आखिर एक नियम ही उनके इस बिखराव का कारण था। नियम सबसे छोटे जांबाज हीरू ने तोड़ा था। जवानी के नशे में उसने गांव की एक युवती से गठजोड़ रात के अंधेरे में जोड़ा था और ये बात उम्रदराज जांबाज से नहीं छिपी थी। उसने कुछ दिन पहले अकेले में चेतावनी भी दी थी, इस बार सब के सामने ध्यानू ने फिर वही बात दोहराई ''हमारा दल गांव की मेहरबानी पर टिका है और हम भविष्य के लिए अपने हिस्से की नदी का क्षेत्र अपने हौसले से इन गांव वालों से उधार में मांगते आए हैं। हमें गांव की हर औरत को आदर भाव से देखना है हमें गांव के विश्वास को विश्वासघात में नहीं बदलना है हम सिर्फ यहां अपनी साहसपूर्ण अद्भुत कला से उन्हें अचंभित करते आए हैं और भविष्य में उनकी बस्तियों में अपनी छवि को आकाश तक ऊंचा बनाना चाहते हैं वे हमें हमेशा पूजनीय समझे, हमारी जांबाजी की तारीफ करे ना कि वे हमें विश्वासघाती समझें। तुम्हें यह प्रेम प्रपंच छोड़ना होगा, वर्ना तुम्हें दल छोड़कर अभी यहां से जाना होगा। हम यहां सिर्फ नदी का बहता सामान लूटने आते हैं दिलों में बहते प्रेम की लूट करने के लिए नहीं। हमें नदी के पत्थरों की तरह कठोर बनना होगा। हमारे दल का एक ही नियम साफ है कि गांव के किसी इंसान से न कोई रिश्ता होगा, चाहे वे तुम्हारी बहादुरी के आगे नतमस्तक होकर तुमसे प्रभावित होकर तुम्हारे लिए अपने दिलों में प्रेम वफा के सपने सजाए।'' पूरा दल एक दूसरे को ओर अचंभित व आतंकित देख रहा था।

राह से भटके दिल के अंदर उठती लहरों में डूबे प्रतापी लुटेरे ने अपना तर्क दिया, ''मैं उससे वादा कर चुका हूं, वे मेरे अदभुत अचंभित हैरत अंग्रेज कारनामों की बातें सुनकर व प्रभावित होकर मेरी ओर खिंची आई है, हम दोनों ने साथ रहने की कसमें खा ली है मैं बड़ी - बड़ी उफनती प्रचंड लहरों से आज तक नहीं हारा, अब एक युवती की नजरों के सामने खुद को मृत नहीं घोषित कर सकता। उसका अस्तित्व अवर्णनीय रूप से मेरे शरीर के अंदर अथाह गहराई में डूब चुका है और मैं उसकी रमणीय व कोमल शरीर का गुलाम बन चुका हूं। प्यार का उपजाऊपन मैं अपने पत्थर जैसे सख्त शरीर में महसूस करने लगा हूं। मैं यू ही उसे छोड़ कर नहीं भाग सकता। मुझे वह अंधेरे की काली उलझनों में मेरी पीछे भागती दिखाई देती है। उसने मुझ जैसे अनुरक्त युवा में विरक्ति पैदा कर दी है। वह मेरे प्रति अपनी प्रशंसनीय भक्ति के कारण मेरे दिल की डोर से बंधना चाहती है।''

''नहीं ! नहीं ! हम किसी भी शर्त पर गांव के लोगों के आगे अपनी छवि को बिगाड़ नहीं सकते। तुम अपनी उत्कंठा और युवती की गुप्त प्रेम मयी आराधना को छोड़ो,'' दल के मुखिया ने अपने अंदर अपने बनाए नियम को जकड़ कर पकड़ते कहा , ''अगर यह बंधन फलता फूलता है तो भविष्य के लिए हमारा अस्तित्व मिट जाएगा, पूरा गांव जो हमारी गुप्त आराधना में मग्न रहता है, वह हमें महत्वाकांक्षी, स्वार्थी व चरित्रहीन

समझेगा , हम वर्षों से अपनी छवि को बचाते आए है सिर्फ तुम्हारे खातिर हम अपने दल की छवि पर आंच नहीं आने दे सकते।'' लुटेरों के मुखिया ने आखिरी फरमान सुना दिया। सबसे कम उम्र के जांबाज ने अपना तंबू का सामान पीठ पर लादा और नदी के बहाव की उल्टी दिशा की ओर निकल गया।

ऊपर काले बादलों ने फिर से दस्तक देना शुरू कर दी थी। पूरा दल पानी की बहशी बूंदों के साथ दुख और अशांति से भर गया। सभी मन ही मन पूछता उठे कि आखिर उन्होंने अपना एक नया व सबसे कम उम्र का जांबाज साथी बीच मंझदार में खो दिया है। उन में कुछ ने जब अपनी चेतना में कई तरह दृश्य उभरते देखे तो वे अपने आप को रोक नहीं पाए। आखिर उसके गुनाह की इतनी बड़ी सजा क्यों मिल रही है, क्या उसे पत्थर जैसी जिंदगी में फूल खिलाने का हम नहीं है? क्या लुटेरों के भी कोई नियम होते हैं? पर यह विचार उनके मन की तहों में ही उभरते रहे, उन्हें दल के मुखिया के कानों तक पहुंचाने की हिम्मत किसी में नहीं थी। बरसात में भीगता छोटा पुरुषार्थी योद्धा अपने प्यार की उत्कंठा में दल से निकाल दिया गया था। अपने प्यार को पाने की मूक लालसा के अकस्मात ढेर बन जाने से उसकी आंखों की रोशनी धुंधली और गीली हो रही थी। ऊपर काले आकाश ने फिर एक बार घमण्डी रोशनी को बिजली के रूप में परिवर्तित कर नदी के ऊपर फेंका। इस तेज आवाज से उसका मन दो फाड़ हो गया। एक हिस्से ने कहा- ''रात के अंधेरों में घिरा गांव बरसात के थपेड़ों से अधमरा सा हो गया है , नवयुवती को अपने संग उड़ाकर वह नदी की उफनती लहरों से पार ले जाएगा।'' दो फाड़ हुए दूसरे मन ने कहा, ''लुटेरों का स्वाभिमान उसकी इस हरकत के बाद सदा के लिए प्रचंड नदी के वेग में बह जाएगा और उसे कई लुटेरों का दल कभी नहीं पकड़ पाएगा।'' विचित्र कल्पनाओं का जैसा पूरा ब्रह्मांड उसके मस्तिष्क में संतुलन बनाने का नया प्रयोग कर रहा था। अशांत आंखें चहुं दिशाओं को छोड़कार एक रास्ते की तलाश में लगी थी। मन सिसक - सिसक कर रो रहा था।

वह नदी के किनारे -किनारे असंख्य झाड़ झगाड़ों को लांघता बहुत दूर निकला जा रहा था। पर उसका अतीत साया बनके उसके पीछे- पीछे दौड़ रहा था। उसके शरीर से सारा प्रताप बारिश की बूंदों में घुलकर निचुड़ चुका था, वह असंख्य ख्यालों के घेरे में फंस चुका था। उसका अस्तित्व नदी की लहरों में बहता जा रहा था ।

उसने ख्वाजा पीर से मन ही मन प्रार्थना की - ''हे पीर, दिव्य देवलोक के वासी, तुम्हारा दिव्य घोड़ों का रथ इन्हीं प्रचंड लहरों पर सवार होकर निकलता है, तुम्हारी दिव्यता के गुण अभी भी इन वेगवान लहरों में समाया है , मेरे लिए कोई रास्ता दिखाओ, मैं तुम्हारी नेमतों से अपने अस्तित्व की नींव रखकर आगे बढ़ा हूं , मुझे अपनी प्रकाशमयी किरणों से मेरे मन में खुंबों की तरह उगती गहरी कंघराओं के सयाह अंधेरों को मेरे मन से भगाओ, मैं धैर्य का पुजारी रहा हूं पर मैं आज भीरूता के स्पर्शों में घिरा हूं , मुझ पर अपनी दया बख्शो। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने भी अपनी कृपा के हाथ मेरे सिर पर से उठा लिए हैं मुझ पर कृपा करो। मैं जिंदगी की एक विशाल विपत्ति में घिरा हूं। मेरा मन मुझे लहरों में आंखें मूंद कर समा जाने को कह रहा है। मेरा सब कुछ खो चुका है। गोपनीय दुःख मेरे मन में कलुषित नृत्य कर रहे हैं। मैं विश्वासघात के दंश को महसूस कर रहा हूं। मैंने अपने दल और उस नवयुवती के ख्वाबों से भी विश्वासघात किया है। मैं भयावह व प्रचंड लहरों से लड़ सकता हूं पर अपने मन में संवेदनामयी छोटी लहरों के आगे भीरूता भरे इन्सान के समान खड़ा महसूस कर रहा हूं।''

ख्वाजा पीर की नेपतों की झोली अभी खाली नहीं हुई थी। नदी का प्रवाह बढ़ता जा रहा था। मटमैले पानी के बीच लहरों से एक रोशनी उभरी, कोई बड़ा सा संदूक नदी के खरपतवारों में जकड़ा लहरों के बीच बहता हुआ आया। चूर -चूर हृदय वाले लंबे चौड़े सबसे छोटे लुटेरे की आंखों में रोशनी की एक बेतरतीब पुंज प्रकट हुआ। रात में नहाती नदी के बीच और इस छोटे लुटेरे के मन के बीच एक गुप्त मंत्रणा हुई। आदमी जिस कार्य में पारंगत हो उसे न करने के लिए कभी नहीं कहता।

छोटे लुटेरे ने जैसे अपने मन के दुखों के बड़े झोले को वहीं फेंका जैसे नदी में उसकी प्रेमिका उसे पुकार रही हो। उसने प्रचंड लहरों में छलांग लगा दी । अंधेरे ने उसके साथ धोखा कर दिया वह जितना हाथ पैर मारे, वही संदूक उतना ही आगे बढ़ता जाए। अकेला लुटेरा कभी लुप्त हो जाए तो कभी नदी उसे उछाल कर बाहर फेंक दे। उसे सर्वाधिक इस मुश्किल क्षणों के वेग में भी अपने लक्ष्य उस बेजान संदूक को नहीं छोड़ा। जिंदगी भर चुनौतियों से खेलने वाला लुटेरा रात के भंवर में नदी के भंवर को नहीं जान पाया और न ही उसे कोई दिशा निर्देश देना वाला था। संदूक और उसका लुटेरा बीच भंवर घूमते जा रहे थे। वह भंवर वैसा ही था जिससे यह लुटेरा निकलना चाहता था। यह प्रेम और अपने दल को धोखा देने के घटनाक्रम से पैदा हुआ भंवर था। लेकिन प्रेम के भंवर ने उसे बच निकलने का एक मौका दिया था। यहां अंधेरा और गुस्सैल नदी दोनों ने मिलकर प्रपंच रच डाला था। वह भवंर के चक्रव्यूह में कुछ पल छटपटाता रहा, वह तब तक छटपटाता रहा, जब तक वह अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं कर पाया था। बुरा यह था कि उसके सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का कोई दर्शक नहीं था। उसकी आंखों में धुंधली होती जा रही थी। परपरागंत परिभाषाओं को चुनौती देने वाला स्वयं को सम्बोधित तत्परता का परिचायक, असाधारण चुनौतियों का संरक्षक एक अविमुक्त युवक नदी की अनभिज्ञता के जाल में फंस गया। प्रचंड नदी का पूरा क्षितिज उसे अपनी सीमाओं में रहने का ज्ञान बांटकर उसकी जिंदगी की कुछ सांसों को रोककर उसके लिए उसकी वीरता को नेपथ्य में ले जा रहा था। सारी पारंगतता पानी में डूब रही थी, पर हिम्मत वहीं की वहीं जिंदा थी। वह डूबना नहीं चाहती थी। फिर हिम्मती मन ने एक शिशु की तरह जिद् छोड़ दी और आखिरी सांस ने इस लुटेरे का अलविदा कहकर अंधेरे में पसरा कोई एक रास्ता अपनाकर अपना मुंह मोड़ लिया। उत्कंठा और वीरता का पुजारी इस जहान के उर्जामयी कणों द्वारा अवशोषित हो चुका था।

दूसरी ओर का उदास दल अभी भी अपने दल के जांबाज साथी की राह देख रहा था। दल का कोई सदस्य सुबह तड़के नदी के घटते प्रवाह को नापने निकला। नदी ने जैसे उसे आवाज दी , ''ये लो अपने साथी को, संभालो इसे मैं इसे फिर से वापिस ले आई हूं मैंने इसकी जिद् को चकनाचूर कर दिया है ये अब कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेगा मैंने इसके शरीर में पश्चाताप का रस घोल दिया है , यह कभी भी तुमसे विश्वासघात नहीं करेगा और न ही तुम्हारी परंपरागत परिभाषाओं को अपनी तीव्र ध्वनियों से चुनौती देगा। मैंने इसकी वीरता के श्रेष्ठ प्रदर्शन को देख लिया है। अब यह मेरी उर्जा के संग जीएगा और इस ब्रहमाण्ड की अथाह लहरों में अपनी वीरता का प्रदर्शन करेगा।'' वह साथी चिल्लाया, ''नदी मै इंसानी लाश तैर रही है, आओ, दौड़े आओ, ख्वाजा रहम करे, ये लाश हमारे छोटे साथी की लग रही है।'' पूरा दल भागा, कुछ ही पलों में जांबाज लुटेरा नदी के किनारे बारीक पत्थरों के बिछौने पर आराम कर रहा था। पूरे दल की आंखों में आंसुओं की झड़ी लगी हुई थी। सिर्फ एक ही सदस्य ऐसा था जिसकी आंखों में एक शुष्क रेगिस्तान फैल रहा था, वह दल का मुखिया था। उसकी आंखों में एक अजीब ही तरह की चमक थी, वह चमक उसकी किसी गुप्त जीत की ओर इशारा कर रही थी यह शायद उसके दल की प्रतिष्ठा इस भयावह हादसे के बाद और अधिक बढ़ने की जीत की चमक थी।

एक और जहां पूरा दल इस असमय हादसे से गहरे शोक में इसकी तह तक जाने को प्रत्यनशील था, वहीं दूसरी ओर दल का मुखिया मन ही मन इस घटना को अपनी दल की परंपरा की जीत में बदलने के लिए प्रबंधन में जुटा था। उसके मन ने यह युक्ति बनाई- दल का एक सबसे छोटा व जांबाज सदस्य रात के अंधेरे में किसी अन्जान चीज़ को कोई इन्सानी लाश समझ कर नदी में अकेला ही परिस्थिति अनुरूप कूदा और वह भंवर में फंस कर बड़ी बहादुरी निभाते हुए ,दल की प्रतिष्ठा बचाते हुए अपनी जिंदगी को अर्पित कर बैठा। दल का स्वाभिमान और जांबाज सदा उसकी अहसान मंद रहेगी। हम अगले वर्ष फिर आएंगे यही नदी की इच्छा है और यही ख्वाजा पीर की मर्जी। संताप दिवंगत जांबाज आत्मा को भव सागर में मिलने के बीच की मुख्य बाधा है। ■

- संदीप शर्मा

आशापुरा ज्वैलर्स

सोने-चांदी के गहनों के व्यापारी

शिवाजी रोड, शहाड़ फाटक, उल्हासनहर-४
फोनः ०२५१-२७०९९६२

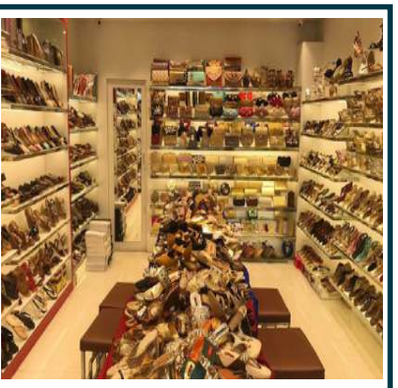

स्पेशल ऑफर के साथ

क़ाजल फुट वेयर

हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है

कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

Adviteeyamina
Akshayadritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall
Kukatpally • Patny Centre
Gachibowli • Kothapet

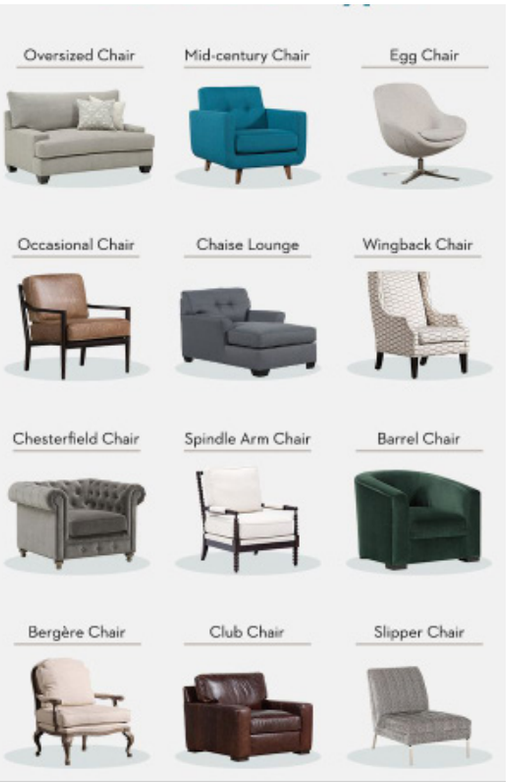

New lifestyle Furniture

KIRTI NAGAR: Timber Market-9717005829; **FARIDABAD:** Crown Interiorz Mall-9910869944; **GHAZIABAD:** Shipra Mall-9717198235;

मशरूम की खेती...

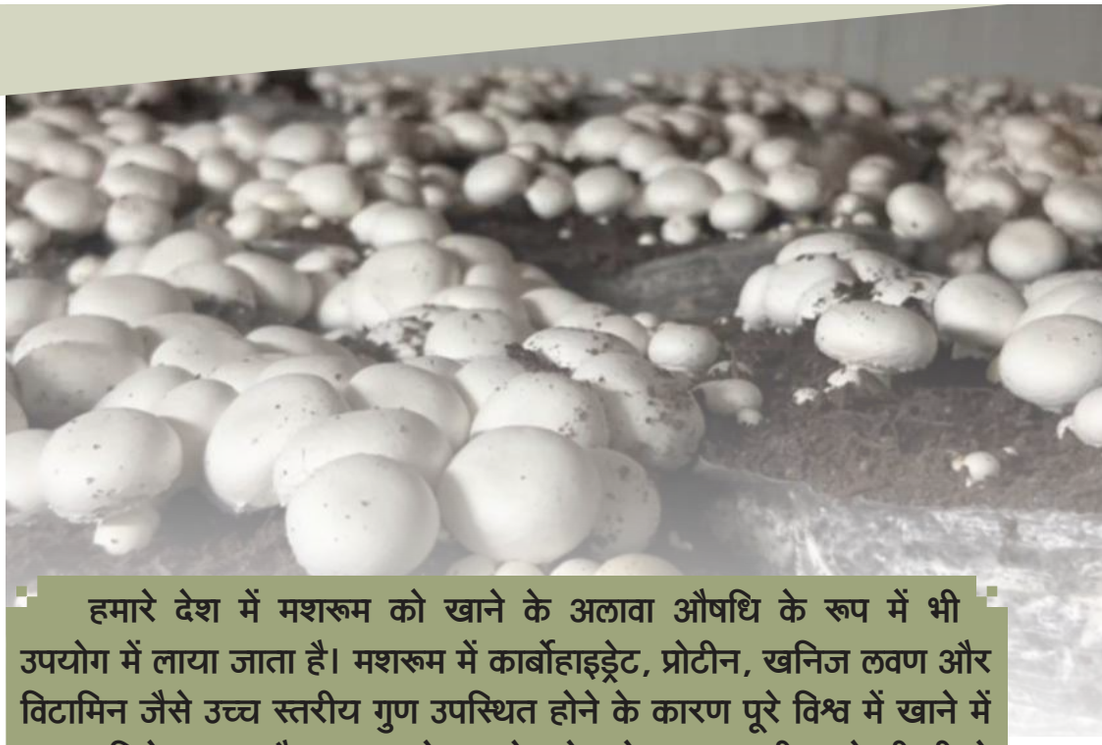

हमारे देश में मशरूम को खाने के अलावा औषधि के रूप में भी उपयोग में लाया जाता है। मशरूम में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, खनिज लवण और विटामिन जैसे उच्च स्तरीय गुण उपस्थित होने के कारण पूरे विश्व में खाने में इसका विशेष महत्व है। मशरूम के उपयोग से अनेक प्रकार की खाने की चीज़ो को जैसे :- नूडल्स, जैम (अंजीर मशरूम), ब्रेड, खीर, कूकीज, सेव, बिस्किट, चिप्स, जिम का सप्लीमेन्ट्री पाउडर, सूप, पापड़, सॉस, टोस्ट, चकली आदि को बनाया जाता है ।

भारत देश के कई राज्यों में मशरूम को कुकुरमुत्ता के नाम से भी जाना जाता है। यह एक तरह का कवकीय क्यूब होता है, जिसे खाने में सब्जी, अचार और पकोड़े जैसी चीजों को बनाने के इस्तेमाल किया जाता है। मशरूम के अंदर कई तरह के पोषक तत्व मौजूद है, जो मानव शरीर के लिए काफी लाभदायक होते है। संसार में मशरूम की खेती को हज़ारो वर्षो से किया जा रहा है, किन्तु भारत में मशरूम को तीन दशक पहले से ही उगाया जा रहा है। हमारे देश में मशरूम की खेती को हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, कर्नाटक और तेलंगाना जैसे राज्यों में व्यापारिक स्तर पर मुख्य रूप से उगाया जा रहा है ।

भारत में वर्ष २०२१-२२ में मशरूम का उत्पादन तक़रीबन १.३० लाख टन के आस-पास था, वही वर्तमान समय में किसानो की रुचि मशरूम की खेती की और अधिक देखने को मिल रही है। हमारे देश में मशरूम को खाने के अलावा औषधि के रूप में भी उपयोग में लाया जाता है। मशरूम में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, खनिज लवण और विटामिन जैसे उच्च स्तरीय गुण उपस्थित होने के कारण पूरे विश्व में खाने में इसका विशेष महत्व है। मशरूम के उपयोग से अनेक प्रकार की खाने की चीज़ो को जैसे :- नूडल्स, जैम (अंजीर मशरूम), ब्रेड, खीर, कूकीज, सेव, बिस्किट, चिप्स, जिम का सप्लीमेन्ट्री पाउडर, सूप, पापड़, सॉस, टोस्ट, चकली आदि को बनाया जाता है । इसकी अलग-अलग किस्मो को पूरे वर्षा उगाया जा सकता है।

सरकार द्वारा मशरूम की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानो को कृषि विश्वविद्यालयों और अन्य प्रशिक्षण संस्थाओं में मशरूम की खेती करने की विधि, मशरूम उत्पादन, मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण, मशरूम बीज उत्पादन तकनीकी प्रसंस्करण आदि विषयो के बार में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके अतिरक्त राज्य सरकारे मशरूम की खेती करने के लिए किसानो को ५० प्रतिशत का लागत अनुदान देगी। मशरूम की खेती करने में कम जगह लागत लगती है। जिससे किसान भाई कम समय में मशरूम की खेती कर कई गुना मुनाफा कमा रहे है।

विश्व में मशरूम की कई उन्नत किस्मो का उत्पादन किया जाता है, किन्तु भारत में मशरूम की सिर्फ तीन प्रजातियां पाई जाती है। जिनसे खाने के लिए इस्तेमाल में लाया जाता है ।

ढिंगरी मशरूमः इस किस्म की मशरूम की खेती को करने के लिए सर्दियों के मौसम को उचित माना जाता है। सर्दियों के मौसम में इसे भारत के किसी भी क्षेत्र में ऊगा सकते हैं, किन्तु सर्दियों के मौसम में समुद्रीय तटीय क्षेत्रों को इसकी खेती के लिए अधिक उपयुक्त माना जाता हैं। क्योकि ऐसी जगहों पर हवाओं में नमी की ८०% मात्रा पाई जाती ह। मशरूम की इस किस्म को तैयार होने में ४५ से ६० दिन का समय लगता है ।

दूधिया मशरूमः दूधिया मशरूम की इस प्रजाति को केवल मैदानी इलाकों में उगाया जाता है। मशरूम की इस किस्म में बीजो के अंकुरण के समय २५ से ३० डिग्री तापमान को उपयुक्त माना जाता है। इसके अलावा मशरूम के फलन के समय इसे वक्त ३० से ३५ तापमान की आवश्यकता होती है। इस किस्म की फसल को तैयार होने के लिए ८० प्रतिशत हवा में नमी होनी चाहिए।

श्वेत बटन मशरूमः मशरूम की इस किस्म का इस्तेमाल खाने में सबसे अधिक किया जाता है। श्वेत बटन मशरूम की फसल को तैयार होने के लिए आरम्भ में २० से २२ डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है। मशरूम फलन के दौरान इन्हे १४ से १८ डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है। इसकी खेती को अधिकतर सर्दियों के मौसम में किया जाता है, क्योकि इसके क्यूब को ८० से ८५% वायु नमी की आवश्यकता होती है। इसके क्यूब सफ़ेद रंग के दिखाई देते है, जो कि आरम्भ में अर्धगोलाकार होते है ।

शिटाके मशरूम किस्मः मशरूम की इस किस्म की खेतो को जापान में विस्तार रूप से किया जाता है।

इसके क्यूब आकार में अर्धगोलाकार तथा उनमे हल्की लालिमा दिखाई देती है। इसके बीजों को आरम्भ में २२ से २७ डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है, तथा क्यूब के विकास के दौरान इन्हें १५ से २० डिग्री तापमान की जरूरत होती है ।

मशरूम की खेती के लिए महत्वपूर्ण तत्व

मशरूम की खेती को करने के लिए बंद जगह की आवश्यकता होती है, इसके अलावा भी कई तरह के सामानों की आवश्यकता पड़ती है, जिनके अंदर मशरूम को तैयार किया जाता है। मशरूम की फसल में आरम्भ में उचित लम्बाई और ऊंचाई वाले आयताकार सांचो को तैयार कर लिया जाता है, जो कि एक संदूक की भांति दिखाई देते है। वर्तमान समय में यह सांचे लकड़ी के अलावा और भी चीजों के बनाये जा रहे है। मशरूम की खेती में चावल की भूषि, भूसा तथा अन्य फसलों की आवश्यकता होती है। भूसा बारिश का भीगा न हो, यदि भूसा कटा न हो तो उसे मशीन से काट लेना चाहिए। जिसके लिए आपको भूसा कटाई मशीन की भी जरूरत होगी ।

इसके बाद कटे हुए भूसे को उबाल लिया जाता है, जिसका इस्तेमाल बीजो को उगाने के लिए किया जाता है। भूसे को अधिक मात्रा में उबाला जाता है, जिसके लिए दो बड़े ड्रमों की आवश्यकता होती है। इसके बाद उबले हुए भूसे को ठंडा कर उन्हें बोरो में भर दिया जाता है, जिसके बाद उन बोरों में बीजों को लगा दिया जाता है। अब इन बोरों के मुँह को रस्सी, टाट, या पॉलीथिन से बाँध दिया जाता है । यह सारी प्रक्रियाओं के करने के बाद इन बोरो में नमी बनाये रखने के लिए एक स्प्रेयर या बड़े कूलर की भी आवश्यकता होती है ।

बीजो को उगाने के लिएः

मशरूम की खेती में बीजों को उगाने के लिए कूड़ा खाद को तैयार किया जाता है। इसके लिए कृषि के बेकार अवशेषों को उपयोग में लाया जाता है। बारिश में भीगे हुए कृषि अपशिष्टों में उपयोग में नहीं लाया जाता है। लाये गए इन कृषि अपशिष्टों की लम्बाई

८ CM तक होनी चाहिए, जिससे इन्हें मशीन से काटकर तैयार किया जा सके।

कूड़ा खाद को तैयार करते समय माइक्रोफ्लोरा का निर्माण किया जाता है। तैयार की गई इस खाद में सेल्यूलोज, हेमीसेल्यूलोज और लिगनिन भी मौजूद होता है । चावल और मक्के के भूसे को गेहूं के भूसे की अपेक्षा अधिक उपयुक्त माना जाता है। क्योकि इस भूसों में क्यूब अधिक तेजी से तैयार होते है। आरम्भ में मशरूम को बंद कमरे में रखा जाता है, किन्तु एक बार मशरूम में क्यूब निकल आने पर इन्हे कम से कम ६ घंटे की ताज़ी हवा चाहिए होती है । जिसके लिए उन कमरों में जहाँ पर मशरूम को उगाया जा रहा है, उनमे खिड़कियों और दरवाजे का होना जरूरी है, जिससे हवा कमरों में आती जाती रहे ।

मशरूम की बुवाई

मशरूम के बीजो की रोपाई के लिए तैयार किये गए संदूक नुमा सांचो में बानी स्लेबो पर पॉलीथिन को अच्छी तरह से लगा दे, इसके बाद कम्पोस्ट खाद की ६-८ इंच मोटी परत को बिछा दे । इस कम्पोस्ट खाद की परत के ऊपर बीजो (स्पॉन) को दाल देना चाहिए। बीजाई के तुरंत बाद इन्हे पॉलीथिन से ढक देना चाहिए। कम्पोस्ट खाद की १०० KG की मात्रा में बीजो की रोपाई के लिए ५००-७५० GM स्पॉन पर्याप्त होते है ।

बीजों को रखने में सावधानियां

मशरूम के बीज ४० डिग्री या उससे अधिक तापमान होने पर ४८ घंटे के अंदर ही खराब हो जाते है । जिसके बाद इन बीजों से बदबू आने लगती है। इसके लि ए गर्मियों के मौसम में इन्हें रात के समय में लेकर आना चाहिए। इसलिए बीजों को न्यूनतम तापमान देने के लिए थर्मोकोल के बने डिब्बों में बर्फ को भरकर उन बीजों को रख देना चाहिए। जिसके बाद इन बीजों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में दिक्कत नहीं होगी। इसके अलावा किसी दूसरे स्थान तक ले जाने में वातानुकूलित वाहन से ले जाना चाहिए।

बीजो का भंडारण

मशरूम के ताजे बीज कम्पोस्ट में अधिक तेजी से फैलते है, जिससे बीजों से मशरूम जल्द ही निकलना आरम्भ हो जाते है, और पैदावार में वृद्धि देखने को मिल ती है । इसके बावजूद कई परिस्थियो में बीजों का भंडारण करना जरूरी हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में बीजों को १५-२० दिन तक रेफ्रीजरेटर में भंडारण कर नष्ट होने से बचा सकते है ।

मशरूम की तुड़ाई, पैदावार और लाभ

मशरूम के बीज रोपाई के तक़रीबन ३० से ४० दिन पश्चात मशरूम देने के लिए तैयार हो जाते है । इसकी तुड़ाई के लिए मशरूम के डंठल को भूमि के पास से हल्का सा घुमाकर तोड़ लेना चाहिए। जिसे बाद इन्हे बाज़ार में बेचने के लिए भेज दिया जाता है। इसके अलावा मशरूम की कुछ ऐसी किस्में होती है, जिन्हे सुखाकर उनका पाउडर बनाकर बेचा जाता है ।

मशरूम का एक क्यूब तक़रीबन ९ CM की ऊंचाई का होता है । मशरूम का बाज़ारी भाव २०० से ३०० रूपए किलो होता है। जिस हिसाब से किसान भाई मशरूम की खेती कर उन्हें खाने के रूप में या उनका पाउडर बनाकर अच्छी कीमत पर बेच कर कम समय में अधिक लाभ कमा सकते है।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
ज्यादा लंबी रचना न भेजें।
सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं।
प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें ; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।
रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।
किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	50,000/-
2.	Back inside full page	Colour	40,000/-
3.	Inside full page	Colour	25,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

की हार्दिक शुभकामनाऐं